नई पीढ़ी के निर्माण का मासिक

नंदन



हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन

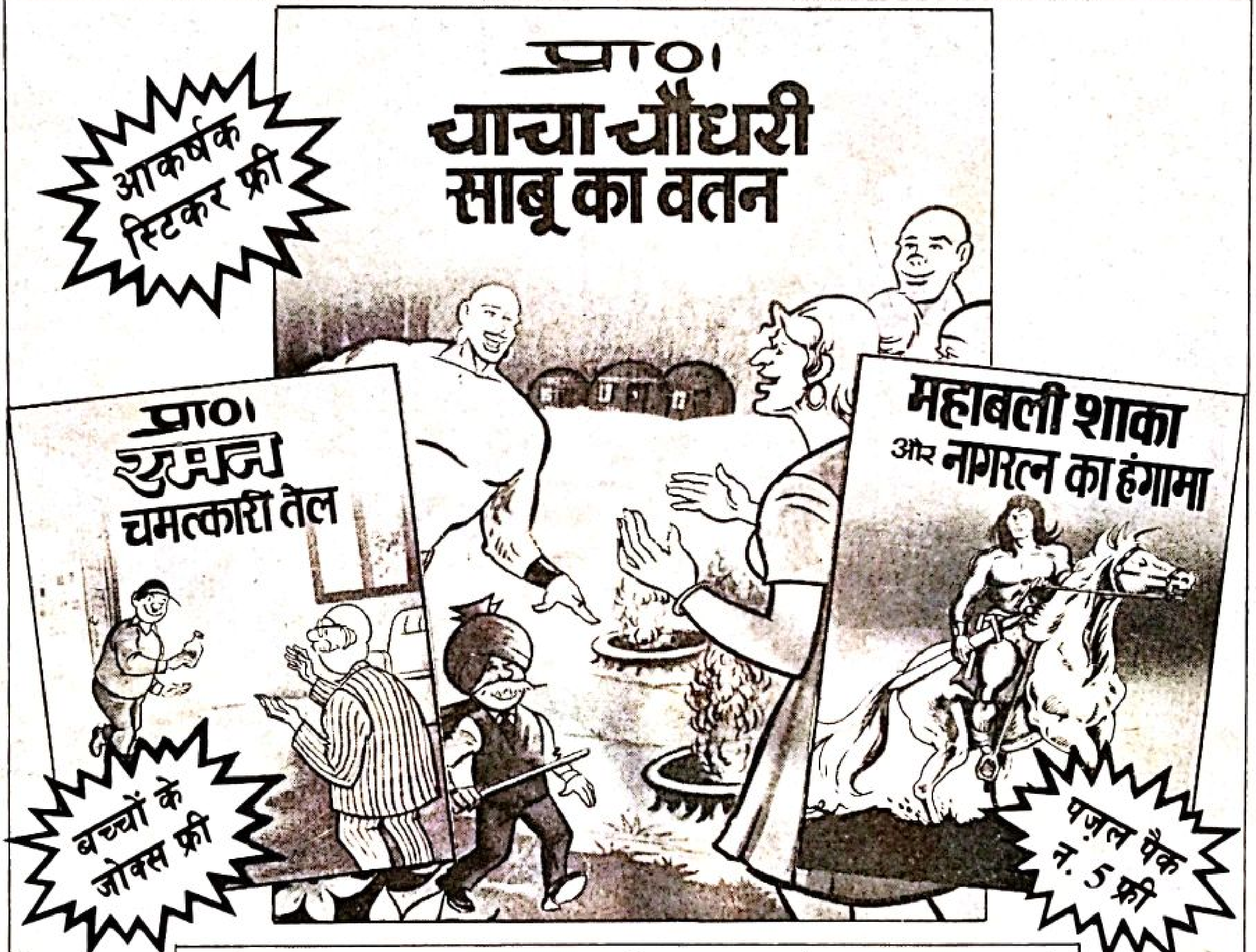
सितम्बर '९२

५ रुपए


MAGGI CLUBBERS
FUN LOVERS
MAGGI CLUB
मैगी स्काई ब्लेज़र में बादलों से आगे बढ़ो.
मैगी जिगसा पज़ल से मैगी के साहसिक कारनामों की दुनिया को जानो
समुद्र से आकाश की अभियान पूरी करो मैगी एस एडवेंचरर्स गेम में
चोर को पकड़ो-मैगी हू-डन-इट रहस्यमय खेल में
अब मौज-मस्ती भरे साहसिक खेल!
मैगी क्लब के सदस्यों के लिए मुफ़्त उपहार
मैगी रेडर्स ऑफ़ दि रेड स्टार गेम में ग्रहों पर विजय पाओ.
आओ बच्चो! मैगी क्लब में शामिल होकर मैगी के मौज-मस्ती भरी चमत्कारी दुनिया में रंग जमाओ!
बस यह लोगो मैगी नूडल्स के 5 रैपर के सामने वाले हिस्सों से काटकर हमें भेज दो. 6 से 8 हफ़्तों के बीच तुम्हें मैगी क्लब की ओर से तुम्हारी पसंद का मस्ती-भरा उपहार मिल जाएगा.
अपनी पसंद का उपहार मंगाते समय अपना नाम, पता और जन्म-तिथि ज़रूर लिख भेजना. और हां, अगर तुम पहले से ही मैगी क्लब के सदस्य हो तो अपनी सदस्यता संख्या अवश्य लिख भेजना. यदि तुम अभी तक सदस्य नहीं बने हो तो यह मौका मत चूकना! अपना विवरण भेजते समय सदस्यता कार्ड भी मंगवा लेना. तुम्हारे उपहार के साथ हम तुम्हारा मुफ़्त मैगी क्लब सदस्यता कार्ड भी भेज देंगे.
मुफ्त मैगी 'वर्ल्ड ऑफ़ एनीमल्स' क्विज पुस्तिका! अपने हर 2 उपहारों के साथ तुम मुफ़्त ले सकते हो मैगी 'वर्ल्ड ऑफ़ एनीमल्स' क्विज पुस्तिका.
MAGGI 2-Minute noodles
हमारा पता है
मैगी क्लब
पो.ओ. बॉक्स 5788, नई दिल्ली-110 055
एक और मौका: अगर अभी तक तुमने मैगी 'बर्डहाउस' नहीं लिया है तो तुरन्त ले लो!
HTA 7778HIN

डायमण्ड कॉमिक्स

पेश करते हैं



नये डायमण्ड कॉमिक्स (अगस्त 92)

प्राण का–**चाचा चौधरी और साबू का वतन** (आकर्षक स्टिकर फ्री)	8.00
प्राण का–**रमन और चमत्कारी तेल** (बच्चों के जोक्स फ्री)	8.00
महाबली शाका और नागरत्न का हंगामा (पज़ल पैक नं. 5 फ्री)	8.00
जेम्स बाण्ड-9	6.00
चिम्पू और आपरेशन गोल्डन स्टार	6.00
राजन इकबाल और मौत के व्यापारी	6.00
पल्टू और दुष्ट मोटा	6.00
मामा भांजा और कामयाब तरकीब	6.00
फैण्टम-20 (डाइजेस्ट)	15.00
ताऊजी-16 (डाइजेस्ट)	15.00

डायमण्ड कामिक्स प्रा.लि., 2715, दरियागंज, नई दिल्ली- 2

पत्र मिला

□ जब मैं चौथी कक्षा में पढ़ता था, तभी से 'नंदन' पढ़ रहा हूं। हमारा पूरा परिवार इसे पसंद करता है। 'तेनालीराम', 'चित्रकथाएं' और 'चीटू-नीटू' इसके जगमग सितारे हैं। इतनी अच्छी पत्रिका के लिए 'नंदन' परिवार को बधाई।

—अकील अहमद, धौरहरा (उ.प्र.)

□ जुलाई अंक में 'हीरों का हार' एवं 'पोटली में जादू' कहानियों ने मन मोह लिया। सभी रचनाएं बेहतरीन थीं। 'नंदन' बच्चों का सिर्फ मनोरंजन ही नहीं करता, बल्कि एक सच्चे अध्यापक के रूप में कार्य करता है।

—राकेश रंजन, उमगा, औरंगाबाद

□ इस पत्रिका का बहुत पुराना पाठक हूं। लेकिन दूर-देश में रहने के कारण 'नंदन' समय पर नहीं मिल पाता। घर के लोगों को भी पत्रिका का न मिलना अखरता है।

—अनिलकुमार पांडेय, ईटानगर (अरुणाचल प्रदेश)

□ परी-कथा विशेषांक यानी कि जुलाई अंक जब खरीदा, तो दंग रह गया। इतनी सारी रोचक कहानियां, कविताएं, 'ज्ञान-पहेली', 'चटपट', 'तेनालीराम', 'पत्र-मित्र'-सब बेजोड़। सचमुच यह भारत की नम्बर एक पत्रिका है।

—एस. एम. खालिद, आगरा

□ हर बार आप ताजे अंक की तरह ही सामग्री से भरपूर अंक निकाला करें। परी कथाओं ने हम बच्चों का बहुत मनोरंजन किया। **—दलजीत कौर, हैदराबाद**

□ 'नंदन' बाल जगत की एक सम्पूर्ण पत्रिका है। इस समय जितनी भी हिन्दी की बाल पत्रिकाएं हैं, उन सबकी विशेषताएं अकेले 'नंदन' में हैं। मैं इस पत्रिका से बहुत गहरे जुड़ा हुआ महसूस करता हूं। **—अय्यूब हुसैन, नैनी (उ.प्र.)**

□ परी-कथा अंक में भगवान गणेश का चित्र देखकर मन आनंदित हो उठा। 'चटपट' तथा 'चीटू-नीटू' की चटपटी बातें तथा कहानियां अच्छी लगीं। 'दाना बना मोती' कहानी बहुत ही प्रेरणादायक लगी। **—मदन दुबे, परेल, बम्बई**

□ 'नंदन' का विचित्र परी-कथा विशेषांक हाथ में आते ही मैं परियों की विचित्र दुनिया में खो गया।

—अमितेश भास्कर, छपरा

□ अपने मामा के यहां सबसे पहले मैंने 'नंदन' पढ़ा। बाकी स्तम्भों के साथ-साथ बाल समाचार बहुत अच्छा लगा।

—ओमप्रकाश धनकर, मुंडादेही (म.प्र.)

□ मेरी दीदी वाणिज्य कर पदाधिकारी हैं। मगर 'नंदन' आते ही मुझ से छीन लेती हैं, बताइए मैं क्या करूं? **—राहुल प्रधान कोडरमा**

इनके पत्र भी उल्लेखनीय रहे : गणेशकुमार, शेरगढ़, मथुरा; शशिप्रकाश, समस्तीपुर; अवनीश तिवारी, सीहोर।

Scanned with CamScanner

जापान के एक शानदार होटल में शुद्ध सोने का हमाम लगवाया गया। नहाना और वह भी चमचमाते सोने के हमाम में। भला कौन नहीं चाहे वहां स्नान करना। जो लोग नहाना पसंद नहीं करते, वे भी वहां नहाने को लालायित। पर होटल वालों ने नहाने की फीस भी काफी रखी। फिर भी लोग खूब आते।

लेकिन बात नहाने तक ही होती तो ठीक। कई लोग तौलिए में चोरी-छिपे छोटी आरी ले आते। वहां से सोना काटकर ले जाने लगे। हमाम के भीतर जाते हुए किसी भी तरह का औजार ले जाने पर पाबंदी लगानी पड़ी। होटल की ओर से दर्जनों जासूस रखे गए। वे हर समय निगरानी रखते कि कोई हमाम से सोना न ले जा सके। लेकिन लालच क्या-क्या नहीं कराता! लोग अपने हाथों से या दांतों से थोड़ा-सा टुकड़ा तोड़ने की कोशिश करते।

एक महिला वहां नहाने को कई बार आती। उसने बार-बार अपने दांतों से सोने की परत काटनी चाही। परत बहुत कड़ी थी। महिला के जबड़े ही हिल गए। उसे नकली जबड़े लगवाने पड़े।

धातुओं का राजा है सोना। इसे पाने के लिए बड़ी-बड़ी लड़ाइयां लड़ी गईं। न जाने कितने अपराध किए गए। सोना जिसके पास आता है, उससे कहता है— सो ना यानि अब चैन की नींद न सो।

एक बड़े बैंक में एक खजांची था। उन दिनों कितने ही देशों में सोने की मुद्रा का चलन था। बैंक में हजारों सिक्के आते। इन सिक्कों की छंटाई की जाती थी, इन्हें गिना जाता था। फिर इन्हें थैलियों में डालकर सीलबंद कर दिया जाता। इसके लिए लकड़ी की कुछ मेजें रखी गई थीं।

एक बार एक खजांची घर से कपड़ा लेकर आया। उसे मेजपोश की तरह बिछा लिया। फिर उसके ऊपर अपना काम करने लगा। इसी तरह हर रोज मेज की दराज से कपड़ा निकालकर बिछा लेता। शाम को घर जाने से पहले कपड़े को सावधानी से तह करके रख देता। बैंक का अधिकारी खजांची की कुशलता से प्रसन्न हुआ। वह दूसरे कर्मचारियों के सामने उस खजांची की प्रशंसा किया करता।

खजांची शनिवार की शाम को वह कपड़ा घर ले जाता। सोमवार को जब आता, तो नया कपड़ा लेकर। यह सिलसिला काफी समय तक चलता रहा। परंतु घर की नौकरानी ने एक दिन इसका भेद खोल दिया। खजांची शनिवार को कपड़े को कड़ाही में रख देता। उसमें आग लगा देता। हफ्ते भर तक उस पर सोने के सिक्के रखे जाते थे। सोने के काफी कण कपड़े में लिपट जाया करते। आंच से वे पिघल जाते। सोने की छोटी-सी डली हर हफ्ते खजांची को मिल जाती थी।

राजा मिडास की कहानी तो बहुतों ने पढ़ी-सुनी होगी। उसने देवता से वरदान मांग लिया— "मैं जिस चीज को छू दूं, वह सोने की बन जाए।" देवता ने खुशी-खुशी वरदान दे दिया। राजा मिडास फूला न समाया। वह महल की ओर चला। राह में पेड़ से एक सेब तोड़ा। झट सेब सोने का हो गया। पानी से हाथ धोने लगा, यह क्या—पानी की जगह स्वर्ण जल बहने लगा।

राजमहल पहुंचकर मिडास खाना खाने बैठा। जिसे हाथ लगाता, वही चीज सोने की बन जाती। क्या खाए, क्या पिए? अब मिडास को होश आया कि उसने कैसा अटपटा वरदान मांग लिया। वह फिर देवता की शरण में गया। अपने लालच के लिए क्षमा मांगी। वरदान लौटाने को कहा। देवता ने ऐसा ही किया। राजा मिडास से सोने का लालच छूट गया। पर मानव आज भी उसके ताने-बाने में फंसा है।

इंसान के पास सोना आता है। सुरक्षा के बहाने उसे हम कैद कर लेते हैं। यही करते-करते जीवन बीत जाता है। सोना कीमती बना रहता है, इंसान नहीं।

— तुम्हारे भइया

नंदन

सितम्बर '९२

वर्ष : २८ अंक ११

कहां क्या है

कहानियां

गिरीश भंडारी	कुतर-कुतर	८
अविसात राय	मंदिर में	१०
जयप्रकाश भारती	सफेद हाथी	१२
रचना कुमार	कोने में कौन	१५
साबिर हुसेन	भर-भर थाल	१७
सौरभ शर्मा निर्भय	परछाईं का डर	१८
पी. एल. ट्रेवर्स	तुम मत जाना	२४
सुरेन्द्रकुमार नाहटा	सेवा का मेवा	२९
अलका पाठक	पल-पल बदल	३०
आशा जोशी	चिड़िया बनी हिमा	४१
प्रभा भटनागर	जुगनू	४२
अनिता खन्ना	बौना गयब	४४
चन्द्रदत्त इन्दु	राम फिर आए	४५
कर्मसिंह पठानिया	दूसरी मुनादी	५२
संदीप कपूर	भागा ठग	५३
कनक	सेवक का भरोसा	५४
उमा शर्मा	झोंपड़ी में उजाला	५६
नागेश पांडेय	जादुई जंजीर	५७
उषा विभाकर	चाल-बेचाल	५८
अनिल गर्ग	जाओ भर लाओ	६४
रंजना शर्मा	आई चिड़िया	६४
कमला चमोला	सूख गया जल	६८

कविताएं

काका हाथरसी, यश मालवीय, दिविक रमेश, बाबूराम शर्मा 'विभाकर' २८

इस अंक में विशेष

हमारे नए राष्ट्रपति		११
खेल-खिलौने		२२-२३
खो गया पवन	चित्रकथा	३३-३६
तीस हीरे	चित्रकथा	३७-४०
कांटों में खिलते हैं फूल		५०-५१

स्तंभ

पत्र मिला ४; आप कितने बुद्धिमान हैं २१; चटपट ४८; तेनालीराम ४९; ज्ञान पहेली ५५; चीटू-नीटू ६१; पुरस्कृत कथाएं ६३; नई पुस्तकें ६६; पत्र मित्र ७०

सम्पादक
जयप्रकाश भारती

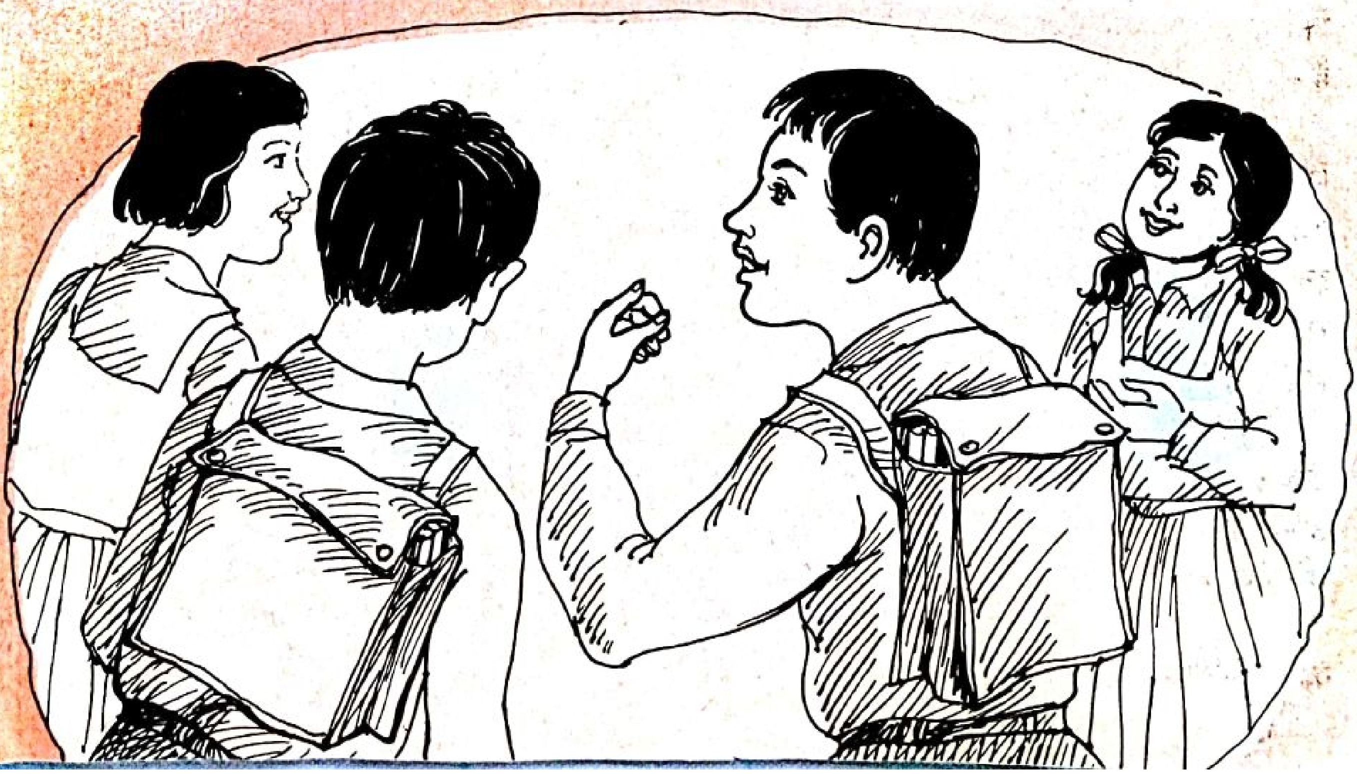
आवरण : देवब्रत बनर्जी

एलबम : राजेन्द्रकुमार वधवा

सहायक सम्पादक : **देवेन्द्रकुमार**

मुख्य उप-सम्पादक : **रत्नप्रकाश शील**

वरिष्ठ उप-सम्पादक : **क्षमा शर्मा** उप-सम्पादक : **डा. चन्द्रप्रकाश, डा. नरेन्द्रकुमार** चित्रकार : **प्रशांत सेन**



कुतर-कुतर

—गिरीश भंडारी

पुरानी बात है । वाई के सम्राट चाओ चाओ के पास घुड़सवारी के लिए एक बहुत ही शानदार झूल थी । वह चाओ को प्राणों से भी प्यारी थी । उसको वह शाही खजाने में रखवाते थे । बहुत ही खास अवसरों पर वह निकाली जाती थी ।

एक बार शाही खजाने के खज़ांची ने देखा कि चूहों ने कुतरकर उस झूल में एक बड़ा छेद कर दिया है । बेचारा खजांची यह देख डर के मारे कांपने लगा । उसका रंग पीला पड़ गया । उसे विश्वास था कि सम्राट अपनी प्रिय झूल की यह हालत देखकर, उसे मृत्यु दंड ही देंगे । उसने यह घटना किसी को नहीं बताई, पर बात फैल ही गई ।

राजकुमार चाओ चौंग को भी इस बात की खबर लगी । उसने सोचा कि अगर यह खबर मेरे पिता के कानों में पहुंच गई, तो निश्चित ही खजांची अपनी जान से हाथ धो बैठेगा । फिर उसकी पत्नी और बच्चों का क्या होगा । क्या एक झूल मनुष्य के प्राणों से अधिक मूल्यवान है ? उसने सोचा कि खजांची को बचाने का कोई उपाय निकालना ही चाहिए । काफी सोच-विचार के बाद उसे एक उपाय सूझ ही गया । उसने खजांची को बुलाया और उसको अपनी योजना बताई । खजांची का डर दूर हो गया । कई दिन के बाद वह पहली बार चैन की नींद सोया ।

खजांची के जाने के बाद राजकुमार अपने कमरे में गया । उसने अपनी शाही पोशाक में जगह-जगह बड़े-बड़े छेद कर दिए । अपने चेहरे को पत्थर की तरह सख्त बनाकर वह पलंग पर बैठ गया । गुम-सुम, न खाना, न पीना । ऐसा लगता था कि उसके साथ कोई बड़ी दुर्घटना हो गई हो । नौकरों ने जब राजकुमार की यह हालत देखी, तो वे दौड़े-दौड़े सम्राट के पास गए । सम्राट को सारी बात बताई, तो वे भी दौड़े-दौड़े आए । उन्होंने देखा, उनका प्रिय पुत्र गुम-सुम, बैठा है । चेहरा पीला पड़ गया था । जैसे किसी अज्ञात भय ने उसे जकड़ रखा हो ।

सम्राट ने उससे पूछा कि क्या बात है ? राजकुमार





ने कोई उत्तर नहीं दिया। अंत में सम्राट के बहुत कहने पर उसने बताया— "मेरी पोशाक को चूहों ने कुतरकर बरबाद कर दिया है। यह देखिए।" कहकर उसने छेद वाली पोशाक चाओ चाओ के सामने रख दी।

सम्राट मुसकराए— "बस, सिर्फ यह बात है। . . . दूसरी पोशाक बन जाएगी . . .।"

पर चाओ चौंग का चेहरा लटका ही रहा। बोला— "पर पिता जी, मैंने सुना है, चूहों का कपड़ा कुतरना भारी अपशकुन होता है। इसीलिए तो मैं इतना परेशान हूं।"

"बकवास।" —चाओ चाओ ने उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा— "यह अंधविश्वास है। तुम्हें इस तरह की ऊलजलूल बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए।"

यह सुनकर चाओ चौंग के चेहरे पर मुस्कान फैल गई।

जब सम्राट अपने कक्ष में चले गए, तो चौंग ने खजांची को बुलाया। कहा कि अब दोपहर बाद तुम सम्राट को झूल की हालत के बारे में बता देना.....।

दोपहर बाद, खजांची सम्राट के पास गया। डरते-डरते उसने झूल को चूहों द्वारा कुतरी जाने वाली बात बतानी शुरू की। बात खत्म होते ही राजकुमार चौंग बोल उठा— "देखो, कितने दुष्ट हैं ये चूहे। पहले इन्होंने मेरी पोशाक को कुतर डाला और अब शाही झूल को...।"

किंतु सम्राट ने जब झूल की हालत देखी, तो उनके क्रोध की सीमा न रही। आग-बबूला होकर वह खजांची को मृत्यु दंड देने ही वाले थे कि उन्हें सुबह की घटना का ध्यान हो आया। उनका क्रोध शांत होने लगा। मौका देखकर राजकुमार बोला— "पिता जी, झूल बहुमूल्य जरूर है, पर इतना नहीं कि किसी की जान ले ली जाए। और फिर आपने ही तो सबेरे कहा था कि अगर काम में लाई जाने वाली चीज को चूहे कुतर देते हैं, तो अपशकुन की कोई बात नहीं होती। क्या आप खजांची को माफ नहीं कर सकते?"

सम्राट ने कुछ क्षण सोचा। फिर खजांची को क्षमादान दे, वापस जाने को कह आराम करने चले गए। ●



मंदिर में

— अविसात राय

यह बहुत पुरानी बात है, जिसे मेरी दादी ने बताया था। हमारे गांव के पूरब में एक कोस दूर एक कुटिया थी। उसके खंडहर आज भी हैं।

एक दिन एक महात्मा कुटिया पर आए। उन्होंने खुद ही कुटिया के अंदर-बाहर उगी झाड़ियों को साफ किया और वहीं अपना आसन जमा लिया।

लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। क्योंकि महात्माजी गांव में भिक्षा भी मांगने नहीं जाते थे। धीरे-धीरे समय बीता। अब लोग उनके पास जाने लगे। महात्मा जी बड़े स्नेह से गांव वालों को बैठाते। उन्हें वेद-पुराणों की रोचक व सीखभरी कहानियां सुनाते। उनका ज्ञान गहरा था। किसी की कितनी भी बड़ी समस्या क्यों न होती, उसे चुटकी बजाते सुलझादेते थे।

गांव वालों के मन में महात्मा जी के प्रति अपार श्रद्धा भर गई। समय बीतने के साथ-साथ उनके भक्तों की संख्या भी बढ़ती गई।

गांव के लोगों ने मिलकर राधा-कृष्ण की चांदी की मूर्तियां बनवाईं। फिर मंदिर में रखवा दीं।

जाड़ों के दिन थे। रात के लगभग दस बजे होंगे। महात्मा जी कुटिया में ध्यान मग्न थे। तभी लोगों की चीख-चिल्लाहट सुनाई दी। वह जैसे ही बाहर निकले कि एक व्यक्ति आकर उनके पैरों पर गिर पड़ा। गिड़गिड़ाकर बोला— "महात्मा जी, मुझे बचा लीजिए, नहीं तो वे लोग मुझे जान से मार डालेंगे।"

गांव वाले बहुत करीब आ गए थे। महात्मा जी उसे एक टूटे कमरे में ले गए और लकड़ियों के बीच छिपा दिया। वह चोर था।

जैसे ही महात्मा जी बाहर आए, गांव के कई युवक हाथ में टार्च व लाठी लिए आ गए। गांव के लोगों के पूछने पर वह बोले कि एक छाया को उन्होंने इधर से भागते हुए देखा है। सब लोग उस ओर ही दौड़ पड़े।

अब महात्मा जी दीपक लिए उस चोर के पास आए। उसके सिर में एक गहरा जख्म था। दाहिने पैर का अंगूठा भी कट गया था। उन्होंने पावों पर मरहम लगाई, उसके बदन को भीगे कपड़े से साफ किया। फिर उसे मंदिर में ले आए और अंदर से दरवाजा बंद कर लिया। मरहम लगाने से उस व्यक्ति की पीड़ा कम हो गई थी। वह जल्दी ही सो गया। महात्मा जी काफी देर तक बैठे भगवान की भक्ति में लीन रहे। फिर न जाने कब उन्हें भी नींद आ गई।

महात्मा जी की नींद टूटी, तो देखा दरवाजे पर गांव के कई लोग खड़े थे। वे नाराज थे। महात्मा जी कुछ पूछते कि मुखिया कठोर लहजे में बोला— "आपने चोर को मंदिर में छिपाया था। आपने ऐसा क्यों किया ?"

गांव के महाजन ने कहा— "आप पीछे देखिए, मूर्तियां भी गायब हैं।"

"आपने एक चोर को पनाह दी और बहुमूल्य देव मूर्तियों को गायब करवा दिया।"— कई युवकों ने एक साथ कहा।

महात्मा जी मुसकराकर बोले— "अगर मैंने उसे नहीं बचाया होता, तो तुम लोग उसे जान से मार डालते। यह महापाप होता। देव प्रतिमाएं सुरक्षित हैं। मैंने चोर के सो जाने के बाद चांदी की मूर्तियां बक्स में रख दी थीं और उनकी जगह मिट्टी की सुनहरी मूर्तियां।" अपनी बात समाप्त कर महात्मा जी उठे और कोने में जाकर काठ का बड़ा बक्सा उठा लाए। उसे खोलकर चांदी की देव प्रतिमाएं निकालीं और यथा स्थान रख दीं।

अब महात्मा जी की बात का मर्म गांव वालों की समझ में आया। सब लज्जित होकर क्षमा मांगने लगे।

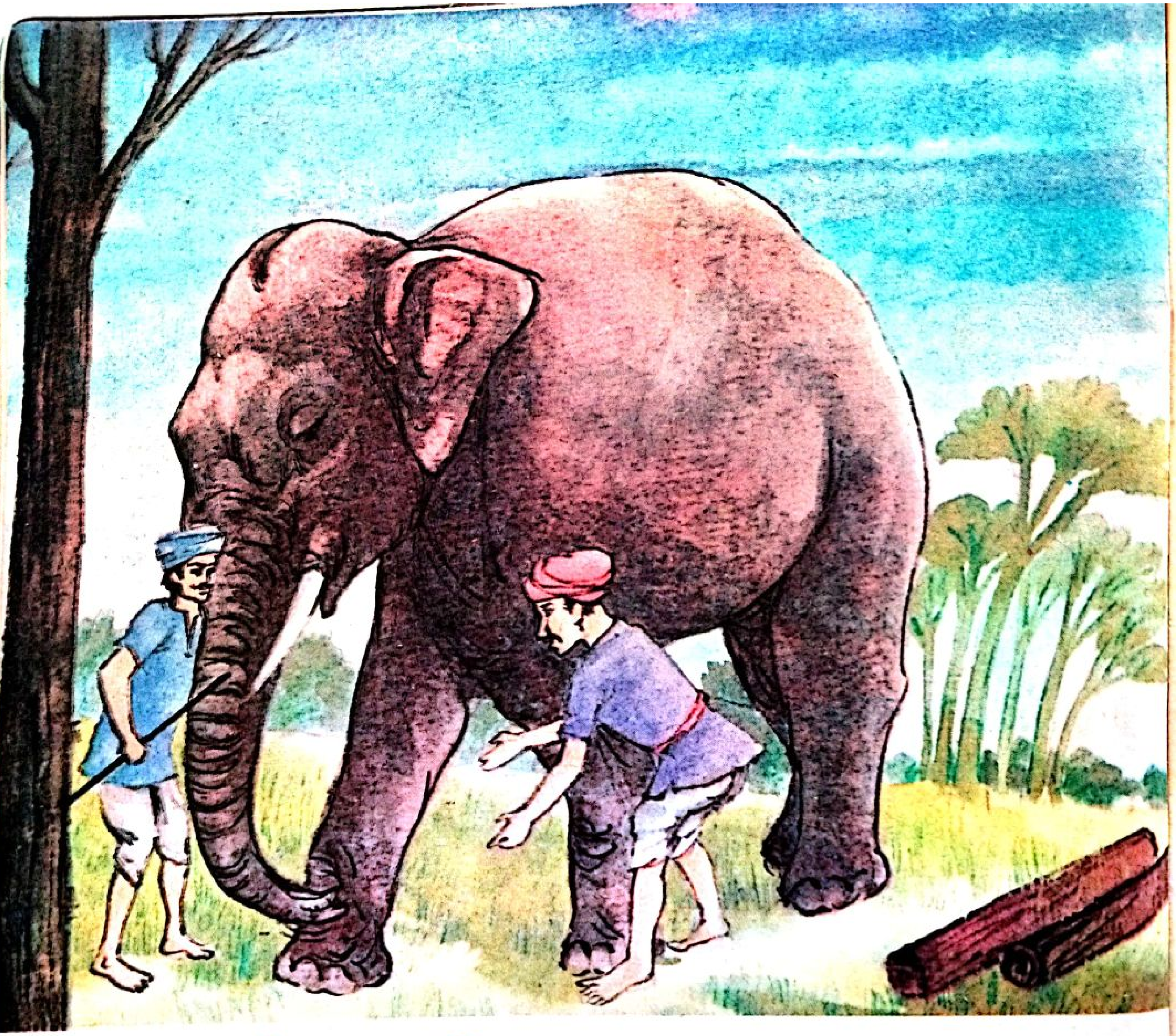
महात्मा जी ने गांववालों को हत्या के पाप से बचा लिया था।



नंदन एलबम : १०४

हमारे राष्ट्रपति

डा. शंकर दयाल शर्मा



सफेद हाथी

—जयप्रकाश भारती

कुसुमपुर में धनपाल और मनपाल रहते थे। वे दोनों पड़ोसी थे। दोनों बढ़ई का काम करते थे। नगर के पास ही नदी बहती थी। दोनों मित्र नाव में बैठकर नदी पार करते, जंगल में चले जाते। वहां लकड़ी काटते। उसी से कुछ न कुछ बनाकर बेचा करते।

धनपाल और मनपाल मेहनत तो काफी करते थे, लेकिन किसी तरह बस गुजर-बसर ही कर पाते। वे सोचा करते कि क्या कभी उनकी गरीबी दूर हो सकेगी ?

एक दिन धनपाल और मनपाल जंगल में लकड़ियां काट रहे थे। तभी उन्होंने देखा कि एक हाथी उनकी ओर चला आ रहा है। पहले तो वे डर गए। किंतु उन्हें लगा कि हाथी जैसे दर्द के कारण कराह रहा है। धीरे-धीरे हाथी उनके पास आ गया। उसने एक टांग ऊपर उठाई हुई थी। उससे खून बह रहा था।

उनके पास आकर हाथी पसर गया। धनपाल ने देखा कि हाथी के पांव में लोहे का टुकड़ा घुसा है। उसने मनपाल से कहा कि जमूरे से उसे बाहर खींचे। बड़ी कठिनाई से वह टुकड़ा बाहर निकल पाया। फिर उन्होंने कुछ पत्ते कुचल कर घाव में भरे। खून रोकने

के लिए कसकर कपड़ा बांधा। हाथी का दर्द कुछ कम हो गया। वह उठकर वहां से गया नहीं। धनपाल और मनपाल हाथी को कुछ न कुछ खाने-पीने को लाकर देते रहे। कई दिन में हाथी भला-चंगा हो गया और अपनी राह चला गया।

एक दिन दोनों मित्र जंगल में पहुंचे, तो क्या देखते हैं कि वही हाथी खड़ा है। उसके पास लकड़ी का ढेर लगा था। हाथी ने सूंड उठाकर दोनों का अभिवादन किया। मानो वह कह रहा था कि ये लकड़ियां तुम्हारे लिए हैं। दोनों मित्र हाथी के ऊपर ही लकड़ी लादकर घर आ गए। अब तो हाथी उनका काम करने लगा। आए दिन वह लकड़ियां लेकर आ जाता। मनपाल और धनपाल की बहुत-सी मेहनत बच जाती। उनकी आमदनी बढ़ती गई।

इसी तरह बरसों निकल गए। हाथी बूढ़ा हो गया। एक दिन हाथी आया, तो उसके साथ उसका बेटा भी था। वही जवान और सफेद हाथी आज लकड़ियां ढोकर लाया था। सूंड उठा-उठाकर मानो धनपाल और मनपाल से जान-पहचान कर रहा था। घर के बच्चों ने दोनों हाथियों को तरह-तरह की चीजें खाने को दीं।

उस दिन के बाद बूढ़ा हाथी उनके घर फिर कभी नहीं आया। सफेद हाथी ने अपने पिता का काम संभाल लिया था। वही दोनों मित्रों को बढ़िया लकड़ी ला-लाकर दिया करता। घर के बच्चों को पीठ पर बैठाकर सैर भी कराता।

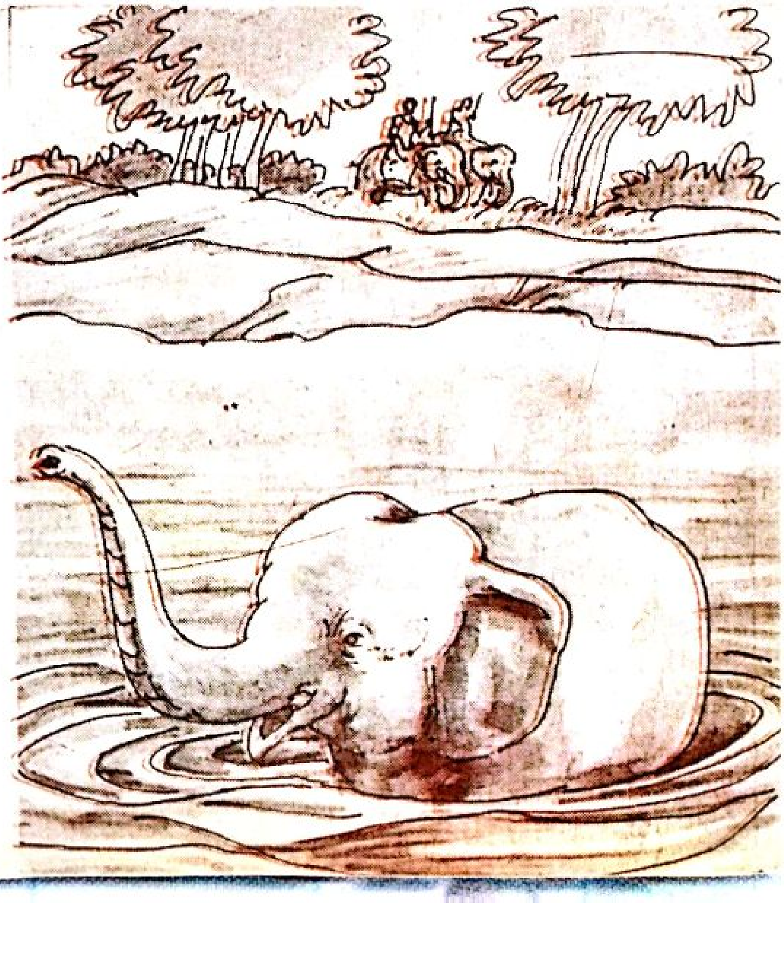
एक दिन सफेद हाथी नदी में नहा रहा था। तभी राजा शिवदत्त के हाथियों के झुंड को लेकर महावत वहां आए। उन्होंने सफेद हाथी को देखा, तो राजा शिवदत्त तक खबर जा पहुंची। राजा ने सोचा कि ऐसा बढ़िया हाथी तो उसके हाथीखाने में ही होना चाहिए। राजा ने सैनिकों से हाथी के मालिक का पता लगाने को कहा।

खोजबीन करने पर धनपाल और मनपाल का पता लगा। राजा ने उनसे कहा कि वे उस हाथी को बेच दें। बदले में राजा ने दोनों को दस-दस हजार स्वर्ण मुद्राएं दीं। वे तो फूले न समाए। सफेद हाथी राजा के यहां शोभा बढ़ाने लगा। धनपाल और मनपाल सुख से जीवन जीने लगे।

राजा शिवदत्त को जल्दी ही सफेद हाथी से विशेष लगाव हो गया। राजा जब दरबार में आते, तो हाथी सूंड में फूल भरकर द्वार पर उनका अभिवादन करता। यह रोज-रोज का नियम ही बन गया। राजा शिवदत्त मानने लगे थे कि सफेद हाथी उनके लिए बहुत शुभ है। उसके आने के बाद हर तरफ से अच्छे समाचार मिलने लगे थे। राजा शिवदत्त अपने हाथ से हाथी को मीठा रोट खिलाया करते। जब भी सवारी करते, तो उसी हाथी पर। मानो वह उनका कोई अभिन्न साथी ही हो।

समय बीतता रहा। एक बार राजा शिवदत्त बीमार पड़े। उन्होंने बिस्तर पकड़ लिया। बीमार राजा भी सफेद हाथी को अपने पास बुलवा लेते। हाथ उठा-उठाकर उसे दुलारते। हाथी भी अपनी सूंड उनके हाथ पर फिराता। जब सफेद हाथी को वापस ले जाया जाता, तो उसकी आंखों से आंसुओं की धार बहती दिखाई देती। सचमुच वह राजा से बहुत स्नेह करता था।

दूर-दूर से बड़े वैद्य आए। तरह-तरह से राजा



के लिए कसकर कपड़ा बांधा। हाथी का दर्द कुछ कम हो गया। वह उठकर वहां से गया नहीं। धनपाल और मनपाल हाथी को कुछ न कुछ खाने-पीने को लाकर देते रहे। कई दिन में हाथी भला-चंगा हो गया और अपनी राह चला गया।

एक दिन दोनों मित्र जंगल में पहुंचे, तो क्या देखते हैं कि वही हाथी खड़ा है। उसके पास लकड़ी का ढेर लगा था। हाथी ने सूंड उठाकर दोनों का अभिवादन किया। मानो वह कह रहा था कि ये लकड़ियां तुम्हारे लिए हैं। दोनों मित्र हाथी के ऊपर ही लकड़ी लादकर घर आ गए। अब तो हाथी उनका काम करने लगा। आए दिन वह लकड़ियां लेकर आ जाता। मनपाल और धनपाल की बहुत-सी मेहनत बच जाती। उनकी आमदनी बढ़ती गई।

इसी तरह बरसों निकल गए। हाथी बूढ़ा हो गया। एक दिन हाथी आया, तो उसके साथ उसका बेटा भी था। वही जवान और सफेद हाथी आज लकड़ियां ढोकर लाया था। सूंड उठा-उठाकर मानो धनपाल और मनपाल से जान-पहचान कर रहा था। घर के बच्चों ने दोनों हाथियों को तरह-तरह की चीजें खाने को दीं।

उस दिन के बाद बूढ़ा हाथी उनके घर फिर कभी नहीं आया। सफेद हाथी ने अपने पिता का काम संभाल लिया था। वही दोनों मित्रों को बढ़िया लकड़ी ला-लाकर दिया करता। घर के बच्चों को पीठ पर बैठाकर सैर भी कराता।

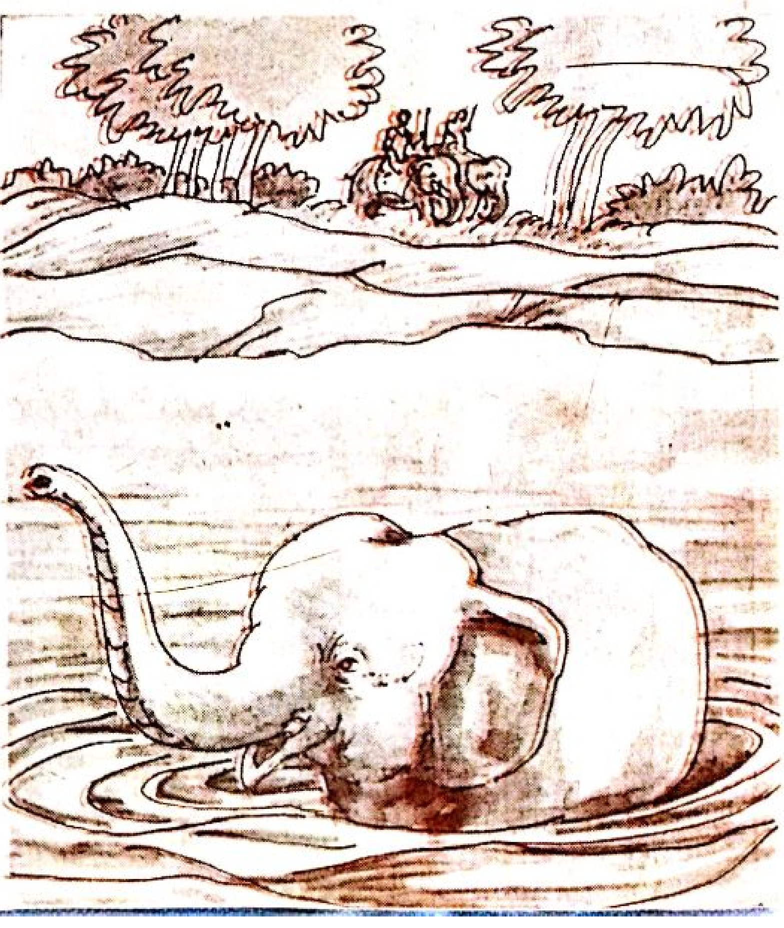
एक दिन सफेद हाथी नदी में नहा रहा था। तभी राजा शिवदत्त के हाथियों के झुंड को लेकर महावत वहां आए। उन्होंने सफेद हाथी को देखा, तो राजा शिवदत्त तक खबर जा पहुंची। राजा ने सोचा कि ऐसा बढ़िया हाथी तो उसके हाथी-खाने में ही होना चाहिए। राजा ने सैनिकों से हाथी के मालिक का पता लगाने को कहा।

खोजबीन करने पर धनपाल और मनपाल का पता लगा। राजा ने उनसे कहा कि वे उस हाथी को बेच दें। बदले में राजा ने दोनों को दस-दस हजार स्वर्ण मुद्राएं दीं। वे तो फूले न समाए। सफेद हाथी राजा के यहां शोभा बढ़ाने लगा। धनपाल और मनपाल सुख से जीवन जीने लगे।

राजा शिवदत्त को जल्दी ही सफेद हाथी से विशेष लगाव हो गया। राजा जब दरबार में आते, तो हाथी सूंड में फूल भरकर द्वार पर उनका अभिवादन करता। यह रोज-रोज का नियम ही बन गया। राजा शिवदत्त मानने लगे थे कि सफेद हाथी उनके लिए बहुत शुभ है। उसके आने के बाद हर तरफ से अच्छे समाचार मिलने लगे थे। राजा शिवदत्त अपने हाथ से हाथी को मीठा रोट खिलाया करते। जब भी सवारी करते, तो उसी हाथी पर। मानो वह उनका कोई अभिन्न साथी ही हो।

समय बीतता रहा। एक बार राजा शिवदत्त बीमार पड़े। उन्होंने बिस्तर पकड़ लिया। बीमार राजा भी सफेद हाथी को अपने पास बुलवा लेते। हाथ उठा-उठाकर उसे दुलारते। हाथी भी अपनी सूंड उनके हाथ पर फिराता। जब सफेद हाथी को वापस ले जाया जाता, तो उसकी आंखों से आंसुओं की धार बहती दिखाई देती। सचमुच वह राजा से बहुत स्नेह करता था।

दूर-दूर से बड़े वैद्य आए। तरह-तरह से राजा



का इलाज हुआ । पर वह ठीक न हो पाए । एक दिन राजा चल बसे । राजमहल में शोक छा गया । अपने प्रिय राजा को खोकर सभी बहुत उदास थे । हाथी ने भी कंई दिन तक कुछ नहीं खाया-पिया । मानो वह भी सब कुछ समझ गया था ।

राजा शिवदत्त के मरते ही, राज्य पर जैसे कहर टूट पड़ा । पड़ोसी राजा विजयचंद्र ने मौका देख, धावा बोल दिया । शिवदत्त का एकमात्र पुत्र गणदत्त अभी केवल आठ साल का था । उसे राजतिलक करके सिंहासन पर बैठाया गया । लेकिन बालक गणदत्त भला हमले का मुकाबला कैसे करता ! कुसुमपुर की सेना हमलावर का मुकाबला करने को मैदान में जा डटी थी । पर अपने राजा के न होने से सैनिकों में जोश न था ।

युद्ध के मैदान में सेना का उत्साह बढ़ाने वाला कोई न था । इसी कारण संख्या में अधिक होने पर भी शिवदत्त की सेना पीछे हट रही थी । विजयचंद्र को लग रहा था कि वह जल्दी ही शिवदत्त के राज्य को जीत लेगा । गणदत्त की बात चलती, तो वह हंसकर कहता— "वह तो बच्चा है । उसे खिलौनों से खेलना चाहिए । वह राजा बनने योग्य नहीं । कुसुमपुर का राजा तो मैं हूं ।"

गणदत्त बिल्कुल छुटपन से ही सफेद हाथी को देखता आया था । पिता के साथ अनेक बार उसने हाथी पर सवारी की थी । राजा बनते ही गणदत्त को भी सफेद हाथी से फूल भेंट करवाए गए थे । उसे यह भी मालूम था कि सफेद हाथी को राज परिवार के लिए शुभ माना जाता था ।

गणदत्त भी युद्ध के कारण परेशान था । वह जानता था कि उसकी सेना युद्ध के मैदान में हार रही है । उसका मन कहता था—'शायद सफेद हाथी हमारी मदद कर सके ।' एक रात गणदत्त को नींद न आई । कुछ देर तक बिस्तर पर लेटा हुआ सोचता रहा । फिर हाथी-खाने की ओर चला गया अकेला । उसने किसी से कुछ न कहा ।

गणदत्त जाकर सफेद हाथी के पास खड़ा हो गया । सफेद हाथी ने बालक राजा को देखकर कान हिलाए, फिर सूंड उठाकर अभिवादन किया । जैसे पूछ रहा हो— 'राजा, क्या बात है ? इस समय कैसे कष्ट किया ?'

बालक राजा ने भोलेपन से कह दिया—"प्यारे हाथी, हम मुसीबत में हैं । राज्य पर हमला हो गया है । हमारी सेना हार रही है । हमारी मदद करो ।" सफेद हाथी ने सूंड हिलाई । पता नहीं, वह कुछ समझा या नहीं ? इसके बाद गणदत्त चुपचाप राजमहल में वापस चला गया । हाथी के सामने अपने मन की बात प्रकट कर देने से उसे संतोष हुआ था ।

अगले दिन सुबह महावत रोज की तरह हाथी को नदी पर ले गया । लेकिन वापसी में हाथी ने महावत के साथ जाने से इंकार कर दिया । वह अड़कर एक जगह खड़ा हो गया । और फिर एक तरफ को भाग निकला । महावत उसे पुकारता रह गया । लेकिन हाथी जल्दी ही जंगल में गुम हो गया । महावत को हाथ मलते हुए पैदल ही राजमहल लौटना पड़ा । उसने राजा को पूरी घटना बता दी । सफेद हाथी क्यों और कहां चला गया, यह बात कोई न समझ पाया ।

अगले दिन बहुत सवेरे कुसुमपुर के बाहर मैदान में सैकड़ों हाथी जमा थे । सफेद हाथी सबसे आगे था । कुसुमपुर के सैनिक उन्हें देख-देखकर हैरान थे कि कौन उन्हें वहां ले आया है ! लड़ाई शुरू हुई, तो विजयचंद्र के सैनिक बहुत वीरता से लड़ने लगे । लेकिन तभी अचानक हाथियों की चिंग्घाड़ चारों ओर गूंज उठी । जंगली हाथियों ने शत्रु सेना पर धावा बोल दिया । मानो तेज काली आंधी आ गई हो । शत्रु सेना के पास उन हाथियों का मुकाबला करने का साहस न था ।

सैनिकों के पांव उखड़ गए । उनके घोड़े डर के मारे चीत्कार करने लगे । शाम तक मैदान खाली हो गया । हाथियों के झुंड जहां से आए थे, अपने आप लौट गए ।

दूसरे दिन कुसुमपुर में उत्सव मनाया गया । सफेद हाथी वहां मौजूद था । उसने बालक राजा गणदत्त का अभिवादन किया । सूंड में ले-लेकर फूल बरसाए । ●

कोने में कौन

—रचना कुमार

एक राजा थे सुलेमान। वह कोई मामूली राजा न थे। कहते हैं कि इस दुनिया में सुलेमान जैसे बुद्धिमान और न्यायप्रिय राजा बहुत कम हुए हैं। उनका दरबार भी अनोखा था। उसमें ढाई सौ दरबारी चांदी के सिंहासनों पर बैठते थे। राजा सुलेमान खुद सोने के सिंहासन पर बैठते थे। सिंहासन के दोनों तरफ सोने के दो शेर थे।

कोई भी अपराधी सुलेमान के सामने झूठ नहीं बोल पाता था। यदि कोई ऐसा करता तो वे शेर गर्जन करने लगते और पूंछ फटकारने लगते। सुलेमान के दरबार में कोई मुकदमा पेश होता, तो दरबारियों को भी अपनी राय देने की पूरी छूट थी।

एक बार सुलेमान ने एक शानदार मंदिर बनवाने का निश्चय किया। खजाने में धन-दौलत की कमी न थी। राजा सुलेमान ने मंत्री से कहा—"हम ऐसा मंदिर बनवाना चाहते हैं कि जिसे देखने वाले दांतों तले अंगुली दबा लें। वह कला और कारीगरी का बेजोड़ नमूना हो। उसमें एक-एक खम्भे पर और छतों पर पच्चीकारी की जाए। मंदिर ऐसा मजबूत बने जो हजारों-हजार साल तक यों ही खड़ा रहे। आंधी-पानी तूफान और भूकम्प भी उसका कुछ न बिगाड़ सकें।"

राजा सुलेमान का प्रधानमंत्री भी कोई मामूली आदमी न था। वह बहुत चतुर और सूझ-बूझ का धनी था। उसने राजा से विनती की—"महाराज, ऐसी इमारत बनने में समय लगेगा। दूर-दूर से कारीगर जुटाने होंगे। बढ़िया लकड़ी और बेशकीमती पत्थर भी इसके लिए चाहिएं।"

राजा सुलेमान तनिक सोचने लगे। फिर बोले—"तुम्हें हर तरह की छूट दी जाती है। लेकिन हर दो साल में हमें यह पता चलता रहे कि मंदिर-निर्माण की क्या प्रगति हुई।"

मंत्री ने पूरे उत्साह से इस काम को हाथ में ले लिया। पहले तो शहर से बाहर एक बढ़िया जगह का चुनाव किया गया। फिर दूर-दराज के कारीगरों को



बुलवाया गया। पच्चीकारी और सजावट करनेवाले कलाकारों को न्योते भेजे गए।

मंदिर की गहरी नींव की खुदाई का काम शुरू हो गया। पांच हाथ गहरी नींव खोदी गई। फिर उसका बढ़िया भराव कराया गया। इसी काम में दो बरस निकल गए। राजा सुलेमान ने पूछताछ की तो मंत्री ने कहा कि महाराज अभी तो काम की शुरुआत ही समझिए।

इसी तरह समय बीतता गया। दूर-दराज से लाल पत्थर मंगाया गया। संगमरमर की बढ़िया किस्में चुन-चुनकर मंगाई गईं। लेबनान से देवदार की लकड़ी लाने के ठेके दिए गए।

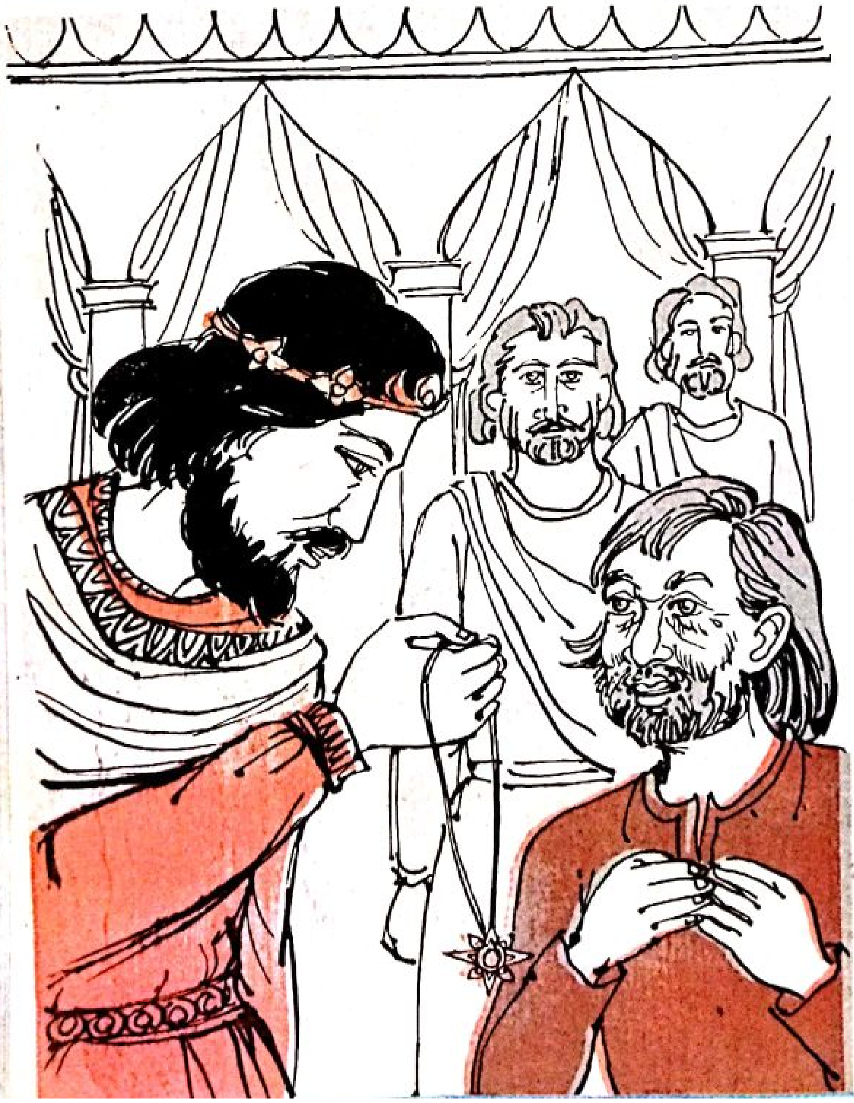
दस बरस बीत गए। मंदिर बनकर तैयार हो चुका था। दीवारों पर लकड़ी में बहुत सुंदर-सुंदर मूर्तियां गोदी गई थीं। मंदिर के फर्श पर भी लकड़ी की परत डाली गई थी। वह दिन भी आया जब मंदिर का सारा काम पूरा हो गया था। प्रधानमंत्री ने राजा

सुलेमान को खुशखबरी सुनाई।

अगले दिन राजा सुलेमान आए। देखते रहे, देखते रहे। जिधर भी देखते, उनके अचरज का ठिकाना न रहता। राजा सुलेमान इतने खुश हुए कि उन्होंने एक दावत करने की घोषणा की। दावत में अमीर-उमराव के अलावा उन कारीगरों को भी बुलाया गया, जिन्होंने मंदिर बनाने में भाग लिया था।

दावत में आमंत्रित सभी लोग आ चुके थे। खाना परोसा जा चुका था। खाना शुरू करने से पहले अचानक राजा सुलेमान खड़े हो गए। बोले—"हम यह जानना चाहते हैं कि इस शानदार मंदिर को बनाने में सबसे ज्यादा योगदान किसका है?"

एक मिस्त्री खड़ा हुआ। बोला—"महाराज, एक-एक ईंट जोड़कर मंदिर का निर्माण हमने किया है। इसकी दीवारें और आकाश से बातें करते गुम्बद बहुत ही मजबूत हैं। नींव से लेकर चोटी तक राज-मिस्त्री ही इसके निर्माण में लगे रहे हैं। सदियों तक राजा सुलेमान को लोग याद करेंगे।"



तभी एक बढ़ई भी खड़ा हो गया। उसने अपनी वकालत करते हुए कहा—महाराज, नींव में पत्थर-कंकड़ भरने और ढांचा बनाने में राज जरूर आगे रहे हैं। लेकिन यदि हम बढ़ई पसीना न बहाते तो क्या मंदिर इतना सुंदर बन सकता था? इसके फर्श, खम्भों और छतों में बढ़िया किस्म की लकड़ी लगी है। मंदिर के असली निर्माता तो हम ही हैं।"

खुदाई करने वाले एक मजदूर ने कहा—"महाराज, हमारे काम की क्या कोई कीमत नहीं? नींव खोदते-खोदते हमारे हाथों में छाले पड़ गए। नींव न खोदी जाती तो क्या इतना बड़ा भवन मिस्त्री या बढ़ई खड़ा कर सकते थे?"

कुशल कारीगरों में से भी एक खड़ा हुआ। बोला—"महाराज, मंदिर में जो कुछ सुंदर है, वह हमारी छेनी का कमाल है। मंदिर की चहारदीवारी खड़ी करना कौन बड़ी बात है। असली चीज है, इसकी बोलती हुई पच्चीकारी, इसका सौंदर्य।"

राजा सुलेमान भी आखिर यों ही किसी की बात मानने वाले न थे। उन्होंने राज को अपने पास बुलाया। उससे पूछा—"क्यों भई, जो औजार तुम इस्तेमाल करते हो, वे किसके बनाए हुए हैं?"

राज ने उत्तर दिया—"लुहार के।"

इसी तरह सुलेमान ने बढ़ई से पूछा—"और तुम्हारे औजार?"

उसने सहज ढंग से उत्तर दिया—"वे भी लुहार ने ही बनाए हैं।"

सुलेमान ने कारीगर से पूछा। उस मजदूर से भी कहा—"तुम्हारे फावड़े, कुदालियां भी निश्चय ही लुहार ने बनाई हैं।"

सुलेमान अपनी जगह से आगे बढ़े। कोने में बैठे एक आदमी के पास पहुंचे उस आदमी का चेहरा धुएं के कारण काला पड़ गया था। "मंदिर के निर्माण में सबसे बड़ा योगदान इस आदमी का है।" कहते हुए राजा सुलेमान उसे अपने साथ ले आए। उसे अपने पास बैठाया और गले से उतार कर कीमती माला उसे भेंट में दी। ●

भर-भर थाल

— साबिर हुसैन

हिमालय पर्वत की तलहटी में एक गांव था बल्लीपुर। वहां एक अनाथ लड़का हरखू रहता था। वह सीधा एवं दयालु था। हरखू गांव के जानवरों को चराया करता था। बल्लीपुर का जमींदार क्रूर और लालची था।

एक बार वर्षा नहीं हुई। फसलें सूख गईं। लोग त्राहि-त्राहि करने लगे। तभी जमींदार ने गांव वालों को आदेश दिया कि वे अपना-अपना लगान जमा कर दें। किसानों ने बहुत कहा कि जब फसल ही नहीं हुई, तो लगान कहां से दें। लेकिन जमींदार नहीं माना। उसने लोगों का बचा-खुचा अनाज और उनके जानवर छीन लिए।

एक दिन हरखू जंगल में दूर तक घूम आया। लेकिन उसे खाने के लिए कुछ नहीं मिला। जब वह वापस आ रहा था, तभी रास्ते में एक कंदमूल दिखाई दिया। हरखू ने उसे खोदकर निकाल लिया। जैसे ही उसे खाने के लिए उठाया, किसी ने आवाज दी— "बेटा, बहुत भूख लगी है।"

हरखू ने देखा, एक बूढ़ा आदमी झाड़ी के पास बैठा था। हरखू ने कंदमूल बूढ़े को दे दिया। बूढ़ा कंदमूल खाकर बोला— "बेटा, सामने पहाड़ी पर बौनों की एक गुफा है। वहां एक पत्थर की भूरी गाय है। तुम उसे उठा कर, अपने गांव में ले जाओ। गाय चमत्कारी है। पूरे गांव के भोजन का प्रबंध हो जाएगा।"

हरखू तुरंत पहाड़ी की ओर चल दिया। पहाड़ी पर एक गुफा थी। हरखू समझ गया कि यही बौनों की गुफा है। वह उसके अंदर गया। गुफा के दूसरी ओर पहाड़ी से घिरा छोटा-सा मैदान था। वहां तरह-तरह के पकवानों की सुगंध फैल रही थी। हरखू उस सुगंध के सहारे आगे बढ़ा। उसने देखा, एक स्थान पर बहुत-से बौने बैठे बढ़िया पकवान खा रहे थे। सामने पत्थर की एक भूरी और एक काली गाय रखी हुई थी। हरखू एक बड़े पत्थर के पीछे छिपकर बैठ गया।

भोजन कर एक बौना भूरी गाय के पास पहुंचा। बोला— "हे मां, सबको खाने के लिए मिठाई दो।"

हरखू यह देखकर आश्चर्य चकित रह गया कि उस छोटी-सी पत्थर की गाय का मुंह खुला। उसमें से मिठाई भरी थालियां निकलने लगीं। बौने एक-एक थाली लेकर मिठाई खाने लगे।

"हमारी भूरी गाय कितनी अच्छी है, जो हमें खाने के लिए स्वादिष्ट भोजन देती है।"— एक बौना बर्फी खाते हुए बोला।

"काली गाय तो हीरे-मोती देती है।" — दूसरा बौना बोला।

"अब हम लोग आराम करेंगे।"— एक सफेद दाढ़ी वाला बौना उठते हुए बोला। उसी के साथ सभी बौने एक छोटी-सी गुफा में चले गए।

बौनों के गुफा में जाते ही हरखू उस पत्थर के पीछे से निकला। भूरी गाय के पास जाकर बोला— "हे मां, मुझे भोजन दो।"

गाय का मुंह खुला। उसमें से पकवानों से सजी थाली बाहर आ गई। हरखू ने पेट भर भोजन किया। फिर वह भूरी गाय को लेकर सीधे गांव चला आया।

उसने गाय की सहायता से सारे गांव वालों को स्वादिष्ट भोजन खिलाया।

अब हरखू रोज गांव वालों को भोजन खिलाने लगा। जमींदार को मालूम हो गया कि हरखू के पास



कोई पत्थर की भूरी गाय हैं, जिससे मनचाहा भोजन मिलता है । जमींदार तुरंत गाय छीनने हरखू के पास पहुंच गया । बोला— "हरखू, यह गाय मुझे दे दे ।"

"जमींदार साहब, आपके लिए तो काली गाय अच्छी है, जो हीरे-मोती देती है ।"— हरखू हाथ जोड़कर बोला ।

हीरे-मोती की बात सुनकर जमींदार की आंखें चमक उठीं । हरखू ने जमींदार को बौनों की गुफा का पता बता दिया ।

जमींदार उसी समय बौनों की गुफा में जा पहुंचा । उसने वहां देखा— एक छोटी-सी पत्थर की काली गाय रखी थी । जमींदार ने तुरंत काली गाय उठा ली, तभी हवा में एक डंडा लहराया । वह जमींदार की पिटाई करने लगा । जमींदार ने चीखते-चिल्लाते हुए काली गाय को वापस रख दिया । लेकिन डंडे ने पिटाई बंद नहीं की ।

"जब तक हमारी भूरी गाय लाकर नहीं दोगे, यह डंडा तुम्हारी पिटाई करता रहेगा ।"— एक बौना जमींदार के सामने आकर बोला ।

"भूरी गाय मैंने नहीं, हरखू चरवाहे ने चुराई है ।"— जमींदार कराह रहा था ।

"मैं कुछ नहीं जानता । जब तक भूरी गाय वापस नहीं आएगी, तुम्हारी पिटाई ऐसे ही होती रहेगी ।"— कहकर बौना चला गया ।

जमींदार रोता-चिल्लाता गांव वापस पहुंचा । हरखू से भूरी गाय वापस करने के लिए गिड़गिड़ाने लगा । डंडा अब भी जमींदार की पिटाई कर रहा था ।

"हम लोग खाएंगे क्या ? अनाज तो तुम पहले ही छीन चुके हो ।"— एक गांव वाला बोला ।

"सारा अनाज गांव वालों में बांट दो । तुम अपने-अपने जानवर ले लो । लेकिन भूरी गाय वापस कर दो ।"— जमींदार गिड़गिड़ाया ।

हरखू जमींदार के साथ बौनों की गुफा में गया । उसने भूरी गाय बौनों को वापस कर दीं और क्षमा मांगी । बौनों ने क्षमा कर दिया । वे खुशी-खुशी गांव लौट गए । ●

परछाईं का डर

—सौरभ शर्मा 'निर्भय'

एक किसान था—धीरू । बड़ा ही गरीब और अत्यंत दुर्बल । अपनी बीमारी के कारण वह खेती नहीं कर पाता था । उसके खेतों में जो थोड़ा-बहुत अनाज होता भी था, उसे पड़ोसी किसान उसकी असमर्थता का फायदा उठा, चुपके से चुराकर ले जाते । धीरू को जब यह पता चलता, तब वह परेशान होता । हां, धीरू की पत्नी काबो उसकी बहुत देखभाल करती थी । धीरू के इलाज के लिए उसने घर की सारी सम्पत्ति बेच दी । यहां तक कि घर के बर्तन भी बिक गए । बहुत से लोगों से कर्ज ले चुकी थी । मगर तब भी धीरू की बीमारी में कोई सुधार न आया ।

बेचारी काबो रोज भगवान से मिन्नतें करती । एक दिन उसने बड़े दुखी मन से प्रार्थना की— 'हे प्रभु, अभी और कितने दिन तक आप हमारी यूं ही परीक्षा लेते रहेंगे । धीरू की बीमारी के उपचार के लिए अब मेरे पास बिल्कुल भी पैसा नहीं । घर में बेचने को भी अब कुछ शेष नहीं रहा ।' कहते-कहते काबो ने अपने आंचल से आंसू पोंछ लिए ।

दिन कब गुजर गया, पता भी न चला । रात हुई, काबो दुखी मन से अपने बिस्तर पर जाकर लेट गई । कुछ ही देर में उसे नींद आ गई ।

अगले दिन काबो उठी, तो धीरू के पास जाकर बोली—"अजी सुनो, रात मैंने एक बड़ा विचित्र सपना देखा है !"

"कैसा सपना ?"—धीरू ने धीमे स्वर में पूछा ।

—"मैंने देखा कि हमारे खेत में धन से भरा घड़ा दबा है !"

"मैं सपनों में विश्वास नहीं करता !"—धीरू ने फिर बड़े धीमे स्वर में कहा ।

—"तुम्हें विश्वास न हो, तो मत करो । लेकिन मेरा दिल तो कहता है कि हमारे खेत में अवश्य ही धन गड़ा है ।"

"अच्छा, तो ठीक है । जाओ, करो कोशिश !"—धीरू ने हारकर काबो को जाने की

इजाजत दे दी।

फिर क्या था ! काबो ने धीरू का फावड़ा उठाया और पहुंच गई खेत पर। उसने पूरे खेत पर एक सरसरी दृष्टि दौड़ाई, फिर सोचने लगी—'इतने बड़े खेत में यह पता करना बहुत कठिन है कि धन कहां गड़ा है। इसलिए पहले छोर से आखिरी छोर तक खुदाई की जाए, तभी पता चलेगा।'—यह सोचकर काबो ने खेत के पहले छोर से खुदाई शुरू कर दी।

आधे से ज्यादा खेत काबो ने खोद डाला, पर कहीं भी कुछ न मिला। गर्मी की भरी दुपहरी में काबो खेत खोदे जा रही थी। शाम तक उसने काफी हिस्सा खोद डाला था। सिर्फ एक छोर शेष रह गया था। अब वह निराश-सी होने लगी थी, पर तब भी उसका धीरज न टूटा। जब उसने आखिरी फावड़ा चलाया, तो किसी चीज से टकराने की आवाज हुई। काबो के कान खड़े हो गए। उसने एक बार फिर फावड़ा चलाया, तो वह फिर किसी चीज से टकराया। काबो को लगा कि वहां अवश्य कुछ है। उसने जल्दी-जल्दी उस जगह से मिट्टी हटाई। एक घड़े का मुंह दिखाई पड़ा। उसमें ढेरों सोने के सिक्के थे। काबो की आंखें फटी की फटी रह गईं।

काबो ने घड़े को निकाला। बगल में दबा, सबकी नजरों से बचती-बचती, तेज कदमों से घर की तरफ बढ़ चली।

घर आते ही दरवाजा बंद करके धीरू से बोली—"मैंने कहा था न कि हमारे खेत में धन गड़ा है, यह देखो।"—कहते हुए काबो ने घड़े का मुंह खोला। एक बार तो धीरू की आंखें भी चौंधिया गई। उसकी खुशी का पारावार न रहा।

देखते ही देखते उनके दिन फिरने लगे। काबो ने पड़ोसियों से लिया कर्ज लौटा दिया। धीरे-धीरे धीरू की तबीयत में भी सुधार होने लगा। कुशल वैद्यों द्वारा उसकी उचित चिकित्सा की जाती थी। गांव में रहने के लिए उसने इतना शानदार मकान बनवाया, जैसा दूर-दूर तक नहीं था। दोनों का लालच और घमंड दिनोंदिन बढ़ने लगा।

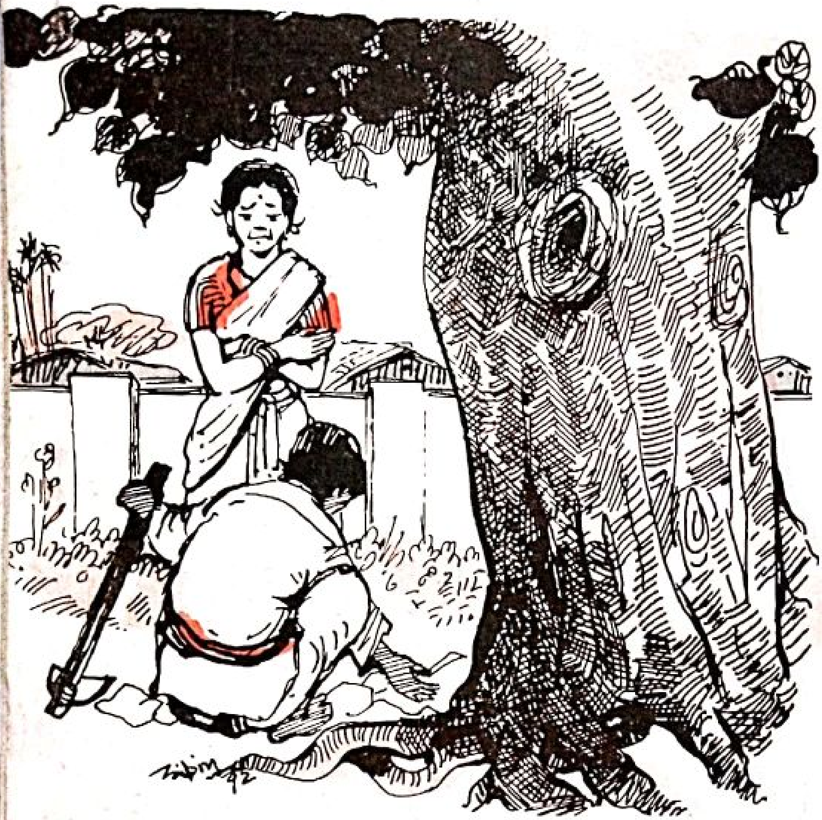
एक दिन एक पड़ोसी उनके पास कुछ पैसा उधार मांगने आया। "कुछ नहीं दूंगी। ऐसे भिखमंगे यहां बहुत आते हैं, निकल जा यहां से !"—काबो ने चिल्लाकर कहा। वह पड़ोसी अपना-सा मुंह लिए लौट गया। उसे इनसे यह उम्मीद नहीं थी। उसने सोचा था—'मैंने धीरू के बुरे दिनों में उसकी सहायता की थी, इसलिए वह भी मेरी सहायता करेगा।'

दिन यूं ही बीतते गए। एक दिन काबो धीरू से बोली—"देखो जी, अब हमें धन की कोई कमी नहीं। खेत का हम क्या करेंगे ? बेकार पड़ा है। इससे अच्छा तो हम उसे बेच ही दें।" धीरू को काबो की यह बात बहुत जंची। उसने पूरा खेत बेच डाला।

दुर्भाग्यवश एक बार गांव में भयंकर अकाल पड़ा। लोग भूखों मरने लगे। पर धीरू के यहां अकाल की छाया तक न थी। उसके यहां पहले से ही अनाज के भंडार भरे पड़े थे। यहां तक कि वह अपने जानवरों को भी खूब अनाज खिलाता था।

आखिर भूख से बेहाल सब पड़ोसियों ने निर्णय लिया कि वे मिलकर धीरू के पास जाएं। उससे कुछ अनाज उधार देकर सहायता करने की विनती करें। यह सोचकर सारे गांव वाले उसके मकान के नीचे इकट्ठे हो गए। अनाज उधार देने की विनती करने





लगे। मगर धीरू को उन पर दया न आई। उसने उन्हें दुत्कार दिया और घर के सारे दरवाजे बंद कर लिए। बेचारे गांव वाले वापस लौट गए।

उसी रात एक अजीब घटना घटी। काबो अपने पलंग पर चैन की नींद सो रही थी। एकाएक वह चौंककर उठ बैठी। धीरू को जगाते हुए बोली—"अजी, सुनते हो। मुझे बहुत डर लग रहा है।"

"क्या हुआ ?"—धीरू हड़बड़ाकर उठ बैठा।

"अभी-अभी मैंने सपना देखा है कि हमारा सारा धन चोर चुराकर ले गए हैं। इसलिए मेरी मानो, तो अब मत सोओ और उस धन की रखवाली करो।"

काबो की यह बात सुनकर धीरू रात भर नहीं सोया। धन की रखवाली करता रहा। पूरी रात बीत गई, मगर कोई चोर नहीं आया।

सबेरा हुआ, तो वे निश्चिंत हो गए। उन्होंने उस धन को चोरों से बचाने के लिए आंगन में पीपल के पेड़ के नीचे दबा दिया।

दिन बीता, रात हुई। काबो को आज फिर एक बड़ा भयंकर सपना दिखा। उसका पूरा शरीर पसीने से लथपथ हो गया। एकाएक वह चीख पड़ी। उसकी चीख सुनकर धीरू उठ बैठा। काबो बोली—"देखो जी, उस धन को पेड़ के नीचे से निकाल लो, वरना वह सब मिट्टी हो जाएगा।"

"काबो, यह तुम कैसी बातें कर रही हो ?"—धीरू ने विस्मय में पड़कर पूछा।

"मैंने अभी सपना देखा है कि हमारा धन मिट्टी हो गया।"—इतना सुनना ही था कि धीरू उठा और धन निकालने को आंगन की तरफ भागा। मगर दरवाजे पर ही उसके पैर ठिठक गए। वह आगे न बढ़ सका। दरवाजे पर किसी की परछाई पड़ रही थी। धीरू को डर के मारे पसीना आने लगा। काबो भी भीगी बिल्ली बनी, यह सब देख रही थी। तभी एक आवाज सुनाई दी— 'काबो, तुमने मुझे पहचाना ? मैं वहीं हूं जिससे तुमने एक बार पूजा करते समय कुछ विनती की थी। मुझे तुझ पर दया आ गई। लेकिन धन पाकर तू बावली हो गई। तुझमें लालच और घमंड घर कर गए। तूने उनको भी दुत्कार दिया जिन्होंने बुरे वक्त में तेरी सहायता की। धन के लालच में तूने अपना खेत तक बेच डाला। तू अब दया के योग्य नहीं रही, इसलिए आज मैं तुझसे यह धन, वैभव सब कुछ छीनने आया हूं।' —इतना कहकर वह अदृश्य व्यक्ति चुप हो गया।

काबो उसके पैरों में गिरकर गिड़गिड़ाने लगी—"नहीं, ऐसा मत करना, वरना हम कंगाल हो जाएंगे।" मगर जब काबो ने सिर उठाकर ऊपर देखा, तो वहां परछाई नहीं थी। धीरू भागकर गड़े धन के घड़े को निकाल लाया। खोलकर देखा, तो उसमें सिर्फ मिट्टी थी।

तभी बाहर से गांव वालों के चीखने-चिल्लाने की आवाज आने लगी—"धीरू, बाहर निकल। तेरा मकान जल रहा है।" धीरू और काबो ने जब यह सुना, तो हड़बड़ाकर बाहर निकले। देखा, मकान आग की लपटों में घिर गया है। देखते ही देखते उनका पूरा मकान, सारा अनाज और कीमती सामान जलकर राख हो गया।

वे फिर गरीब हो गए। ●





आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं। ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है। नीचे इसी चित्र की नकल है। नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया। उसने कुछ गलतियां कर दीं। आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए। क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं। सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है। १० गलतियां ढूंढ़ने वाला : **जीनियस;** ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **बुद्धिमान;** ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **औसत बुद्धि;** ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **वह स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए।**

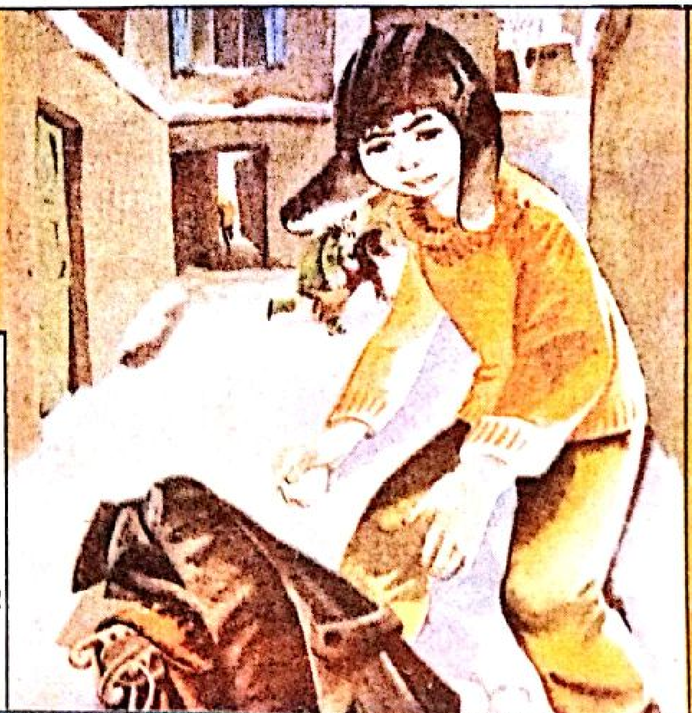
सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं। आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए। आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित समय—१५ मिनट।

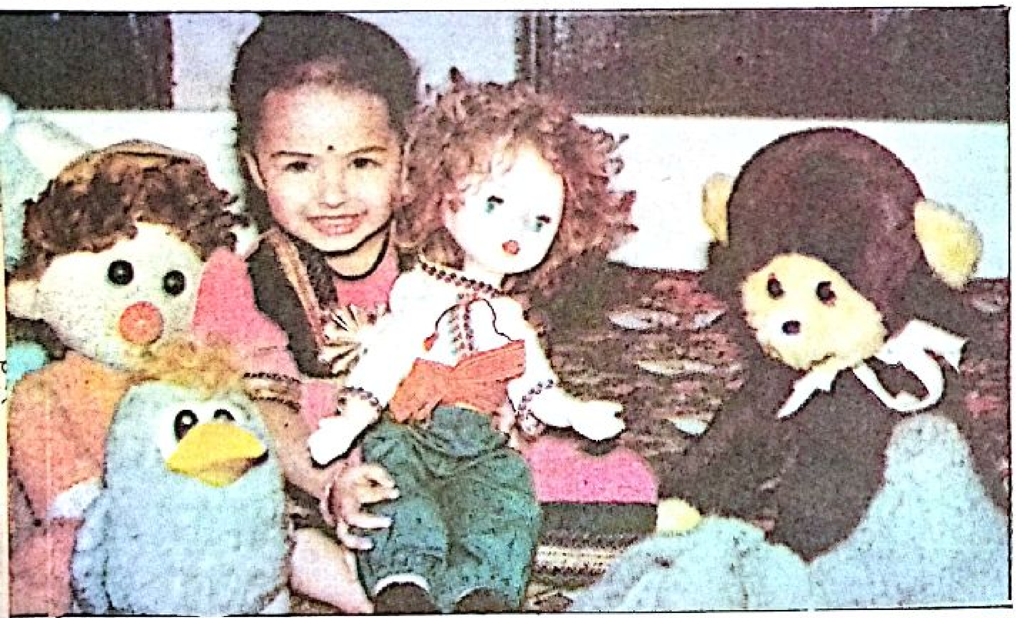
कहानी लिखो : १०६

सामने प्रकाशित चित्र को देखकर रोचक कहानी लिखिए। उसे १० सितम्बर '९२ तक नंदन, १८-२० **कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-१** के पते पर भेज दीजिए। चुनी हुई कहानी को पुरस्कार मिलेगा। उसे प्रकाशित भी किया जाएगा। **परिणाम-नवम्बर '९२**

चित्र पहेली : १०६

'मेरे शहर का बाजार' विषय पर चित्र बनाकर १० सितम्बर '९२ तक नंदन कार्यालय में भेज दीजिए। **चित्र के पीछे अपना नाम-पता तथा उम्र अवश्य लिखें। चित्र चटख रंगों से बनाकर भेजें।** चुना हुआ चित्र पुरस्कृत कर, प्रकाशित किया जाएगा **परिणाम-दिसम्बर '९२**

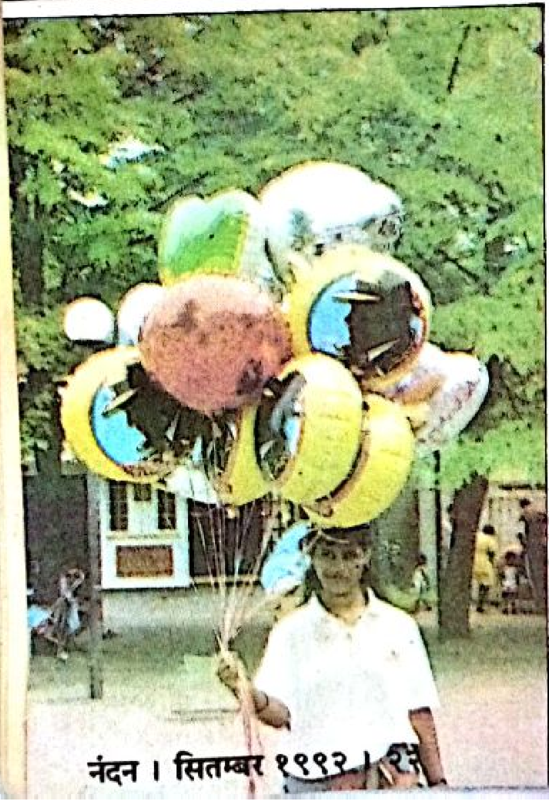




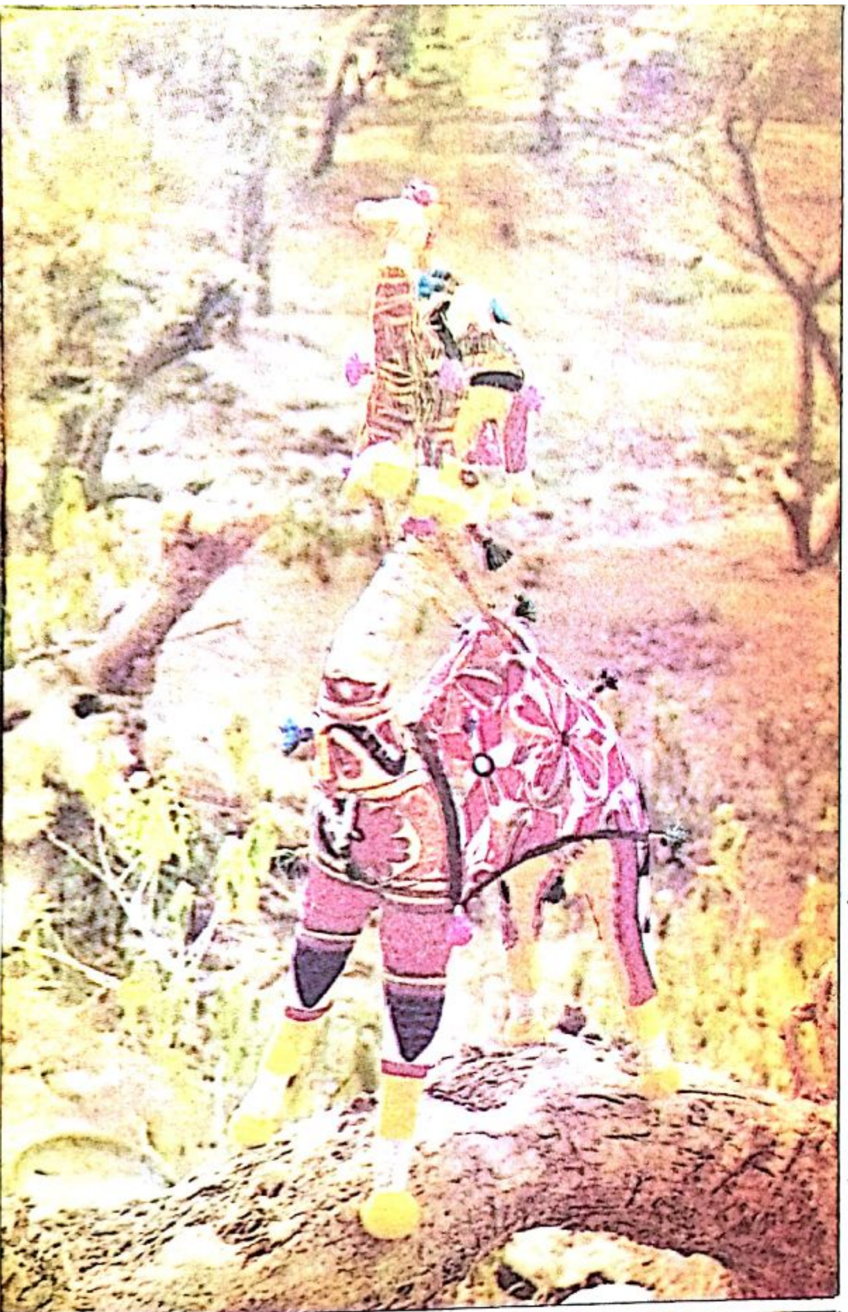


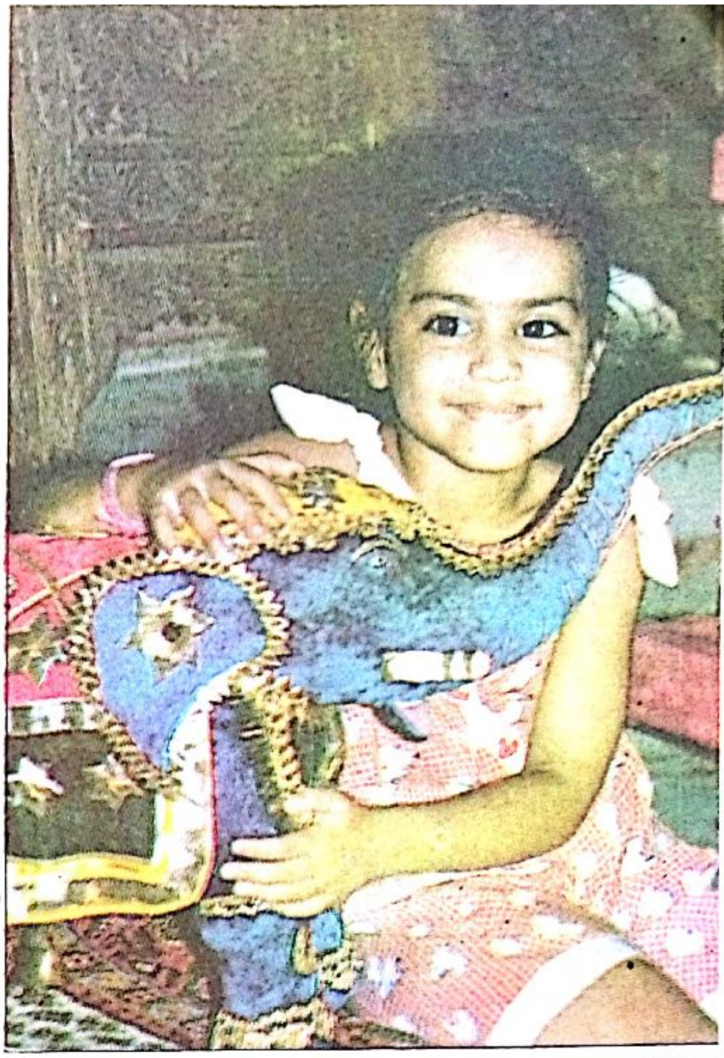
खेल-खिलौने

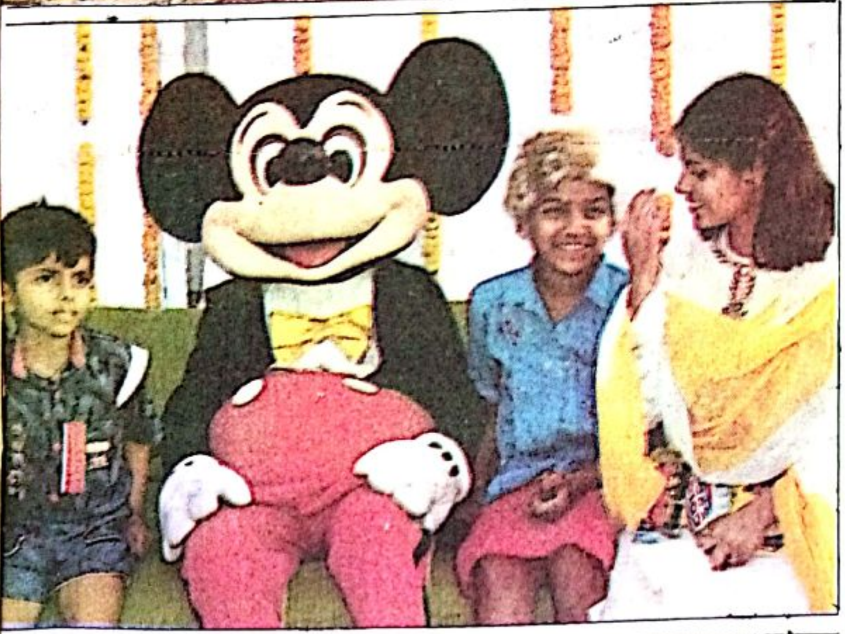
खेल-खिलौने
बड़े सलौने
पापा लाए—
कुछ कठपुतली
कुछ गुब्बारे
कुछ गुड़ियां
मटकियां उठाए।
नीला हाथी
चमचम करता ऊंट
उठाए अपने छौने।

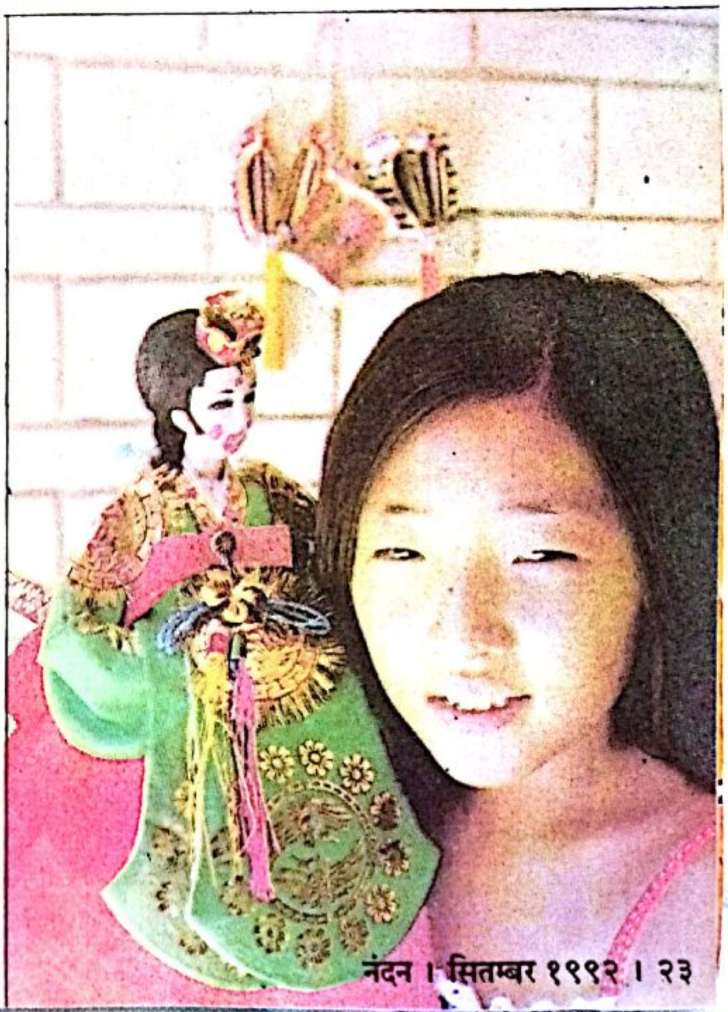












चित्र—आर. के. गोयल, एस. एम. दुटेडिया, राजेन्द्रकुमार वधवा, क्रेजी बॉय, श्याम सुंदर जोशी, ज्ञान दीक्षित



तुम मत जाना

—पी. एल. ट्रेवर्स

घर में सब परेशान थे। जार्ज बैंक्स, उनकी पत्नी और बच्चे। जब से मेरी पापिंस उन्हें छोड़कर चली गई थीं, तभी से यह हाल था। बैंक्स हमेशा नाराज रहते थे क्योंकि उनकी कोई चीज ठिकाने पर नहीं मिलती थी। श्रीमती बैंक्स घर संभालने में परेशान हो जाती थीं। और बच्चे जेन और माइकल इसलिए कि उन्हें हर समय डांट-फटकार मिलती थी।

मेरी पापिंस बच्चों की देखभाल करती थीं। वह एक दिन अचानक ही आ गई थीं। पापिंस ने सारा घर बहुत अच्छी तरह संभाल लिया था। किसी को कोई शिकायत नहीं थी। बच्चे तो उनसे बहुत ही खुश रहते थे। शायद मेरी पापिंस कोई जादू जानती थीं। उनके रहते हुए ऐसी विचित्र घटनाएं होती थीं कि सब हैरान रह जाते थे। पर एक दिन मेरी पापिंस बिना कुछ कहे, अचानक घर छोड़कर चली गईं। वह क्यों और कहां चली गईं, कोई नहीं जान पाया। बच्चे तो आपस में अक्सर कहा करते थे—'अगर मेरी पापिंस फिर आ जाएं, तो कितना अच्छा हो।'

सर्दियों के दिन थे। जेन और माइकल चुप बैठे थे, क्योंकि मां और पिता जी दोनों नाराज थे। माइकल ने जेन से कहा—"पिताजी न जाने शाम को कब आएंगे! अगर ज्यादा देर हो गई, तो हम पटाखे नहीं चला सकेंगे।"

दोनों को आतिशबाजी बहुत अच्छी लगती थी। पहले श्री बैंक्स ने उनसे वादा किया था कि वह जल्दी

आ जाएंगे । और बाग में जाकर पटाखे चलाएंगे, लेकिन अब तो सारा कार्यक्रम ही चौपट हो गया था ।

कुछ देर बाद दरवाजे की घंटी बजी । चिमनी साफ करने वाला आया था । श्रीमती बैंक्स उसे जाने के लिए कहने लगीं । पर वह गया नहीं, चुपचाप अपना काम करने लगा । बीच-बीच में मुसकराकर बच्चों की ओर देख लेता था । जेन और माइकल भी मुसकरा देते । उनकी उदासी कुछ कम हो गई थी ।

सफाई करने के बाद उसने बच्चों से कहा—"अभी मेरे पास कुछ समय है । अगर तुम्हारे पास राकेट हों, तो बाग में चलो । मुझे राकेट उड़ाना बहुत अच्छा लगता है ।" यह सुनकर बच्चे खुशी से तालियां बजाने लगे । दोनों ने झट पटाखों का डिब्बा लिया और बाग की तरफ भागे । श्रीमती बैंक्स मना करती रह गईं । पर बच्चे भला कहां सुनने वाले थे ! वे बाग में जाकर पटाखे चलाने लगे । चारों ओर रंगबिरंगी रोशनी बिखर गई । तभी जेन ने माइकल से कहा— "अगर आज मेरी पापिंस होती, तो कितना मजा आता ।"

उनके छोड़े हुए राकेट आकाश में काफी ऊंचाई तक जा रहे थे । एकाएक जेन को लगा, जैसे कोई चमकीला सितारा आकाश से नीचे उतर रहा हो । फिर एक आकृति दिखाई दी हवा में उड़ती हुई । वे हैरानी से आंखें फाड़े देखते रहे । फिर उन्हें थोड़ी दूर पर मेरी पापिंस खड़ी दिखाई दी ।–"मेरी पापिंस ! तुम वापस आ गईं ।" और बच्चे मेरी की तरफ दौड़े ।

"तुम आकाश से उतरी हो।"— जेन ने कहा ।

"नहीं तो।"-मेरी पापिंस ने कहा ।

"तुम हमें फिर छोड़कर तो नहीं चली जाओगी ?"– जेन ने जानना चाहा ।

"अभी मैं कुछ नहीं बता सकती ।"—मेरी पापिंस बोली—"अब आतिशबाजी का खेल बंद । घर चलो ।"

जेन और माइकल चुपचाप पापिंस के पीछे-पीछे घर की तरफ लौट चले । दोनों बहुत खुश थे । उनकी सबसे बड़ी इच्छा पूरी हो गई थी । मेरी पापिंस लौट आई थीं । वह बच्चों को कड़े अनुशासन में रखती थीं, पर फिर भी वे चुपचाप उनकी बात मान लेते थे। क्योंकि मेरी के रहते हुए उन्हें बहुत मजेदार घटनाएं देखने को मिलती थीं ।

जेन ने धीरे-से कहा—"मुझे पक्का विश्वास है कि मेरी आकाश से उतरी हैं । मैंने अपनी आंखों से देखा था ।"

"क्या वह परी लोक में रहती हैं ?"—माइकल बोला ।

"शायद !"—जेन ने कहा और हंस दी । माइकल भी मुसकरा रहा था ।

श्रीमती बैंक्स ने मेरी पापिंस को देखा, तो खुशी से उछल पड़ीं । उन्हें लगा, अब घर की सारी उलझनें सुलझ जाएंगी । और सच ऐसा ही हुआ ।

बैंक्स परिवार में सब लोग फिर से खुश हो गए थे—क्योंकि मेरी पापिंस लौट आई थीं ।

कई दिन बीत गए थे । शाम के समय बच्चे पार्क में सैर के लिए जाना चाहते थे । मां से आइसक्रीम केलिए पैसे लेकर जेन और माइकल खुश-खुश चल दिए । उनके साथ थीं मेरी पापिंस ।

पार्क में पहरेदार आवाज लगाता घूम रहा था—"बच्चो, घास पर मत चलो ! छिलके कूड़ेदान में फेंको ।" घूमते हुए जेन और माइकल एक तरफ बनी झील के तट पर जा पहुंचे ।

वहां एक चबूतरे पर एक बालक की प्रतिमा बनी हुई थी । उसने अपने हाथ में एक बड़ी मछली पकड़ रखी थी । प्रतिमा सफेद संगमरमर की थी । पार्क में बहुत सारे बच्चे खेल-कूद रहे थे । एक तरफ बैंड बज



पामेला लिंडन ट्रेवर्स—१९०६ में आस्ट्रेलिया में जन्म । शुरू में नृत्य और अभिनय में रुचि । १९३४ में मेरी पापिंस श्रृंखला की पहली पुस्तक लिखी जो बच्चों में बहुत लोकप्रिय हुई । अनेक भाषाओं में अनुवाद हुए । कुछ अन्य पुस्तकें हैं,आई गो बाई सी, आइ गो बाइ लैंड, फ्रैंड मंकी आदि । यहां हम 'मेरी पापिंस ओपंस द डोर' की संक्षिप्त कथा प्रकाशित कर रहे हैं ।

—सं

रहा था । प्रतिमा के आगे रखी बैंच पर बैठा एक बूढ़ा आदमी किताब पढ़ रहा था ।

काफी देर हो गई । पर वह बूढ़ा आदमी सिर झुकाए किताब में खोया रहा। तभी चार के घंटे बजने की आवाज सुनाई दी । बूढ़े ने किताब बंद की और उठ खड़ा हुआ ।

एकाएक किसी ने कहा—"महाशय, कम से कम मुझे कहानी पूरी तो कर लेने देते ।"

बूढ़े ने हैरानी से घूमकर देखा । संगमरमर का लड़का बोल रहा था । वह अचरज से मुंह फाड़े देखता रह गया । फिर घबराए स्वर में बोला—"मैं न जाने कब से इस पार्क में आता हूं । आज तक तो तुम नहीं बोले थे ।"

"हां, अगर सामने मेरी पापिंस बैठी हों, तो कुछ भीहो सकता है ।"—संगमरमर के लड़के ने कहा—"आपके साथ-साथ मैं भी किताब पढ़ रहा था । अभी आपने किताब बंद कर दी और मेरी कहानी अधूरी ही रह गई ।"

जेन पास खड़ी आश्चर्य से दोनों की बात सुन रही थी । एकाएक उसने कहा—"मुझे बहुत-सी कहानियां याद हैं । चाहो, तो मैं सुना सकती हूं ।"

"क्या सचमुच जेन ! तब तो बड़ा मजा आएगा ।"—संगमरमर के लड़के ने कहा ।

"तो तुम्हीं पढ़ लो यह किताब !"—कहकर बूढ़े ने किताब प्रतिमा की ओर बढ़ा दी और जल्दी-जल्दी वहां से चला गया ।

संगमरमर के लड़के ने किताब खोल ली और उसे पढ़ने लगा ।

—"तुम्हारा नाम क्या है ?"

—"मेरा नाम नीलस है ।"

"लेकिन तुम तो एक प्रतिमा हो ।"—जेन बोली।

"हां, हूं, लेकिन मैं चल सकता हूं । उछल-कूद सकता हूं ।"—कहते हुए नीलस पत्थर के चबूतरे से कूद पड़ा ।

—"मैं बाग में तुम दोनों को अक्सर खेलते हुए देखता था । मेरा मन करता था कि मैं तुम्हारी तरह घास पर दौड़ूं—झील में तैरूं । आज मेरी यह इच्छा पूरी हो ही गई ।"

तभी मेरी पापिंस की आवाज गूंज उठी—"नीलस, तुम संगमरमर के बने हो । दूसरे बच्चों की तरह कैसे उछल-कूद मचा सकते हो ? जाओ, जाकर अपने स्थान पर खड़े हो जाओ ।"

जेन और माइकल को लगा, जैसे मेरी पापिंस नीलस को नहीं, उन्हें डांट रही हों ।

तभी नीलस ने गिड़गिड़ाते हुए कहा—"बस, आज मुझे बच्चों के साथ खेलने दो । मैं इन्हें अपनी कहानी सुनाना चाहता हूं ।"

जेन और माइकल ने देखा, मेरी पापिंस हंस पड़ीं और कहा—"नीलस, बस आज के दिन ही ऐसा होगा । फिर कभी नहीं, समझे ।"

"क्या तुम हमारी मेरी पापिंस को जानते हो नीलस?"—जेन ने पूछा ।

"हां, यह मेरे पिता की मित्र हैं ।"—नीलस ने बताया । फिर वह अपनी कहानी सुनाने लगा—"मेरे माता-पिता की मूर्तियां समुद्र के किनारे एक पहाड़ी पर बनी हुई हैं । वहीं मेरा छोटा भाई भी है ।"

—"तब तुम यहां कैसे चले आए उन्हें छोड़कर ?"

—"कुछ लोग मुझे वहां से ले आए । भला एक पत्थर की प्रतिमा क्या कर सकती है?" नीलस ने दुःखभरे स्वर में कहा । उसकी आंखों से आंसू बहने लगे । उसकी बात सुनकर जेन का मन दुखी हो उठा । वह सोच रही थी—'अगर कोई हमें अपने माता-पिता से अलग कर दे तो ?'

तभी एक आइसक्रीम वाला वहां आ गया । जेन और माइकल ने आइसक्रीम खरीदी और एक नीलस को दी । वह बोला—"मैंने इससे पहले कभी आइसक्रीम नहीं खाई । बहुत स्वादिष्ट है ।"

फिर मेरी पापिंस ने कहा—"बच्चो, अब घर चलने का समय हो गया है।"

नीलस ने कहानियों की किताब जेन को थमा दी। बोला—"क्या तुम यहां आकर मुझे कहानियां सुनाया करोगी ?"

"मैं अवश्य आऊंगी नीलस।"—जेन ने कहा। और फिर मेरी पापिंस के पीछे-पीछे घर की ओर चल दिए।

एक दिन मेरी पापिंस बच्चों को एक नाविक के घर ले गईं। वहां सब तरफ समुद्र की बड़ी-बड़ी तस्वीरें लगी हुई थीं। नाविक ने जेन को एक कौड़ी दी।

"अगर हम इस समय समुद्र तट पर पहुंच जाएं, तो कितना मजा आए।"

"बेवकूफ लड़की ! क्या किसी की प्रत्येक इच्छा पूरी हो सकती है।"—यह मेरी पापिंस की आवाज थी। लेकिन अगले ही पल जेन और माइकल को लहरों का शोर सुनाई दिया। उन्होंने पाया—वे समुद्र में तैर रहे हैं।

तभी एक मछली पास से तैरती हुई निकली "तमाशा देखो। तमाशा।" दोनों घूमकर देखने लगे—एक अष्टपाद ने जेन को पकड़ना चाहा। वह चीखकर पीछे हटी। उसी समय एक बड़ी मछली अष्टपाद की तरफ बढ़ी। उससे कहा—"जानते नहीं, ये दोनों बच्चे हमारे मेहमान हैं।"

जल्दी ही बहुत सारे जलचरों ने दोनों को घेर लिया। सब उनसे ऊपर का हाल जानना चाहते थे।

और तभी शोर सुनाई पड़ा—"मेरी पापिंस का स्वागत है।" बच्चों ने देखा, उनसे थोड़ी दूर पर मेरी पापिंस खड़ी हंस रही थीं। उन्हें देखकर जेन और माइकल का डर एकदम जाता रहा। दोनों झट मेरी के पास जा पहुंचे। तब तक सब तरफ संगीत की आवाज गूंजने लगी थी।

"क्या आज सोते ही रहोगे तुम लोग ?"—एकाएक जेन के कानों में मेरी पापिंस के शब्द पड़े। वह झट उठ खड़ी हुई और हैरानी से सब तरफ देखने लगी। अरे, वह समुद्र में नहीं, अपने कमरे में पलंग पर लेटी थी।

"हम वहां से कब वापस आ गए ?"—जेन ने माइकल की तरफ देखा।

"कहां गए थे तुम दोनों ! चलो बिस्तर छोड़ो।"—मेरी पापिंस ने कहा और मुसकरा दीं। जेन सोच रही थी—'समुद्र यात्रा का मेरा सपना पूरा हो ही गया।' वह मेरी पापिंस से कुछ पूछना चाहती थी, पर हिम्मत नहीं हो रही थी।

ऐसे ही हंसी-खुशी में जाने कितने दिन बीत गए। जेन और माइकल को एक के बाद एक नई विचित्र घटनाएं देखने को मिल रही थीं। जैसे मेंटलपीस पर रखी चीनी मिट्टी की बिल्ली। वह जीवित होकर भाग गई थी। और कुछ देर बाद अपनी जगह आ बैठी थी। जैसे कमरे में रखे छोटे-बड़े खिलौने,जो एक पूरी रात खेल दिखाते रहे थे।

अगली शाम जेन और माइकल मेरी पापिंस के साथ बाग में घूमने गए। आज मेरी उनसे बड़े प्यार से बात कर रही थीं, हंस रही थीं। दोनों बेहद खुश थे। एकाएक मेरी पापिंस ने जेन और माइकल के कंधों पर हाथ टिका दिए। कुछ देर मुसकराती हुई उन्हें देखती रहीं। फिर बोलीं—"अब मुझे जाना चाहिए। अच्छे बच्चे बनकर रहना। माता-पिता का कहना मानना।"

"लेकिन, तुम, आप . . . कहां जा रही हो ? हम भी चल रहे हैं। इतनी जल्दी क्यों ?"—जेन ने घबराए स्वर में कहा। लेकिन उसे अपनी बात का जवाब नहीं मिला। लगा, जैसे मेरी पापिंस जल्दी-जल्दी चली जा रही हों।

और फिर दोनों आकाश की ओर देखने लगे। लगा, जैसे एक चमकीला सितारा आकाश में ऊपर, और ऊपर चढ़ता जा रहा हो। फिर उन्हें मेरी पापिंस का चेहरा दिखाई दिया हंसता-मुसकराता हुआ।

"मेरी पापिंस, कब आओगी ?"—माइकल ने रुंधे गले से कहा।

"जल्दी आना, हमें भूलना मत। हम तुम्हारी प्रतीक्षा करेंगे।"—कहते-कहते जेन रोने लगी।

उन्हें उम्मीद थी कि मेरी पापिंस एक न एक दिन जरूर वापस आएंगी उनके पास।

प्रस्तुत : देवेन्द्रकुमार

ललुआ और हलुआ

मम्मी जी ने बनाए, हलुआ-पूड़ी आज,
आ धमके घर अचानक पंडित श्री गजराज।
पंडित श्री गजराज, सजाईं भोजन थाली,
तीन मिनट में, तीन थालियां कर दीं खाली।
मारी एक डकार, भयंकर सुर था ऐसा,
हार्न दे रहा हो, मोटर का ठेला जैसा।

मुन्ना मिमियाने लगा, पढ़ने को ना जाऊं,
मैं तो हलुआ खाऊंगा, और नहीं कुछ खाऊं।
और नहीं कुछ खाऊं, रो मत प्यारे ललुआ,
पूज्य गुरुजी खत्म कर गए सारा हलुआ।
तुझे अकेला हम हरगिज ना रोने देंगे,
चल चौके में, हम सब साथ-साथ रोएंगे।

—काका हाथरसी






शरारत

मां, मां, मुझे बचाओ
भैया मार रहा है,
देखो, मुझ पर गुस्सा
कैसे झाड़ रहा है!
सच कहती हूं भैया
मुझसे दूर रहो तुम,
कर दूंगी मैं कुट्टी
इतना समझ रखो तुम।

ओ मां, जल्दी आ तू
बस समझा ले इसको,
मुझको आया गुस्सा
तो धुन दूंगी इसको।
भैया अब भी सुन लो
वर्ना पछताओगे,
कोई खिलौना मेरा
तुम ना ले पाओगे।

छोटी हूं तो क्या है
यूं न रौब सहूंगी,
पहले कुछ दिलवाओ
तब ही बात करूंगी।
मां, मां अब मत आना
भैया मान गए हैं,
जो चाहा था मैंने
भैया जान गए हैं।

—दिविक रमेश

ही ही ही

बिना बात की ही-ही-ही
बिना बात के हू-हू-हू,
जब देखो हा-हा-ठिठ्ठी
करते हैं सोमू-शानू।
रोते हैं तो बस छिन भर
हंसते रहते हैं दिन भर,
बहुत चिढ़ाते दादा को
सिर के बचे बाल गिनकर।

जब दादी खाने आतीं
दांत नहीं अपने पातीं,
मिली भगत दोनों की हो
मम्मी उनको फुसलातीं।
जब दोनों सो जाते हैं
पूरा घर होता सूना,
अगल-बगल के कमरे भी
हो जाते दिल्ली-पूना।

पापा से बतियाते हैं,
चाचा संग मुसकाते हैं,
कमरा भी आंगन होता
जब दोनों जग जाते हैं।

— यश मालवीय

बातें

तरह तरह की होती बातें,
मीठी-खट्टी-तीखी बातें।
अच्छी हों, मुसकाते दादा,
अगर बुरी, धमकाते दादा।
बात हमें जब कहतीं मम्मी,
समझाकर ही रहतीं मम्मी—
'कभी न करना कच्ची बातें,
करना अच्छी-अच्छी बातें।
प्यार तुम्हें तब सभी करेंगे,
वर्ना तुमको नाम धरेंगे।'

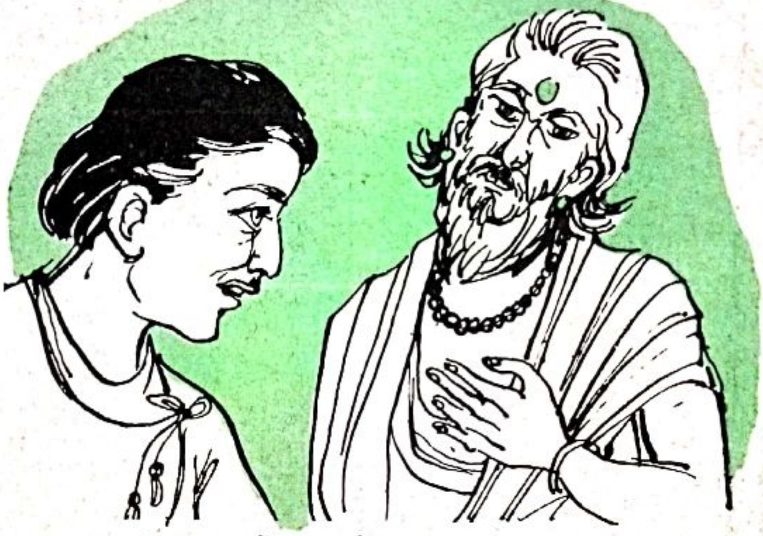
चुन्नू की चुटकीली बातें,
मुन्नू की रसभीनी बातें।
छोटू की शरमाती बातें,
चाचू की झुंझलाती बातें।
दादी की सहलाती बातें,
टुन्नू की फुसलाती बातें।
नन्नू की नकियाती बातें,
सबको खूब हंसाती बातें।

तेलू की तुतलाती बातें,
हल्कू की हकलाती बातें।
गोपू की गुपचुपिया बातें,
मंगू की मनबसिया बातें।
बातें हों रसगुल्लों वाली,
खूब हंसी हंसगुल्लों वाली।

—बाबूराम शर्मा विभाकर

सेवा का मेवा

—सुरेन्द्रकुमार नाहटा



किसी आश्रम में एक गुरु और शिष्य रहते थे। शिष्य हमेशा गुरु की सेवा में लगा रहता था। गुरु भी उसे खूब मानते थे।

एक दिन गुरु बीमार हो गए। वह बूढ़े हो चले थे। बीमारी उन्हें छोड़ती न थी। इसी बीच शिष्य ने गुरु से निवेदन किया—"मुझे कुछ ऐसी चीज दें जिससे मैं आपके बाद भी आप की ख्याति को कायम रख सकूं ? मैंने सदा आपकी सेवा की है। आप मुझे कोई चमत्कारी वस्तु दें ताकि मैं उससे जरूरत मंद लोगों का भला कर सकूं।"

गुरु ने शिष्य की प्रार्थना सुनी। उचित अवसर जान, उन्होंने कहा—"सामने एक झोला टंगा है। उसमें एक छोटा डंडा है। उसे निकालो।"

शिष्य तुरंत उठा। झोली में से डंडा निकाल कर गुरु के हाथ में थमा दिया।

गुरु ने डंडा हाथ में लेते हुए शिष्य से कहा—"देखो बेटा ! मेरे पास यही डंडा बचा है। तुम इसको बड़ी सावधानी से रखना।"

शिष्य ने डंडे को उचटती नजर से देखा। फिर कहा—"आप मुझे कोई चमत्कारी मंत्र देने का कष्ट करें ?"

—"तुम इस डंडे से किसी भी व्यक्ति के मन की बात जान सकते हो। उसकी परेशानी भी हल कर सकते हो। यह डंडा रख लो, काम आएगा।"

शिष्य ने डंडे को परखने के लिए इधर-उधर झांका। उसने गुरु के मन की बात जाननी चाही। उसने डंडे का नुकीला भाग हिचकते हुए गुरु के सम्मुख कर दिया। ऐसा करते ही उसे गुरु के मन की बातें मालूम होने लगीं। उसने देखा कि गुरु के मन में क्रोध और लोभ मौजूद हैं।

गुरु के मन में ये विकार देखकर उसका मन गुरु से उचट गया। उसने गुरु से कहा—"यह लो अपनी झोली और कमंडल ! मैं तो अपने घर चला।" गुरु शिष्य के मन में होने वाली उथल-पुथल को समझ गए।

गुरु ने शिष्य को समझाते हुए कहा—"अचानक तुमको यह क्या हो गया ? जिस व्यक्ति की तुमने आजीवन सेवा की है, उसी को बीमारी में अकेला इस तरह क्यों छोड़कर जा रहे हो ?"

—"अब मैं और आपके साथ नहीं रह सकता हूं। मैं आपको ईश्वर के समान मानता था। पर आज पता चला कि आपके भीतर भी कितने विकार भरे पड़े हैं।"

गुरु शिष्य से बोले—"बेटा, डंडे की नोक को अब अपनी तरफ करके स्वयं को भी परख लो।"

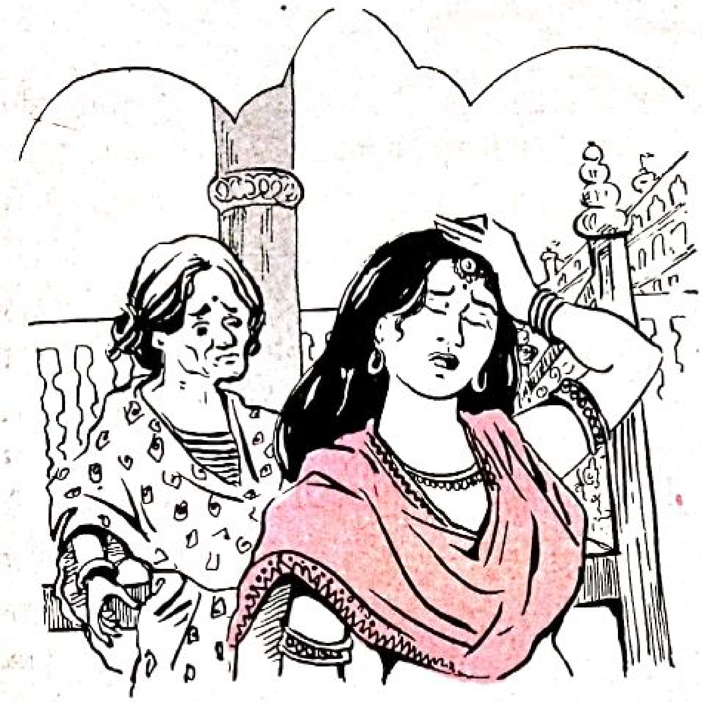
—"मैं अपने आप को क्या देखूं ? मैंने आपकी वर्षों सेवा की है। फिर भला मेरे पास दोष कैसे आ सकते हैं ?"

गुरु ने फिर कहा—"तुम एक बार स्वयं को देखो तो सही।"

गुरु के बार-बार कहने पर शिष्य ने डंडे के नुकीले भाग को अपनी तरफ किया। शिष्य ने देखा कि उसके भीतर तो बुरे विचारों की रेलपेल है। कहीं कोई अच्छा विचार है ही नहीं।"

यह सब देखकर शिष्य घबरा गया। सत्य पता चलते ही उसका सिर लज्जा से झुक गया। वह गुरु के चरणों में गिर पड़ा।

गुरु ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा—"अपने अवगुणों को नष्ट करना ही सबसे बड़ा चमत्कार है।" शिष्य सारी बात समझ गया था। उसके मन में गुरु के प्रति और श्रद्धा उत्पन्न हो गई थी। उसका चेहरा भी खिल उठा था। ●



पल-पल बदल

—अलका पाठक

कनकपुर के राजा का नाम था प्रतापभानु। वह बहुत दयालु, न्यायप्रिय और प्रजापालक राजा थे। उनकी रानी का नाम रूपमती था। अपने नाम के अनुरूप रूपमती बहुत ही सुंदर थी, लेकिन उसे अपनी सुंदरता का बड़ा घमंड था।

एक दिन रानी अपनी सखियों के साथ सरोवर में स्नान करके लौट रही थी। मार्ग में उसने एक बहुत ही कुरूप बुढ़िया को देखा। एकदम स्याह आबनूसी रंग, बड़े-बड़े दांत, टेढ़ा-मेढ़ा शरीर और पीठ पर कूबड़ देखकर रानी खिलखिलाकर हंस पड़ी। दासियों के साथ मिलकर उस बुढ़िया की बदसूरती का मजाक बनाने लगी।

कुछ दिनों बाद रानी ने एक पुत्री को जन्म दिया। उसे देखते ही रानी चीखकर बेहोश हो गई। कन्या बहुत ही कुरूप थी।

होश में आने पर रानी तेज-तेज स्वर में रोने लगी। उसने उस कन्या को जान से मारने का आदेश दे दिया। राजा ने रानी को बहुत समझाया, पर रानी ने राजा की एक न सुनी। विवश होकर राजा ने शिशु को एक दासी के हाथों में सौंप दिया। दासी बहुत दयालु थी। चाहकर भी वह राजा की आज्ञा का पालन नहीं कर सकी। रात ही रात में शिशु को कपड़े में लपेटकर, वह दूर जंगल में रहने वाले अपने गुरु, साधु बाबा की कुटिया में पहुंची। सारी बात सुनकर साधु ने उस कन्या को अपने पास रखने की हामी भर ली।

साधु ने कन्या का नाम 'सुकंठा' रखा। सुकंठा वहीं आश्रम में धीरे-धीरे बड़ी होने लगी। इधर उसके जन्म के दो वर्ष उपरांत रानी रूपमती पुनः गर्भवती हुई। इस बार भी सरोवर से लौटती रानी को वही कुरूप बुढ़िया दिखाई दी। घमंडी रानी इस बार भी अपने आप को नहीं रोक सकी। तरह-तरह से बुढ़िया का उपहास करने लगी। इस बार भी बुढ़िया बिना एक शब्द बोले चुपचाप वहां से चली गई।

दो दिन बाद रानी ने एक पुत्र को जन्म दिया। बच्चा इतना कुरूप और डरावना था कि उसे देखकर रानी बिलख-बिलखकर रोने लगी। पुनः उसी दासी को बुलाकर पुत्र को उसे सौंपकर मार डालने को कह दिया। दासी बच्चे को लेकर साधु की कुटिया में पहुंची और बच्चा भी उनके हाथों में सौंप दिया। साधु ने बच्चे को अपनी गोद में ले लिया, उसे 'सुकांत' नाम दिया।

इधर अपने महल में राजा बड़े परेशान थे। वह इस अनहोनी घटना का अर्थ नहीं समझ पा रहे थे। एक दिन जब राजा बड़े उदास होकर छत पर टहल रहे थे, रानी की एक दासी ने सरोवर की सारी घटना और उस कुरूप बुढ़िया के बारे में उन्हें बता दिया।

राजा ने तुरंत अपने सैनिकों को उस बुढ़िया को ढूंढ़कर, अपने सामने लाने का आदेश दे दिया। सैनिकों ने सारा राज्य छान मारा। एक-एक घर में घुसकर तलाशी ली, लेकिन बुढ़िया का कहीं पता नहीं चला।

दिन बीतते चले गए। साधु की कुटी में दोनों बच्चे बड़े होने लगे। सुकंठा का गला बहुत मधुर था, इसलिए बाबा उसको गायन की शिक्षा देने लगे। सुकांत को वह बांसुरी बजाना सिखाने लगे।

इधर रानी के पुनः गर्भवती होने पर राजा सावधान हो गए। रानी को अपने पास बुलाकर उन्होंने उससे कहा—"रानी, अगर इस बार तुम्हें वह बुढ़िया कहीं

भी मिले, तो भूलकर भी उसका मजाक न उड़ाना। वह अवश्य ही कोई देवी है। उसे हाथ जोड़कर प्रणाम करना और आदर सहित महल में ले आना।" रानी ने राजा की बात सुनकर हामी भर दी।

एक दिन जब रानी सखियों के साथ घूमकर लौट रही थी, तो मार्ग में वही बदसूरत बुढ़िया पुनः दिखाई पड़ गई। अकस्मात ही रानी को राजा की चेतावनी याद हो आई और उसने उसका मजाक उड़ाने से अपने को रोक लिया। पर उसे हाथ जोड़कर प्रणाम नहीं किया।

कुछ ही दिनों के उपरांत रानी ने पुनः एक कन्या को जन्म दिया। सब यह देखकर चकित रह गए कि लड़की बहुत सुंदर थी। राजा-रानी तो खुशी से पागल हो उठे। राजकुमारी का नाम 'कनक' रख दिया।

धीरे-धीरे कनक राजमहल में बड़ी होने लगी। जब वह शिक्षा पाने योग्य हुई, तो राजा ने उसे सभी विद्याओं में पारंगत करने का निश्चय किया। इन सब गुणों के होते हुए भी राजकुमारी में एक बहुत बड़ा अवगुण था। अपनी मां की तरह वह भी बड़ी घमंडी और जिद्दी थी।

धीरे-धीरे समय व्यतीत होता चला गया। राजकुमारी कनक सोलह वर्ष की हो गई। उसके गले का माधुर्य सबको चकित करता। चारों तरफ उसके गायन की धूम मचने लगी।

इधर वीरगढ़ के राजा सुषेण ने भी कनक के रूप-माधुर्य की बड़ी प्रशंसा सुन रखी थी। वह स्वयं संगीत का बहुत बड़ा ज्ञाता था। वह मन ही मन राजकुमारी कनक से विवाह करने का निर्णय ले चुका था, पर वह सोचता था कि क्या पूरे संसार में राजकुमारी कनक से अधिक संगीत का ज्ञाता और कोई नहीं है? जब वह स्वयं किसी निर्णय पर नहीं पहुंच पाया, तो परेशान होकर अपनी दुविधा उसने राजगुरु के सामने रखी। सारी बातें सुनकर राजगुरु ने बड़े गम्भीर स्वर में कहा—"राजन, बिना प्रतियोगिता संपन्न कराए किसी को भी सर्वश्रेष्ठ कहना उचित नहीं है। आप एक प्रतियोगिता आयोजित कीजिए। यह निर्णय तो तभी हो सकेगा कि सर्वश्रेष्ठ कौन हैं? फिर जो सर्वश्रेष्ठ हो, विवाह उसी से करिए।" राजगुरु की बात राजा सुषेण को ठीक लगी। उसने एक संगीत प्रतियोगिता के आयोजन की घोषणा पूरे राज्य में करवा दी।

जब राजकुमारी कनक ने यह घोषणा सुनी, तो वह प्रसन्नता से फूली नहीं समाई। इधर जंगल में सुकांत और सुकंठा ने भी यह घोषणा सुनी, पर वे बेचारे नगर में जाने का साहस ही नहीं जुटा पाते थे। एक दिन जब दोनों जंगल में से पूजा के लिए फूल चुनकर लौटे, तो साधु महाराज ने उन्हें अपने पास बुलाया। फिर लाड़ से उनकी पीठ पर हाथ फेरते हुए बोले—"मेरी आज्ञा है कि तुम दोनों वीरगढ़ जाओ। सुकंठा, तुम वहां आयोजित प्रतियोगिता में भाग लो।"

नियत समय पर बहुत ही युवतियां भाग लेने के लिए वीरगढ़ के राजमहल में आईं। श्रोताओं के मध्य बैठे सुकांत और सुकंठा आश्चर्य से आखें फाड़-फाड़कर महल की भव्यता को निहार रहे थे। इतना सुंदर महल उन्होंने कभी स्वप्न में भी नहीं देखा था।

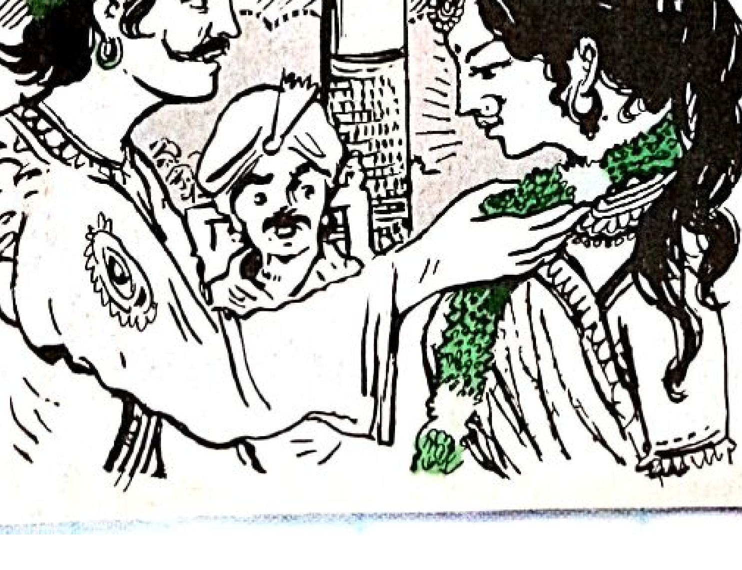
विशिष्ट प्रतियोगियों के लिए एक अलग स्थान बना हुआ था, जहां देश-विदेश की अन्य राजकुमारियों के अतिरिक्त राजकुमारी कनक भी घमंड से तनी राजसिंहासन पर बैठी थी।

निश्चित समय पर राजा सुषेण अपने सभासदों के



साथ सभा में पधारे। प्रतियोगिता प्रारम्भ करने की घोषणा की। सर्वप्रथम राजकुमारी कनक ही अपना गायन प्रस्तुत करने के लिए सामने आई। जैसे ही उसने गाना प्रारम्भ किया—सब ठगे-से बैठे रह गए। गर्व से तनी अभिवादन करती हुई राजकुमारी कनक अपने स्थान पर आ बैठी। उसके गायन को चुनौती देने की हिम्मत किसी प्रतियोगी में नहीं थी। बार-बार नाम पुकारे जाने पर भी जब कोई युवती नहीं उठी, तो राजा सुषेण कनक को माला पहनाने आगे बढ़े। तभी प्रतियोगियों की भीड़ में से उठकर एक अत्यंत बदसूरत युवती धीरे-धीरे सभा के बीचों-बीच जाने लगी। उसे देखकर राजा सुषेण असमंजस में पड़ गए। सुकंठा की विचित्र शक्ल-सूरत के बावजूद नियमानुसार राजा को उसे गायन की अनुमति देनी पड़ी। भीड़ में से जैसे ही सुकांत ने बांसुरी बजाई, सुकंठा ने गाना प्रारम्भ कर दिया। उसके गाने को सुनकर सभी व्यक्ति ठगे-से रह गए। राजा सुषेण और स्वयं राजकुमारी कनक सुकंठा का गायन सुनकर अपने होश खो बैठे।

होश में आते ही राजा सुषेण दुविधा में पड़ गए। निःसंदेह सुकंठा सर्वश्रेष्ठ गायिका थी, पर ऐसी बदसूरत को वह अपनी रानी कैसे बना सकते थे? अगर नियम के विरुद्ध जाते, तो भी उनकी जग हंसाई होती। परेशान होकर राजा ने अपने राजगुरु की ओर



देखा। राजगुरु राजा की परेशानी समझ गए। उन्होंने सुषेण को सुकंठा के गले में विवाह की माला पहनाने का संकेत कर दिया। राजगुरु की आज्ञा शिरोधार्य कर मरे-मरे कदमों से सुकंठा की ओर बढ़कर उन्होंने उसके गले में जयमाला डाल दी। जैसे ही जयमाला ने सुकंठा की देह को स्पर्श किया, चमत्कार हो गया। बदसूरत, अजीबो-गरीब शरीर वाली सुकंठा के स्थान पर एक रूपवान कन्या खड़ी थी। यह चमत्कार देखकर सब विस्मय से भर उठे। राजा सुषेण की खुशी का तो ठिकाना ही नहीं था।

दूर भीड़ में खड़े हुए सुकांत ने जब अपनी बहन के इस बदले रूप को देखा, तो मारे खुशी के वह पागल-सा हो गया। भीड़ को चीरते हुए वह सीधा सुकंठा के पास पहुंचकर उससे लिपट गया। पर यह क्या? एक चमत्कार और हुआ। जैसे ही सुकंठा के गले में पड़ी जयमाला ने सुकांत को स्पर्श किया, वह भी रूपवान नवयुवक में बदल गया। सभी यह चमत्कार देखकर आश्चर्य चकित थे, पर किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि यह सब कैसे हुआ। तभी एक अत्यंत रूपवती स्त्री वहां प्रकट हुई। यह वही बदसूरत बुढ़िया थी। उसने सारी बात बताकर सुकंठा का हाथ राजा सुषेण के हाथ में सौंप दिया और बोली—"तुम दोनों बच्चों को अपनी माता के अवगुणों का कठोर प्रायश्चित्त करना पड़ा है। आज तुम उस शाप से मुक्त हुए। अब अपने राजपाट का सुख भोगते हुए तुम लोग आनंद से अपना जीवन यापन करो। मैं वनदेवी हूं। जो मनुष्य घमंड करता है, उसे उसका फल जरूर मिलता है।" कहकर वह अंतर्धान हो गई।

राजा सुषेण के समीप बैठे राजा प्रतापभानु को जब यह पता लगा कि यह सुंदर युवक और युवती उन्हीं के पुत्र और पुत्री हैं, तो प्रसन्नता से उनकी आंखों में से आंसू बहने लगे। उन्होंने दोनों को अपने सीने से लगा लिया। कनक भी दौड़कर अपने बहन और भाई से लिपट गई। निःसंदेह रूप और गायन दोनों में ही अब सुकंठा, कनक से कहीं अधिक श्रेष्ठ थी। इससे कनक का घमंड भी चकनाचूर हो गया। ●


खो गया पवन
तालगढ़ में हर साल पशुओं का मेला लगता था । एक बार मेले में बेहद स्वस्थ दुधारू गाय बिकने आई । तालगढ़ का साहूकार उसकी मुंहमांगी कीमत दे ही रहा था कि ...
ठहरो ! मैं तालगढ़ का जमींदार ... गाय पर पहले मेरा हक ... मैं खरीदूंगा ।
हवेली में
देखो गाय । हजारों में एक ... वक्त पर पहुंच गया वरना साहूकार ले जाता । मेरी नीची होती...
उसका सौदा बिगाड़कर आपने ठीक नहीं किया । बेकार की दुश्मनी ...
संयोग से उसी रात जमींदार के खलिहान में आग लग गई । पूरा गांव सांत्वना देने आया, किंतु साहूकार न आया । बस, जमींदार के मुंहलगे साथियों ने ...
यह आग जरूर साहूकार ने लगवाई ... बदला ले लिया ।
मैं भी कायर नहीं । ऐसा बदला लूंगा कि ...
साहूकार का बेटा पवन और जमींदार का बेटा धीरज गहरे दोस्त थे । अगले दिन दोनों खेल कर लौट रहे थे कि रास्ते में ...
ठहरो !
धीरज, हट जाओ । पवन को हमें सौंप दो ।
मेरा नाम कैसे जानते हो ? कौन हो तुम ? क्यों ले जाना चाहते हो पवन को ?


धीरज को एक लठैत ने पेड़ से बांध दिया । पवन के मुंह पर कपड़ा बांध वे ले गए । किसी तरह से छूट, धीरज घर पहुंचा । जमींदार को सारी बात बताई, तो ...
खबरदार, जो उसका नाम लिया । उसके बाप ने ही आग लगवाई—पातल बाबा ने साफ बता दिया ।
!?
शाबास ।
पातल बाबा ? कौन है यह ? कहां रहता है ?
नहीं मिलूंगा पापा !
अगले दिन ही धीरज ने पातल बाबा का पता ...
पातल बाबा सिद्ध हैं । सब जानते हैं । केदारनाथ से आए हैं । पुराने खंडहरों में टिके हैं !
उनसे ही मैं पवन के बारे में ...
धीरज तुरंत पुराने खंडहरों की ओर चल दिया । वहां पुकारने लगा—'बाबा ! बाबा !' तभी ...
कौन ? धी ...तुम ! भाग जाओ !
अरे, यह तो वही लगता है, जो पवन को ले गया था । मगर यह यहां ...
अचानक धीरज ने दूर से कुछ लोगों को उधर आता देखा । वह तुरंत ओट में हो गया । आदमी पास आए, तो ...
पातल बाबा को जल्दी बुलाओ !
पवन के पिता ... साहूकार जी !


देखते-देखते खंडहरों से ...
महाराज, मेरे बेटे पवन का अता-पता ...
बेटा मिलेगा, मगर पूजा-पाठ में पचास हजार रुपए ...
पचास हजार !!
साहूकार पातल बाबा की बात मानकर चला गया, तो ...
इसे कहते हैं कमाई । जमींदार से भी, साहूकार से भी ...
इससे पैसे मिले नहीं कि बिस्तर गोल । पवन को तहखाने से....
दोनों को लड़ाकर मूर्ख बनाने की योजना तो मेरी थी ।
मगर खलिहान में आग तो मैंने ..
पवन ! तहखाना !! खलिहान ! आग !!
वे खंडहरों में चले गए, तो धीरज सीधा घर आया । जेब खर्च से बचाए पूरे एक सौ तीस रुपए ले वह ...
यह रखो काका ! और भी दूंगा । मगर जैसा कहा है, वैसा करना ...
हां छोटे सरकार, पातल और उसके चेलों को ले सीधा ...
काका लाठी टेकते पहुंचे खंडहरों में । पातल बाबा उन्हें बाहर ही मिल गए ...
महाराज, साहूकार ने आप सबको भोजन पर बुलाया है । वहीं पचास हजार भी ...
वाह, नेकी और पूछ-पूछ । अभी सब चलते हैं । तुम ठहरो !


पातल बाबा जैसे ही चेलों के साथ दूर गए, पेड़ों के पीछे छिपा धीरज खंडहरों में जा घुसा। पुकारने लगा ...
पवन ! पवन !! कहां हो तुम ?
यहां ! तहखाने में !
धीरज ने तुरंत फर्श पर जड़ा ढक्कन उठा दिया। तहखाने में बंद पवन ...
उफ ! मैं समझा था, तुम नहीं मिलोगे ! वह तो मैंने बदमाशों की बातें सुन ली थीं ...
मेरी तो हड्डी-हड्डी चरमरा गई ... तुम न आते, तो ...
धीरज और पवन वहां से सीधे थाने पहुंचे। थानेदार को सारी बातें बताईं ...
हमारे खलिहान में आग उन्होंने लगाई। फिर पवन को भी ... इस समय साहूकार की हवेली पर ...
सब बदमाश हैं। वेश बदलकर ...
हमें तुरंत छापा मारना है।
साहूकार के घर सारे बहरूपिए खा-पी रहे थे। सब पकड़े गए। तालगढ़ में शोर मच गया। सच बात पता चली, तो ...
ये हम दोनों को ही लूट रहे थे।...
दो की लड़ाई में फायदा तो तीसरा ही उठाता है।
यह सब कुछ हुआ, धीरज के साहस और चतुराई से ...

हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन

-बच्चों का अखबार-

नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क
एक वर्ष : ५० रुपए
दो वर्ष : ९५ रुपए

वर्ष २८ : अंक : ११ : सितम्बर '९२ भाद्रपद—आश्विन, शक सं. १९१४

'भारत छोड़ो' की स्वर्ण जयंती

गांधी जी ने कहा— करो या मरो

पचास साल पहले अंग्रेजी राज के खिलाफ गांधी जी ने नया नारा दिया था— 'अंग्रेजो भारत छोड़ो ।' उन्होंने देशवासियों को ललकारा था— 'करो या मरो ।' उसके जवाब में लाखों लोग उठ खड़े हुए— बच्चे-बूढ़े, औरत-मर्द देश को आजाद कराने निकल पड़े ।

गांधी जी ने कह दिया था— 'मैंने बहुत प्रतीक्षा की । मैं अब और नहीं रुक सकता ।' हमारी आजादी की लड़ाई के इतिहास में 'भारत छोड़ो आंदोलन' सुनहरे पृष्ठों में लिखा जाएगा । देश के बड़े-बड़े नेता ९-१० अगस्त '४२ को गिरफ़ार कर लिए गए ।

सरदार वल्लभभाई पटेल ने देशवासियों से कहा था—'किसी कार्यक्रम की घोषणा की प्रतीक्षा न करो । अपना कार्यक्रम खुद ईजाद करो ।'

अंग्रेजों का दमन-चक्र पूरी तेजी से चल पड़ा। न जाने कितनी जगहों पर गोलियां चलीं । बम्बई से जिस आंदोलन की शुरुआत हुई, देखते ही देखते वह पूरे देश में फैल गया । ग्यारह अगस्त को पटना सचिवालय पर झंडा फहराने जाने वाले छात्रों की भीड़ पर गोली चलाई गई । उसमें सात किशोर मारे गए । जगह-जगह थानों पर, डाकघरों पर कांग्रेस का झंडा फहराने को टोलियां निकलने लगीं । लाठियों, गोलियों की परवाह न करते हुए देशभक्त हंसते-हंसते बलिदान देने लगे ।

उन बलिदानों को याद करने के लिए सारा देश 'भारत छोड़ो' की स्वर्ण जयंती मना रहा है । आज हम आजाद हैं, तो इसलिए कि उन देशभक्तों ने अपना सब कुछ दांव पर लगा दिया था ।

अनचाहा मेहमान

नई दिल्ली । यहां एक फार्म हाउस में मुर्गियों के दड़बे में अजगर घुस आया । अजगर को देखकर मुर्गियां शोर मचाने लगीं । लोगों ने दौड़कर अजगर को पकड़ लिया । उसे पेटी में बंद करके चिड़ियाघर में भेज दिया गया । अजगर १० फीट लंबा है और वजन है तीस किलोग्राम ।

प्रेमचंद पुरस्कार

प्रसिद्ध लेखक डा. भगवतीशरण मिश्र को प्रेमचंद पुरस्कार दिया गया है । उनकी कृति 'पुरुषोत्तम' पर उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने यह पुरस्कार दिया है ।

गिलास मीनार

मानचेस्टर । यहां इंजीनियरिंग कालेज के छात्रों ने एक अनोखा खेल दिखाया । उन्होंने १६२१५ शीशे के गिलास लेकर एक शीशे की मीनार बनाई । उसकी ऊंचाई थी २६ फीट ।

लंबी उम्र का गांव

डोंग्जी । तिब्बत का छोटा-सा गांव, लेकिन दूर-दूर तक मशहूर । इसे 'लंबी उम्र वाला गांव' कहकर पुकारा जाता है । एक गांव वाले की उम्र १४० से ऊपर है । १०० से अधिक ऐसे हैं, जो बहुत पहले १०० बरस के हो चुके हैं ।

कहानी चोर

कोपनहेगन । यहां बच्चों के अमर साहित्यकार हेंस क्रिश्चियन एंडरसन का एक संग्रहालय है । उसमें एंडरसन द्वारा लिखी गई कथाओं की पांडुलिपियां भी हैं । कुछ चोर संग्रहालय में रखी कहानियां चुरा ले गए । उनमें 'जलपरी', 'राजा के नए कपड़े' जैसी प्रसिद्ध कथाएं हैं ।

जापान में राम

टोक्यो । जापान में रामायण पर एक कार्टून फिल्म बनाई गई है । इसमें आठ वर्ष लगे और कई करोड़ रुपए खर्च हुए । इसे जापानी के साथ-साथ हिंदी-अंग्रेजी में भी बनाया गया है ।

मलयालम क्यों बोला

कोझिकोड । केरल में एक अंग्रेजी स्कूल है । सात साल का एक बच्चा स्कूल में अंग्रेजी के स्थान पर मलयालम में बोलने लगा । बस उसे प्रधानाचार्य के पास ले जाया गया । मातृभाषा में बोलने की सजा दी गई और बच्चे का मुंडन करा दिया गया ।

पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें ।

मैं यह दावे के साथ कहता हूं कि हिंदी के बिना हमारा काम नहीं चल सकता।

— बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय

बिछुड़ने की घड़ी आई

बारह देशों के बच्चों का शिविर नार्वे में हुआ। लखनऊ सिटी मांटेसोरी स्कूल के चार छात्र उसमें भाग लेकर लौटे। गौरव भट्ट, नेहा भारद्वाज, प्रिया कोचिटी और अतिन अग्रवाल के अनुभव बड़े दिलचस्प थे। उन्होंने कहा— "जब शिविर में कदम रखे, तो अन्य बच्चों के नाम भी मालूम न थे। पर विदा की घड़ी आई, तो सबकी आंखों में आंसू थे। वे उस रात सो न सके।" बच्चों ने बताया— "हम अंग्रेजी समझते हैं किंतु दूसरे देशों के बच्चों को अपनी-अपनी जुबान में बोलते देखा-सुना, तो हमने भी हिंदी में सारी बातचीत की।"

नार्वे में बच्चों को होमवर्क नहीं दिया जाता। बच्चों को बस्ता लादकर घर नहीं लौटना पड़ता। जो कुछ पढ़ाई-लिखाई होती है, स्कूल में ही। किताबें-कापियां वहीं अल्मारी में रख देते हैं। इसी तरह की अनेक मजेदार बातें बच्चों ने पत्रकारों को बताईं। वहां की सड़कों पर सफाई देखकर भी वे हैरान रह गए। नन्हे नागरिकों के ये अनुभव हम सबसे कुछ कहते हैं।

ग्राहम बेल का घर

टेलीफोन के आविष्कारक अलेक्जेंडर ग्राहम बेल का ऐतिहासिक घर एक अमेरिकी टेलीफोन कम्पनी ने बेचने की घोषणा की है। चार शयन कक्ष वाले इस प्राचीन मकान के लिए २७ लाख ५० हजार डालर की राशि मांगी गई है। श्री बेल ने यह मकान अपने पिता अलेक्जेंडर मेलबिल्ले बेल के लिए खरीदा था। स्वयं उन्होंने इसमें एक छोटी अनुसंधानशाला कायम की। वह स्वयं इस मकान में बहुत कम रहते थे।

सबसे ऊपर दिल्ली

मद्रास। देश के महानगरों में रहने वाले लोग प्रतिदिन ५० डेसीबेल की निर्धारित सीमा से डेढ़ गुना अधिक शोर सुन रहे हैं। सड़क यातायात शिक्षा संस्थान का कहना है कि दिल्ली में प्रतिदिन ८३ डेसीबेल और रात में ७७ डेसीबेल शोर होता है।

आम से कमाई

विजयवाड़ा। आंध्र प्रदेश सरकार आम के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए एक निर्यात संवर्धन परिषद का गठन कर रही है। आम के निर्यात से प्रतिवर्ष ५०० करोड़ रुपए के बराबर विदेशी मुद्रा की आय हो सकती है। देश का ६० प्रतिशत आम यहां पैदा होता है।

भारत दसवां

वाशिंगटन। अमरीकी कांग्रेसी अनुसंधान सेवा की रिपोर्ट के अनुसार भारत ने पिछले साल ८० करोड़ डालर मूल्य के बराबर हथियारों का आयात किया। विश्व में हथियार आयात करने वाले देशों में भारत का दसवां स्थान है।

मदर टेरेसा को पुरस्कार

पेरिस। इस वर्ष यूनेस्को का शांति-शिक्षा पुरस्कार मदर टेरेसा को दिया गया है।

बिड़ला पुरस्कार

नई दिल्ली। खेलों को बढ़ावा देने के लिए के. के. बिड़ला फाउंडेशन ने ५०-५० हजार रुपए के पुरस्कार देने की घोषणा की है। फाउंडेशन के निदेशक बी. एन. टंडन के अनुसार यह पुरस्कार खिलाड़ियों, प्रशिक्षकों और खेल पत्रकारों के लिए हैं। वर्ष १९९१ के लिए दिए जाने वाले पुरस्कार के लिए ३० सितम्बर तक नाम सुझाए जा सकते हैं।

बूढ़ा मगरमच्छ

डार्विन। यहां एक बूढ़ा मगरमच्छ पकड़ा गया है। उसके सारे दांत टूट चुके हैं। वन्य प्राणी सुरक्षा अधिकारी मगरमच्छ को सुरक्षित स्थान पर ले गए हैं। उनका कहना है कि मगरमच्छ अपना भोजन नहीं जुटा पाता था और जल्दी ही मर जाता।

पहाड़ी सड़क पर

बंगलौर। छह विदेशी सैलानी कर्नाटक की यात्रा पर आए। पहाड़ पर एक जगह उन्होंने गाड़ी रुकवा दी। वे लोग वहां के प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेना चाहते थे। जैसे ही यात्री गाड़ी से बाहर आए, उसमें आग लग गई। वह जलकर राख हो गई। वे लोग आश्चर्य से ताकते और सोचते रह गए।

कुत्ते को धन्यवाद

बैंकाक। एक व्यापारी भट्टीसेवी को यात्रा के लिए जहाज पकड़ना था। वह हवाई अड्डे जाने वाला था, तभी कुत्ते ने हाथ पर काट लिया। अधिक पीड़ा के कारण उसने यात्रा रद्द कर दी। बाद में पता चला भट्टीसेवी जिस विमान से जाने वाला था, वह नेपाल में दुर्घटनाग्रस्त हो गया। उसमें सवार सभी यात्री मारे गए। खबर सुनकर भट्टीसेवी ने कहा—"उस कुत्ते को धन्यवाद जिसने मुझे काटा था, वरना मैं जीवित न बचता।"



बच्चों के नाटक

माल्यांग चित्रकार बनना चाहता है। पर गरीब है— कूची या रंग नहीं खरीद सकता। उसकी लगन देख, एक देवता उसे कूची दे देते हैं। उससे जो भी चित्र बनाता, वह सजीव हो उठता। जमींदार उससे सोने का पहाड़ बनाने को कहता है, सोने के सिक्के बरसाने वाला पेड़ बनवाता है। नदी के बीच ऐसा पेड़ बनाने से दुष्ट जमींदार और उसके साथी नदी की लहरों में डूब जाते हैं।

'उमंग' ने तीन बाल नाटक खेले— माल्यांग की कूची (रेखा जैन), बिल्ली का खेल (लक्ष्मीनारायण लाल) और चचा छक्कन ने तस्वीर टांगी (कुदसिया जैदी)।

अंकुर अरोरा (माल्यांग) और भद्रा सिन्हा (जमींदार) का अभिनय बहुत अच्छा था।

'बिल्ली का खेल' में अपनी चतुराई से बिल्ली गरीब स्वामी को राजकुमार बना देती है। जादूगर का घमंड भी चकनाचूर कर देती है। राधिका आहूजा (बिल्ली) और प्रेरणा सिंह (जादूगर) की भूमिकाएं दिलचस्प थीं। —सत्येन महापात्र

पुराने खिलौने

लंदन। यहां एक खिलौना प्रदर्शनी हुई। उसमें चालीस-पचास वर्ष पुराने खिलौने रखे गए। प्रदर्शनी लगाने वालों ने कहा कि आज के बच्चों को जानना चाहिए कि पहले खिलौने कैसे होते थे।

११५ वां जन्म-दिन मुबारक

लंदन। ब्रिटेन की सबसे अधिक उम्र की महिला शर्लोट ह्यूग्स ने अपना ११५ वां जन्म-दिन मनाया। सन् १८७७ में जन्मी ह्यूग्स विश्व की दूसरी सबसे वृद्ध महिला हैं।

साइकिल से विश्व भ्रमण

नई दिल्ली। साइकिल सवार अरुणकुमार भाटिया विश्व भ्रमण पर निकले हैं। अब तक वह १० हजार किलोमीटर की यात्रा पूरी कर चुके हैं। वह देश-विदेश में शांति और भाईचारे का प्रचार कर रहे हैं।

सी कुकम्बर को बचाओ

कीटो। रासायनिक प्रयोगों के लिए सी कुकम्बर का अंधाधुंध शिकार हो रहा है। इससे इक्वेडोर के गलापागोस द्वीप समूह के पर्यावरण संतुलन को खतरा पैदा हो गया है। सी कुकमूबर खीरा जितना बड़ा होता है। इसकी गति धीमी होती है। समुद्र तल में रहता है।

महारानी के मेहमान

लंदन। टेम्स नदी के किनारे महारानी एलिजाबेथ का महल है— हैम्पटन कोर्ट। बहुत पुराने इस महल के दो कमरे लोगों के ठहरने के लिए खोले जाएंगे। बारह हजार रुपए देकर कोई भी यहां रह सकेगा। यह महल करीब चार सौ साल पुराना है। लाखों दर्शक हर साल इसे देखने आते हैं। चार सौ रुपए का टिकट लेना होता है।

बार्सीलोना

- सबसे बूढ़े पदक विजेता तिरानवे वर्ष के लियो सुकेज ओलंपिक खेलों में विशेष मेहमान के रूप में आए थे। उन्होंने १९२४ से १९३६ के बीच ६ पदक जीते थे। कहा जाता है—सुकेज इस समय सबसे बूढ़े ओलम्पिक पदक विजेता हैं।
- आंखों में झलकते खुशी के आंसुओं के बीच वह मुस्कराने की कोशिश कर रही थी। आखिर वह बोल उठी आज की रात मुझे नींद नहीं आएगी।
  यह हाल था यूनान की स्वर्ण परी परासकेवी पाटोलिड्यू का। उसने सपने में भी नहीं सोचा था कि उसकी वजह से ओलम्पिक ११० मीटर बाधा दौड़ में यूनान का झंडा फहराया जाएगा।
  अमरीका की गेल डेवर्स के बाधा से टकरा जाने के कारण कल उसे इस स्पर्धा में पहला स्थान मिला।
- यहां एक प्रदर्शनी हुई, जिसका नाम था 'प्यारी धरती'। उसमें बताया गया था कि धरती का पर्यावरण आज कितना दूषित हो चुका है। और उसे सुधारने के लिए हमें क्या करना चाहिए।

अपनी भाषा

नई दिल्ली। केवल भारत ही ऐसा देश है, जहां आजादी के ४५ वर्ष बाद भी अपनी भाषा को उचित स्थान नहीं मिला है। जब भी कोई विदेशी यहां आता है, वह अपनी भाषा में बोलता है। देश के नेता उसका उत्तर अंग्रेजी में देते हैं। यह बड़े दुख की बात है।—भूतपूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ने तुलसी जयंती के अवसर पर कहा।

नींद पर विचार

नई दिल्ली। यहां देश में पहली बार ऐसा सम्मेलन हो रहा है, जिसमें 'नींद और नींद में चलने' पर विचार होगा। सम्मेलन सितम्बर में होगा। दुनिया के २०० से अधिक निद्रा विशेषज्ञ इसमें भाग लेंगे।

सचित्र समाचार



वर्ष १९९१ के लिए
जवाहरलाल नेहरू पुरस्कार
श्रीमती अरुणा आसफअली को

'फूलों से बातें' प्रदर्शनी हुई
तैवान की राजधानी ताइपे में ।
फूलों से बनाया गया
बंदर का चेहरा ।





जाने-माने गायक रफी की याद में
'कला दर्पण' ने संगीत प्रतियोगिता
की । गायिकाओं में प्रथम पुरस्कार
विनि तनेजा को

बारहवां विश्व बाल पुस्तक मेला
मेक्सिको में दिसम्बर में होगा ।
मेले का प्रतीक ।

अटलांटा (अमरीका) में
अगले ओलंपिक खेल १९९६





डा. एम.एस. अग्रवाल को उनकी
पुस्तक 'आंखें' पर भारत सरकार द्वारा
प्रथम पुरस्कार। राशि १५,००० रुपए ।

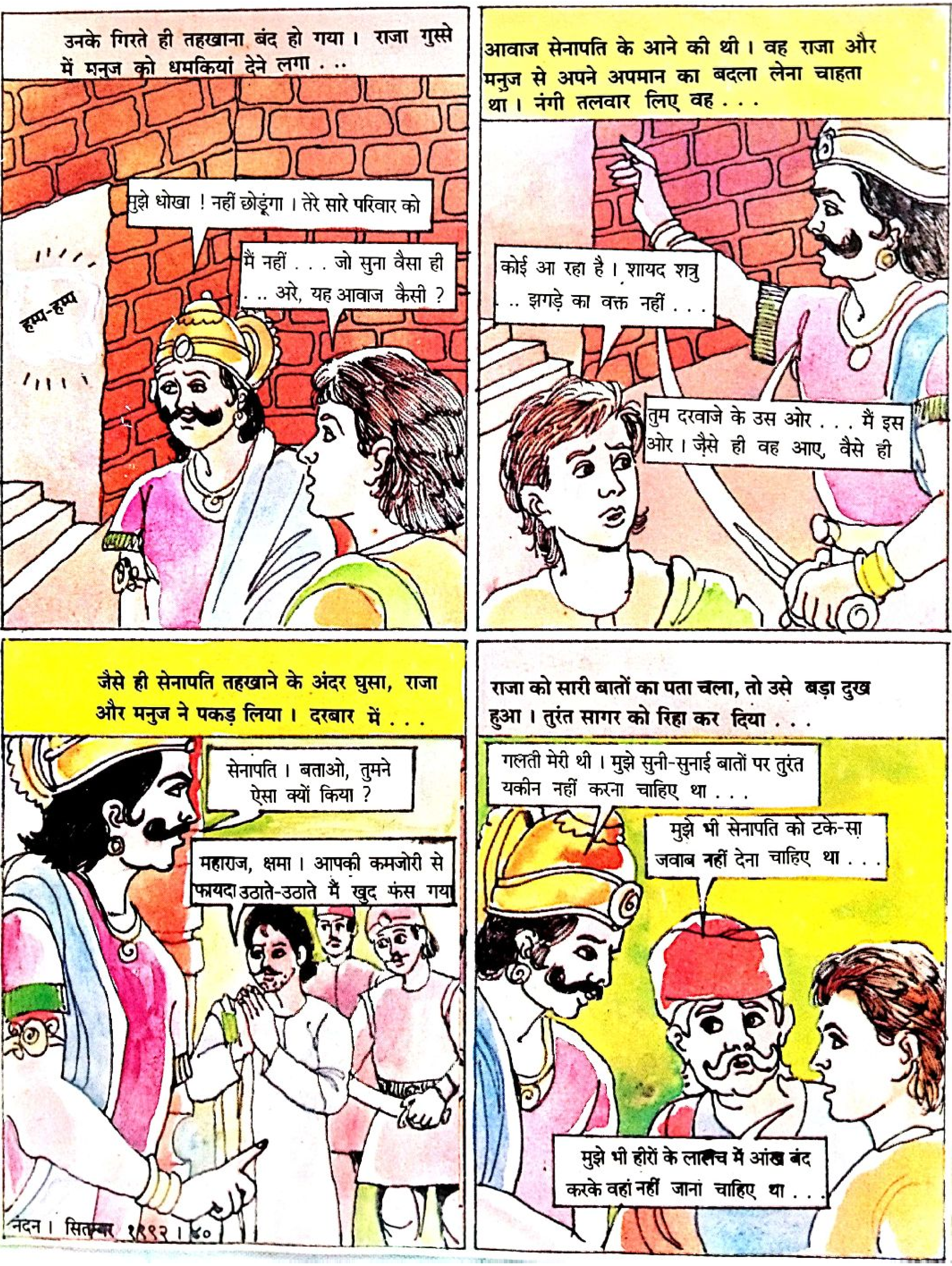
जिम्नास्टिक्स में छह स्वर्ण पदक जीतकर
रिकार्ड बनाने वाला
विताली शेर्बो (सी.आई.एस.)


एक राजा था। वह जो सुनता, उस पर तुरंत विश्वास कर बैठता था।
तीस हीरे
राजा की सेना को रसद की पूर्ति ठेकेदार सागर करता था। एक दिन सेनापति ने उसे बुलाया। वह आया। बेटा मनुज साथ था।
मैंने सुना . . . यह शत्रु का भेदिया . . . प्राणदंड . . .
दुहाई महाराज, मैं भेदिया नहीं . . .
सागर, मेरी बेटी का विवाह है। बारातियों के खाने-पीने का खर्चा तुम्हें उठाना होगा।
मुझे ! क्यों !!
यह काम तो . . .
सेनापति सोचता था—सागर मान जाएगा। उसके इंकार से . . .
आंखें दिखाते हो ? देख लूंगा। ठेका तो खत्म ही समझो !
जो हो। देख लेंगे। रिश्वत नहीं . . .
सेनापति ने चाल चली। वह और राजा वेश बदलकर रोज रात को नगर में घूमते थे। अगली रात . . .
सेना को जहरीला अनाज भेजने के बदले सागर को इतना धन मिला है कि . . .
उफ, सागर . . दुश्मन . . .
शीऽऽ। धीरे . . . दीवारों के भी कान होते हैं . . .


रास्ते भर सेनापति राजा को भड़काता रहा। आते ही राजा ने सागर की गिरफ़्तारी का आदेश दे दिया . . .
महाराज का आदेश . . . आप बंदी . . .
जरूर सेनापति का काम है। उसी ने धमकी दी थी . . .
बंदी ! मैं !! मैंने क्या किया !! षड्यंत्र !
सोच-समझकर मनुज ने योजना बनाई। राजा का माली उसके बाग-बगीचे भी देखता था। गरीबी का रोना रोता रहता था। एक दिन . . .
राजा से वेतन बढ़ाने को कहा था, मगर . . .
चिंता न करो। सेनापति राजा को बंदी बना गद्दी पर बैठेगा . . . तब . . .
माली ने यह बात साथियों से कही। होते-होते अफवाह महल में फैल गई। राजा के कानों में पड़ी, तो . . .
मंत्री जी, सेनापति को तुरंत राज्य से बाहर करो। संपत्ति, हवेली जब्त कर लो . . .
जी !
अब परेशान होने की बारी सेनापति की थी। वह राज्य की सीमा पर घूम रहा था कि . . .
पहचाना ! मनुज . . . सागर का बेटा। हाल चाल पूछने आया हूं तुम्हारे !
बच्चू ! ऐसा धोबी पाट मारूंगा कि चारों खाने चित्त . . .



सेनापति का दिमाग तेजी से चल रहा था . . .
जो हुआ, गलत हुआ मनुज । एक काम कर दो । मेरी हवेली से पुरखों की निशानी ला दो ।
निशानी ? कैसी निशानी !!
सेनापति ने कहा—उसके कमरे की दीवार पर खूंटी है । उसमें तीस हीरे छिपे हैं । यदि वह ला दे, तो आधे उसके । मनुज लालच में फंस गया . . .
पंद्रह हीरे कम नहीं होते । आज ही किसी तरह . . .
राजा को बता दो । शायद वह ससुर जी को छोड़ दे । ठेका भी . . .
मनुज की समझ में बात आ गई । सीधा राजा के पास गया सारी बात बताई, तो राजा उसे ले सेनापति की हवेली में . . .
यही है सेनापति का कमरा । उस दीवार पर खूंटी . . .
ठहरो, मैं उखाड़ता हूं ।
वह खूंटी नहीं थी । कमरे में बने तहखाने की चाबी थी । जैसे ही राजा ने उसे उखाड़ने के लिए खींचा . . .
धोखा ! बचाओ !!
अरे !


उनके गिरते ही तहखाना बंद हो गया। राजा गुस्से में मनुज को धमकियां देने लगा . . .
मुझे धोखा ! नहीं छोड़ूंगा। तेरे सारे परिवार को
मैं नहीं . . . जो सुना वैसा ही . .. अरे, यह आवाज कैसी ?
हम्प-हम्प
आवाज सेनापति के आने की थी। वह राजा और मनुज से अपने अपमान का बदला लेना चाहता था। नंगी तलवार लिए वह . . .
कोई आ रहा है। शायद शत्रु .. झगड़े का वक्त नहीं . . .
तुम दरवाजे के उस ओर . . . मैं इस ओर। जैसे ही वह आए, वैसे ही
जैसे ही सेनापति तहखाने के अंदर घुसा, राजा और मनुज ने पकड़ लिया। दरबार में . . .
सेनापति। बताओ, तुमने ऐसा क्यों किया ?
महाराज, क्षमा। आपकी कमजोरी से फायदा उठाते-उठाते मैं खुद फंस गया
राजा को सारी बातों का पता चला, तो उसे बड़ा दुख हुआ। तुरंत सागर को रिहा कर दिया . . .
गलती मेरी थी। मुझे सुनी-सुनाई बातों पर तुरंत यकीन नहीं करना चाहिए था . . .
मुझे भी सेनापति को टके-सा जवाब नहीं देना चाहिए था . . .
मुझे भी हीरों के लालच में आंख बंद करके वहां नहीं जाना चाहिए था . . .

चिड़िया बनी हिमा

—आशा जोशी

श्रावण मास आ गया था। इन दिनों हरी जौ बोई जाती है। मां भी जौ बोती थी। बोने के बाद श्रावण मास की संक्रांति पर, ग्यारहवें दिन इसे काटती थी। संक्रांति के दिन हरेला मनाया जाता था। हिमा भी त्योहार के दिन गिन रही थी। उसका ब्याह हो गया था। यह त्योहार उसकी शादी के बाद, पहली बार पड़ा था। पर वह मायके नहीं जा सकी थी। उसकी सास बीमार थी। ऐसे में वह मायके कैसे जाती ? हिमा, बर्फ-सी गोरी, हिमा। हेमंत की दीदी, हिमा।

बूढ़ी मां को मालूम था कि हिमा नहीं आ सकती।

मां का संदेशा आया था—'तेरा भाई 'हरेला' (हरी जौ की कटी डालियां) और 'छ्कोड़ी' (पकवानों की टोकरी) लेकर आएगा।' हिमा बहुत खुश थी। उसका छोटा भैया आएगा। भैया से अपनी सखी-सहेलियों की ढेर सारी बातें पूछेगी।

जब से मां ने हेमंत से कहा था कि वह 'हरेले' के दिन दीदी के घर जाएगा, तब से उसकी खुशी का ठिकाना ही न था। वह जानता था कि दीदी की ससुराल ऊंची पहाड़ी पर बसे गांव में है, जहां कोई सवारी नहीं जाती। पांच-छह घंटे की चढ़ाई पैदल ही करनी पड़ती थी। फिर भी उसके उत्साह का ठिकाना न था।

हेमंत अपनी दीदी से दस बरस छोटा था। हिमा से छोटी और उससे बड़ी एक बहन और थी। वह मां और बहनों का लाड़ला था। जब वह साल भर का ही था, तो बाबू जी चल बसे थे। मां ने मजदूरी करके उन्हें पाला था। अब भी मां को कमर-तोड़ मेहनत करनी पड़ती थी।

'हरेले' का त्योहार आया। मां सुबह जल्दी उठ गई। 'हरेला' काटा। देवताओं को भोग लगाया। दरवाजे की चौखट पर 'हरेले' की डालियां बांधीं। हेमंत और बेटी को पटरे पर बिठाकर, उनके लिए मंगलकामना की। पैरों से लेकर घुटनों तक, घुटनों से लेकर कंधे छुआती और फिर हरी-भरी जौ बच्चों के सिर पर रखती हुई बोली—

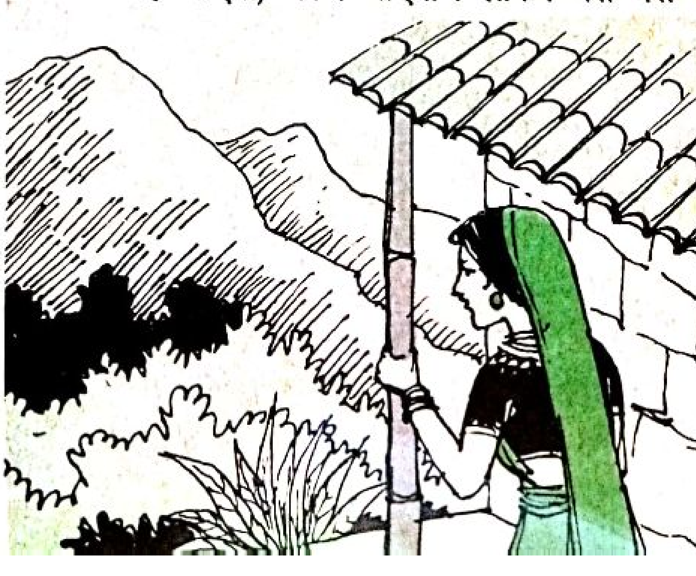
"जी रया, जागि रया
स्यू जसा प्राण हजैं,
स्यावे जसी बुद्धि है जो,
जी रया, जागि रया।"

जीते रहो, चैतन्य रहो, तुम्हारी लम्बी उमर हो, शेर जैसे प्राण अर्थात् साहस हो, गीदड़ जैसी बुद्धि हो।

फिर मां ने रोली, चावल, हरेला और पकवान की टोकरी के साथ हेमंत को हिमा के घर के लिए रवाना किया। ग्यारह साल का हेमंत। पैदल चलता गया, चलता ही गया। वह सुबह चला था। दोपहर हो आई। वह अभी आधा रास्ता ही पार कर पाया था। पैर थक गए थे। रास्ते में एक पेड़ की छांह में वह थोड़ी देर सुस्ताने के लिए बैठ गया। ठंडी बयार ने जैसे ही उसे छुआ, सारी थकान भागने लगी। उसे नींद आ गई।

उसकी दीदी हिमा बार-बार दरवाजे तक आती। दूर तक निगाह दौड़ाकर देखती। अड़ोस-पड़ोस में 'हरेले' के त्योहार की धूमधाम थी। हिमा ने सुबह से पानी की बूंद तक गले से न उतारी थी। उसका छोटा भाई जो आने वाला था। भाई की याद करते ही उसका मन भर आता। छोटा-सा तो है उसका भाई हेमंत। छोटे-छोटे पांवों से जंगल का ऊंचा-नीचा रास्ता नापता आ रहा होगा....।

वह आएगा, जरूर आएगा। लेकिन जैसे-जैसे



दिन चढ़ रहा था, हिमा उदास होती जा रही थी। हिमा ने प्रण किया था, जब तक भाई को 'हरेला' नहीं लगा लेगी, तब तक अन्न व जल को मुंह नहीं लगाएगी।

उधर भाई सोया, तो सोता चला गया। वह सपनों में खोता चला गया। सपने में उसने देखा, दीदी उसका टीका कर रही है। 'हरेले' से उसे आशीष दे रही है। उसे पुए खिला रही है। सोते-सोते शाम हो गई। आंख खुली तो देखा, अंधेरा छाने लगा था। वह डर गया। पास में रखी टोकरी देखकर उसे याद आया। उसे तो दीदी की ससुराल पहुंचना था। यह सोचते ही, वह बहुत पछताया। उसने तेजी से कदम बढ़ाए। रास्ते में जंगली जानवरों का डर भी था। चलते-चलते अंधेरा हो गया। वह अंधेरे में रास्ता भी भटक गया।

बड़ी मुश्किल से अगले दिन वह दीदी की ससुराल पहुंचा। यह क्या! दीदी के घर के बाहर भीड़ कैसी? उसका नन्हा मन घबरा उठा। आंगन में उसके जीजा जी, उदास बैठे थे। पास ही चारपाई पर उसकी भूखी-प्यासी दीदी लेटी थी। कई औरतों ने उसे घेर रखा था। वह दौड़कर दीदी के पास पहुंचा। दीदी की आंखें मुंदी थीं। सांस बड़ी मुश्किल से आ रही थी। वह दीदी से जा लिपटा। वह बोला—"मैं आ गया दीदी... 'हरेला' लेकर। आंखें खोलो दीदी...। मैं थक गया था दीदी! रास्ते में नींद आ गई थी, दीदी, मैं रास्ता भूल गया था..."

दीदी ने धीरे से पलकें उठाईं। होठों में बुदबुदाई— "मैं भूखी, मैं ती सी
म्यर भुला, तू सेती।"

'मैं भूखी, मैं प्यासी, तेरी राह देखती रही। मेरे भाई, तू सो गया।' पछताता हुआ हेमंत कुछ कह पाता, इससे पहले ही दीदी की गर्दन एक तरफ लुढ़क गई। हेमंत पछाड़ खाकर गिर पड़ा। 'हरेला' और पकवान की टोकरी आंगन में बिखर गई।

आज भी बर्फ से ढकी चोटियों पर एक छोटी-सी चिड़िया दर्द भरी आवाज में गाती है। लोग कहते हैं—"यह 'हिमा' है जो चिड़िया बनकर अपने भाई को टेर लगाती है।" ●

जुगनू

— प्रभा भटनागर

वन में घुप्प अंधेरा था। रामो दादी अपनी पोती बिंद्रा का हाथ थामे चली जा रही थीं। रास्ते में बार-बार ठोकर लगती, फटी-पुरानी ओढ़नी झाड़-झंखाड़ में उलझ जाती। रामो दादी कराह उठतीं, फिर बिंद्रा को खींचती हुई बढ़ने लगतीं। जंगली जानवरों के भय से मन ही मन भगवान का नाम रट रही थीं।

सहसा उन्हें एक पुराना गीत याद आ गया। तब रामो की उम्र बिंद्रा जितनी ही रही होगी। अंधेरे में जाते समय रामो की दादी कहा करती थीं— "रामो, एक मंतर है मेरे पास। उसे बोलो, तो अंधेरे में रास्ता दिखाई देने लगता है— 'जुगनू रे, जुगनू, जाग जरा। रात अंधेरी दिया दिखा।' रामो भी दादी के साथ यह पंक्ति दोहराती और अंधेरे में जुगनू चमक उठते।

आज रामो दादी ने बिंद्रा से वही शब्द दोहराने को कहा। और जंगल के दीप स्तंभों ने जैसे उसकी बात सुन ली। सैकड़ों जुगनू जलने-बुझने लगे। दोनों दादी-पोती रास्ते पर बढ़ती चली गईं।

झोंपड़ी में पहुंचकर रामो दादी ने चैन की सांस ली। माचिस खोजकर ढिबरी जला ली। पोटली में से निकालकर चने-मुरमुरे खाए, पानी पिया और फर्श पर कथरी बिछाकर लेट गईं।

दादी सो गईं, पर बिंद्रा को नींद नहीं आ रही थी। उसके मन में एक प्रश्न बार-बार उठ रहा था— "यह जुगनू क्या होता है? दादी का मंत्र सुनते ही भला जुगनुओं ने रोशनी कैसे कर दी? आखिर उससे रहा नहीं गया। दादी को झिंझोड़कर जगाती हुई बोली— "दादी, नींद नहीं आ रही है। कोई कहानी सुनाओ न!"

दादी बहुत थक गई थीं। उस पर चिल्ला पड़ीं। दादी को नाराज होते देख, नन्ही बच्चीं सहम गई। लेकिन अब रामो दादी की नींद टूट चुकी थी। उन्हें बिंद्रा पर बहुत तरस आया। बिंद्रा के मां-बाप नहीं थे। दादा पहले ही चल बसे थे। बिंद्रा को कलेजे से लगाकर ही दादी जीवन के दुःख झेलती आ रही हैं।

उन्होंने धीरे से पोती के बाल सहला दिए। पूछने लगीं— "अच्छा बता, कौन सी कहानी सुनाऊं ?"

"वही जुगनू वाली कहानी, जिसका मंतर तुमने मुझे रास्ते में सिखाया है।"— बिंद्रा ने कह दिया।

रामो दादी कहानी सुनाने लगीं— "जंगल में अंधेरा था। इस कारण बहुत से जीव-जंतु परेशान रहते थे। एक दिन नारद मुनि वहां आए, राम धुन गाते हुए..."

— "नारद मुनि कौन थे दादी मां ?"

"वह एक बहुत बड़े ऋषि हैं। स्वर्ग में रहते हैं।"— दादी ने समझाया।

— "स्वर्ग कहां है दादी ?"

— "स्वर्ग ऊपर आकाश में है बेटी। वहां देवता रहते हैं, भगवानजी रहते हैं। भगवान ने नारदजी से कहा— 'धरती पर जाकर प्राणियों का दुःख-सुख जानो, इसीलिए आए थे वह।"

"नारद मुनि स्वर्ग से धरती पर कैसे आए ? क्या उनके पास हमारे गांव के जमींदार जैसी बैलगाड़ी थी या पैदल ही आए थे ?"— बिंद्रा ने उत्सुक स्वर में पूछा।

रामो दादी के लिए यह सवाल कठिन था। भला उन्हें क्या पता, नारदजी कैसे आए थे ? उन्होंने कहा— "अगर तू इस तरह सवाल पूछती रहेगी, तो फिर मैं कहानी कैसे सुनाऊंगी ! वैसे मैं समझती हूं— नारदजी पैदल ही आए होंगे।"

बिंद्रा ने झट कहा— "अच्छा दादी, अब आगे



नहीं पूछूंगी। सुनाओ कहानी।"

"नारद मुनि वेश बदलकर, कई दिन तक धरती पर घूमते रहे। लोगों के सुख-दुःख का हिसाब लिखते रहे। एक रात जंगल में जा पहुंचे। कभी किसी पेड़ से टकरा जाते, तो कभी पैरों में कांटे चुभते। वह सोचने लगे— 'इस जंगल से कैसे बाहर निकलूं ?'

"हाय राम ! फिर नारद मुनि को रास्ता किसने बताया ?"— बिंद्रा पूछे बिना न रह सकी।

— "रास्ता बताया एक जुगनू ने ! उसने कहा— 'मुनिवर, अगर आप हमारी एक शर्त मानें, तो हम आपको अंधेरे में रास्ता दिखा देंगे।'

'कैसी शर्त ?'— नारद मुनि ने पूछा —'हमें रास्ता बता दो। फिर हम स्वर्ग में जाकर भगवान से तुम जो चाहोगे, वह दिलवा देंगे।'

'आप भगवान से कहिए कि अंधेरे में जंगल में बहुत परेशानी होती है। वह हम जुगनुओं को अंधेरे में प्रकाश करने की शक्ति दें।'— जुगनू ने कह दिया।"

बिंद्रा तन्मय होकर कहानी सुन रही थी।

दादी ने आगे कहा— "बस बेटी, नारदजी भगवान के पास जा पहुंचे। उनसे कहा— 'भगवन, जुगनू जंगल में रहता है। उसे रोशनी देने की कृपा करें तो इससे जंगल में उजाला हो जाएगा।'

—"भगवान बोले— 'मुनिराज, जुगनू तो छोटा-सा कीड़ा है। उसकी जरा-सी रोशनी से भला क्या होगा ! आप कहें, तो हम शेर या चीते को अंधेरे में रोशनी करने की शक्ति दे दें।'

"नहीं प्रभु, शेर-चीते तो खूंखार होते हैं। वे आपके वरदान से दूसरों को हानि ही पहुंचाएंगे।'— नारद जी बोले।

"बस, फिर क्या था, भगवान ने नारदजी की बात मान ली। और धरती के सारे जुगनुओं को रोशनी के नन्हे-नन्हे दीप सौंप दिए।"— कहकर दादी ने बिंद्रा की तरफ देखा। वह तो न जाने कब सो गई थी। बिंद्रा के माथे को सहलाकर रामो दादी धीरे से हंस पड़ीं। उन्हें भी नींद आ रही थी।

बौना गायब

—अनिता खन्ना

बहुत पुरानी बात है। जापान के 'किनकी' प्रांत के एक गांव में एक गरीब युवक रहता था। केनइचि फूल बेचकर गुजर-बसर करता था। दिन भर फूल बेचने के बाद जो फूल बच जाते थे, उन्हें वह जल की रानी का नाम लेकर समुद्र को भेंट कर देता था। हर शाम समुद्र की चंचल लहरें युवक की अंजलि से झरते फूलों के साथ खेलती थीं।

समय गुजरता गया। एक दिन जल की रानी अपने भक्त को दर्शन दिए बिना नहीं रह सकी। शाम के समय जैसे ही युवक ने फूल जल में डाले, वह प्रकट हो गई। युवक को आशीर्वाद दिया, फिर अपने साथ महल में चलने का न्यौता भी दिया। केनइचि उसके पीछे-पीछे चल दिया।।

वहां तो जल की दुनिया ही निराली थी। जीव-जंतु अपना-अपना काम बड़ी चुस्ती से कर रहे थे। उनके बीच में कोई छोटे-बड़े का भाव नहीं था। जलपरियां अपनी सुंदर पोशाक में नाचते-गाते हुए वहां के वातावरण में आनंद का रस घोल रही थीं। केनइचि ने इन सब का पूरा आनंद लेते हुए, कुछ खाने की फरमाइश की। वहां खाने के लिए भी भांति-भांति के स्वादिष्ट व्यंजन परोसे गए। उसका खूब आदर-सत्कार हुआ। खा-पीकर केनइचि ने सोचा कि अब चलना चाहिए।

वह रानी से विदा लेते हुए बोला—"आपकी कृपा से मैंने इन सब अद्‌भुत वस्तुओं का आनंद लिया है, जिसे मैं सपने में भी नहीं सोच सकता था। अब आप आज्ञा दें, तो मैं घर वापस चलूं!" रानी ने उसे कुछ देर और रुकने के लिए कहा। फिर उसने अपने सेवकों को कुछ आदेश दिया। थोड़ी ही देर में गंदे कपड़े पहने, बदसूरत, एक बौना उपस्थित हुआ। रानी ने केनइचि को सम्बोधित करते हुए कहा—

"देखो, यह तोहो है। इसकी शक्ल-सूरत पर मत जाओ। असल में यह बहुत काम का आदमी है। हो सके, तो इसे सदा अपने साथ रखना। तुम्हें कभी कोई कष्ट नहीं होगा।" और उन दोनों को विदा दी।

कुछ देर में केनइचि तोहो को साथ लिए अपने झोंपड़े में पहुंच गया। अपना टूटा-फूटा झोंपड़ा देखकर केनइचि को रानी का सुंदर महल याद आया और उसके मुंह से निकला—"काश! अपना भी एक सुंदर-सा घर होता।" तोहो ने उसे ठंडी सांस लेकर यह कहते सुना, तो झट बोला—"मालिक, बस इतनी-सी बात है।" और उसने तीन बार ताली बजाई। यह क्या! देखते ही देखते उसका सपना साकार हो गया। इस तरह बौना तोहो, केनइचि की हर इच्छा पूरी करता चला गया। कुछ ही दिनों में केनइचि की गिनती अपने इलाके के अमीर लोगों में होने लगी। लेकिन तोहो जरा-सा भी नहीं बदला। उसकी वैसे ही बुरी-सी शक्ल थी और गंदे कपड़े थे। धीरे-धीरे केनइचि को तोहो का वह वेश खलने लगा। वह अक्सर कह देता—"तोहो, तुम इतने बदसूरत क्यों हो? तुम्हारे कपड़े बहुत गंदे हैं।" सुनकर तोहो हंस पड़ता, पर जवाब न देता।

उसने एक दिन तोहो से कहा—"देखो, हम लोगों की शहर में इतनी मान-मर्यादा है। इतना नाम है, पर हमारे साथ लोग तुम्हें इस रूप में देखकर क्या सोचते होंगे। आखिर तुम ऐसी शक्ल क्यों बनाए रहते हो?" लेकिन तोहो पर बहुत कहने पर भी इन सबका कोई असर नहीं हुआ। वह उन्हीं कपड़ों को पहने रहता। केनइचि भी उसे बराबर समझाता रहा।

आखिर एक दिन वह खीज कर बोला—"मालिक, आप मेरी चिंता छोड़ दें। मैं ऐसे ही ठीक हूं।"

धीरे-धीरे केनइचि को तोहो से चिढ़-सी हो गई। एक दिन तोहो की किसी हरकत से वह आपे से बाहर हो गया और उससे झल्लाकर बोला—"दूर हो जाओ मेरी नजरों से।"

अपमानित होकर तोहो चुपचाप घर छोड़कर चला गया। उसके जाते ही महल, ठाट-बाट भी उसके साथ ही चले गए। केनइचि फिर गरीब हो गया। ●

राम फिर आए

—चन्द्रदत्त 'इन्दु'

भगवान राम को अयोध्या में राज करते काफी समय बीत चुका था। व्यवस्था ठीक-ठाक थी। सभी जगह सुख-शांति थी। सभी को पूरी तरह न्याय मिलता था। इस बीच भगवान राम और उनके तीनों भाइयों के बेटे भी बड़े हो गए थे। राम ने उन सभी को सुयोग्य शासक बनने की शिक्षा दिलवाई। गुरु वशिष्ठ के आश्रम में रहकर राजकुमारों ने शास्त्र और शस्त्र का पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया। राम का विशाल राज्य सुविधा के लिए अनेक भागों में बंटा था। इन सबकी देखभाल की जिम्मेदारी राजकुमारों को सौंपी गई।

एक दिन श्रीराम एकांत में बैठे कुछ सोच रहे थे। तभी भरत जी वहां आ गए। राम को विचार मग्न देखकर भरत जी ने पूछा—"देव, आप किस चिंता में खोए हैं? यदि कोई छिपाने योग्य बात न हो, तो मुझे बताने की कृपा करें।"

श्रीराम बोले—"मेरे मन में ऐसा कुछ नहीं, जो अपने प्रिय भाइयों से छिपाऊं। इस समय मेरी चिंता का कारण विभीषण है। मैं सोच रहा हूं कि विभीषण की राज-काज व्यवस्था एक बार जाकर देखनी चाहिए। पता नहीं, विभीषण देवताओं के साथ कैसा बर्ताव करते हों। क्योंकि देवताओं के हित के लिए ही मैंने रावण का वध किया था।"

सुनकर भरत बोले—"आप ठीक सोच रहे हैं। राज का सुख कुछ भी करा सकता है। सत्ता पाकर न्यायपूर्वक काम करना कठिन होता है। आप लंका अवश्य जाएं। अनुमति हो, तो मैं भी आपके साथ चलूं। उस सम्पन्न नगरी को मैं भी देखना चाहता हूं।"

श्रीराम ने कहा—"अवश्य चलो। हमारे लौटने तक लक्ष्मण अयोध्या की देखभाल करेंगे।" राम ने लक्ष्मण को बुलाकर यह आदेश दिया। फिर तैयारी कर दोनों भाई पुष्पक विमान में बैठकर चल दिए। साथ में मंत्री और सेनापति को ले लिया।



पहले वे गंधार गए। वहां का राज्य भरत के दोनों पुत्र चलाते थे। भरत पुत्रों ने बड़े आदर से भगवान राम और अपने पिता का स्वागत किया। गंधारवासी भी बड़े प्रसन्न थे। भीड़ की भीड़ राम के दर्शन के लिए इकट्ठी हो गई। वहां कुछ दिन रहकर राम ने भरत के पुत्रों को समझाया—"राजा प्रजा का सेवक होता है। उसे दिन-रात सावधान रहकर प्रजा का पालन करना चाहिए।"

इसके बाद राम पूर्व दिशा के राज्य में जाकर लक्ष्मण के पुत्रों से मिले। उस नगर में भी एक सप्ताह बिताया। फिर अपनी अगली यात्रा पर रवाना हो गए।

वायु गति से उड़ता हुआ पुष्पक प्रयागराज पहुंचा। पहले दोनों भाई भारद्वाज मुनि के आश्रम पर गए। फिर अत्रि मुनि के आश्रम पर। रात्रि वहीं बिताकर अगले दिन दोनों भाई किष्किंधापुरी जा पहुंचे। उन्हें आया देख, सुग्रीव के हर्ष की सीमा न रही। उसने राम को अपने सिंहासन पर बैठाकर उनकी पूजा की। अंगद, हनुमान, नल-नील, जाम्बवान आदि वानर भी वहां आ गए। इतने दिनों बाद राम को अपने बीच में देख, सभी उनकी जय-जयकार करने लगे। किष्किंधा नगरी को खूब सजाया गया। यह देखकर भरत गद्‌गद् हो गए। सोच रहे थे—'राम मेरे नहीं, सभी के प्यारे हैं और राम को मैं नहीं, सभी प्यारे हैं।'

राम के अचानक आने पर सुग्रीव के मन में शंका पैदा हो गई थी। वह सोचने लगा—'कहीं अयोध्या में फिर कोई गड़बड़ तो नहीं हो गई।' राम उसके मन

की शंका को भांप गए। बोले—"मैं तुम लोगों से मिलने आया हूं। यहां से लंका जाऊंगा। वहां राक्षसराज विभीषण से मिलूंगा। पता चले, वह सुख से तो हैं। वहां कुछ दिन रुककर अयोध्या लौट जाऊंगा।"

यह सुनकर सुग्रीव की सारी शंका दूर हो गई। वह सोचने लगा—'राम कितने दयालु हैं। सबकी सुध लेने और सबको सुख देने में सचमुच उन्हें कितना सुख मिलता है।'

किष्किंधापुरी से राम चलने लगे, तो सुग्रीव ने कहा—"मैं भी आपके साथ चलूंगा। मित्र विभीषण से भेंटकर मुझे अच्छा लगेगा। पुरानी यादें फिर ताजा हो जाएंगी।"

हनुमान जी का मन भी साथ चलने को था। मगर राम का इशारा पा, वह चुप हो गए। अब राम, भरत और सुग्रीव ने लंका की ओर प्रस्थान किया। लंकापुरी में आकर विमान आकाश से नीचे उतरा। बादलों जैसी उसकी गर्जना सुन, द्वार रक्षकों ने तुरंत विभीषण को संदेश दिया—'पुष्पक विमान से कोई आया है।'

विभीषण समझ गया कि अयोध्या से ही कोई आया होगा। मगर उसे विश्वास न था कि राम स्वयं लंकापुरी में आए हैं। उसने अपने सेवकों से कहा—"जाओ, जो भी आएं हों, उन्हें सम्मान पूर्वक राजमहल में ले आओ।" विभीषण ने कह तो दिया, मगर वह सोच रहा था—'पता नहीं कौन आया है ?' इसीलिए वह अतिथि को देखने महल की अटारी पर



जाकर खड़ा हो गया। वहां से दूर तक का दृश्य दीखता था।

राम विमान से उतरे। सेवकों ने आगे बढ़कर उनकी अगवानी की। भरत सोचने लगे—'विभीषण स्वयं नहीं आया। सेवकों को भेजा है। निश्चय ही वह राजमद में आपा खो बैठा है। मैं उसे दंड देकर ही रहूंगा।'

इधर विभीषण ने दूर से ही अपने आराध्य राम को पहचान लिया। उसका मन ग्लानि से भर उठा—'मैं कितना मूर्ख और अज्ञानी हूं। प्रभु के स्वागत के लिए स्वयं न जाकर सेवकों को भेजा। यह तो घोर अपराध हो गया।" और उसी क्षण विभीषण नंगे पैरों ही विमान की ओर दौड़ पड़ा।

राम निश्चल भाव से मुसकराते हुए राजमहल की ओर आ रहे थे। तभी उन्होंने नंगे पैरों विभीषण को आते देखा। राम सारी बात जैसे समझ गए थे। उन्होंने भरत से कहा—"देखो, महात्मा विभीषण नंगे पैरों ही भागे चले आ रहे हैं। मुझसे मिलने के लिए इतने आतुर हैं कि राजा की शान और वैभव को भी भुला दिया। आओ, हम भी आगे बढ़कर उन्हें सम्मान दें।"

भरत और सुग्रीव कुछ कहते, उससे पहले ही राम उन्हें पीछे छोड़, तेजी से आगे बढ़े। इसी बीच विभीषण राम के पास आ, उनके चरणों में गिर पड़ा। राम ने उसे उठाकर गले से लगा लिया। दोनों की आंखों से आंसू बह रहे थे। भरत और सुग्रीव यह देखकर चकित थे। फिर भरत और सुग्रीव ने भी आगे बढ़, विभीषण को गले लगाया। विभीषण विनम्रता पूर्वक राम को साथ ले, अपने महल में आए। महल के द्वार पर विभीषण की पत्नी ने आरती उतारकर राम का स्वागत किया। पूरी लंकापुरी राम के दर्शन करने उमड़ पड़ी।

स्वागत-सत्कार हो जाने पर राम महल में आराम करने चले गए। विभीषण राम के चरण दबाने लगा। उसकी पत्नी पंखा झलने लगी। राम ने कहा—"राक्षसराज, आप यहां के राजा हैं। मेरे मित्र हैं। एक राजा को या एक मित्र को, दूसरे राजा या मित्र

के चरण दबाना शोभा नहीं देता। आप मेरे पास बैठिए।''

विभीषण बोला—''प्रभु, यह तो लोक मर्यादा की बात है। आप मेरे आराध्य हैं। मैं आपका भक्त हूं। यह अधिकार मुझसे न छीनिए। आप लंका में पहली बार आए हैं। आपके आने से यह नगरी पवित्र हो गई।'' फिर विभीषण ने दबी आवाज से राम के वहां आने का अभिप्राय जानना चाहा।

राम ने कहा—''तुम्हारे कुशल-क्षेम की मुझे चिंता सताती रहती है। लंका और अलकापुरी में पुराना वैर है। बताओ, अब यह वैर मिटा या नहीं ? देवता तो तुम से अप्रसन्न नहीं ! बताओ, तुम्हारी खुशी के लिए मैं और क्या करूं ?''

विभीषण ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह आंखें बंद कर बैठ गए। राम कुछ समझे नहीं। तभी घोर गर्जन का स्वर होने लगा। विभीषण बोले—''प्रभु, देवता आपसे मिलने आए हैं। मैंने आह्वान कर उन्हें बुलाया है। उनके विमान आकाश में खड़े आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।''

राम सारा रहस्य समझ गए। महल की अटारी पर पहुंचे। राम को देखकर देवता फूल बरसाने लगे। कहने लगे—''प्रभु, विभीषण हमारे मित्र हैं। अब अलकापुरी की लंकापुरी से मित्रता है। हम महात्मा विभीषण द्वारा यज्ञ में दी गई आहुतियों को खुशी-खुशी स्वीकार कर लेते हैं।'' यह कहकर देवता चले गए। विभीषण ने बिना कुछ कहे, राम की शंका का समाधान कर दिया था।

दूसरे दिन भरत के कहने पर राम, विभीषण और सुग्रीव अशोक वाटिका देखने गए। भरत वह जगह देखना चाहते थे, जहां माता सीता बंदी बनाकर रखी गई थीं। एक बड़े वृक्ष के नीचे बने सुंदर चबूतरे पर सीता जी की प्रतिमा रखी थी। वाटिका का नाम भी 'माता सीता वन' हो गया था। उसी प्रतिमा के आगे एक बहुत ही बूढ़ी औरत बैठी थी। भरत ने विभीषण से पूछा—''यह कौन हैं ?''

विभीषण ने बताया—''यह त्रिजटा है। रावण ने इसे ही मां सीता की देखभाल के लिए नियुक्त किया



था। यह उन्हें बेटी की तरह प्यार करती थी। अब देवी मानकर उनकी प्रतिमा की पूजा करती है। रात-दिन यहीं रहती है। कहती है कि मैं सीता मां की देखभाल कर रही हूं।''

भरत ने त्रिजटा को प्रणामकर, अपना परिचय दिया। फिर राम ने भी अपना परिचय दिया। राम का परिचय पाकर त्रिजटा फूट-फूटकर रोने लगी। बोली—''जानकी नाथ, मैं आपके दर्शन के लिए ही बैठी हूं। आपने स्वयं आकर मुझे दर्शन दिए। मेरा काम पूरा हुआ। अब मुझे कुछ नहीं चाहिए।'' यह कहते हुए त्रिजटा ने आंखें मूंद लीं। सभी ने देखा—उसके अंदर से एक तेजपुंज निकला और देखते ही देखते अंतरिक्ष में लोप हो गया। सभी चकित थे। राम मुसकरा रहे थे। बोले—''असल में मेरे यहां आने का उद्देश्य त्रिजटा से मिलना ही था। बाकी सब तो बहाना था।''

सभी खड़े मुग्धभाव से भक्त वत्सल राम को देख रहे थे। भरत सोच रहे थे—'राम करुणामय हैं। त्रिजटा की पुकार पर, उन्हें अयोध्या से यहां तक आना पड़ा।' और विभीषण सोच रहे थे—'त्रिजटा के कारण ही राम की चरण धूलि से लंका नगरी पवित्र हुई।'

इसके बाद विभीषण ने बहुत रोका, मगर राम रुके नहीं। वह विमान पर बैठकर अयोध्या लौट चले। ●

चटपट

● ग्राहक— तुमने मुझे खराब शीशा दे दिया । चेहरा टेढ़ा-मेढ़ा दिखाई देता है ।
दुकानदार— साहब, पहले चेहरा ठीक करा लीजिए, फिर शीशे में चेहरा ठीक दिखाई देगा ।

● एक यात्री— भाई, तुमने चश्मा लगा रखा है, फिर मुझे टक्कर क्यों मारी ?
दूसरा यात्री— माफ करना भाई, मैंने दूर का चश्मा लगा रखा है, पास का नहीं ।

● मालकिन— कैसे नौकर हो, तुम्हारे हाथ में जान ही नहीं । शीशे के गिलास ही तोड़ते रहते हो ?
नौकर— गिलास ही कमजोर हैं, बेचारे हाथ का क्या कसूर ।

● डाक्टर— होश में रहकर बातें करो ?
मरीज— तो फिर आप मुझे बार-बार बेहोशी की दवा क्यों देते हो ।

● आंखों का डाक्टर— भाई, चश्मा लगाने के बाद तुम्हें कैसा लग रहा है ?
मरीज— पहले जो चीज ठीक-ठीक दिखाई देती थी, अब वही उलटी नजर आ रही है ।

● नाई— अजय, तुम्हारे बाल कितने छोटे काट दूं ।
अजय— इतने छोटे काट दो कि बाल मास्टर साहब के हाथ में न आएं ।

● सुरेश— तुम अपने मित्रों को ही बेवकूफ बनाते हो ?
गणेश— हां, क्योंकि वे आसानी से मेरे झांसे में आ जाते हैं ।

● चौकीदार— जागते रहो सोने वालो ?
मकान मालिक— सोएंगे तो तब जब तुम शोर मचाना बंद करोगे ।

● मां— बेटा, आइसक्रीम ज्यादा खाने से जुकाम हो सकता है ।
बेटा— मां, आप चिंता न करें । जुकाम की दवा मेरे पास है ।

● विभा—बारिश न होने पर ही तुम छतरी क्यों लाती हो ?
रमा— कैसी बातें करती हो ? पानी पड़ने पर छतरी लाई, तो खराब नहीं हो जाएगी ।

● एक राहगीर— आपकी घड़ी चल रही है क्या ?
दूसरा राहगीर— जी नहीं, घड़ी तो कलाई में बंधी है । हां, इसकी मिनट और सैकिंड की सुइयां अवश्य चल रही हैं ।

● विजय— मैंने कल तुम्हें एक थप्पड़ मारा था । आज तुमने दो थप्पड़ मुझे क्यों मारे ?
बबलू— मैं सूद सहित अपना हिसाब चुकाता हूं ।

● मालकिन— तुम काम तो करते नहीं, बस दिन भर बक-बक करते रहते हो ।
नौकर— जो घर में देखूंगा, वही तो करूंगा ।

● एक पहलवान— ऐसा मुक्का मारूंगा, औंधे मुंह जा पड़ोगे ।
दूसरा पहलवान— मुक्का मारोगे कैसे ? मैं तुम्हारे हाथ ही नहीं आऊंगा ।

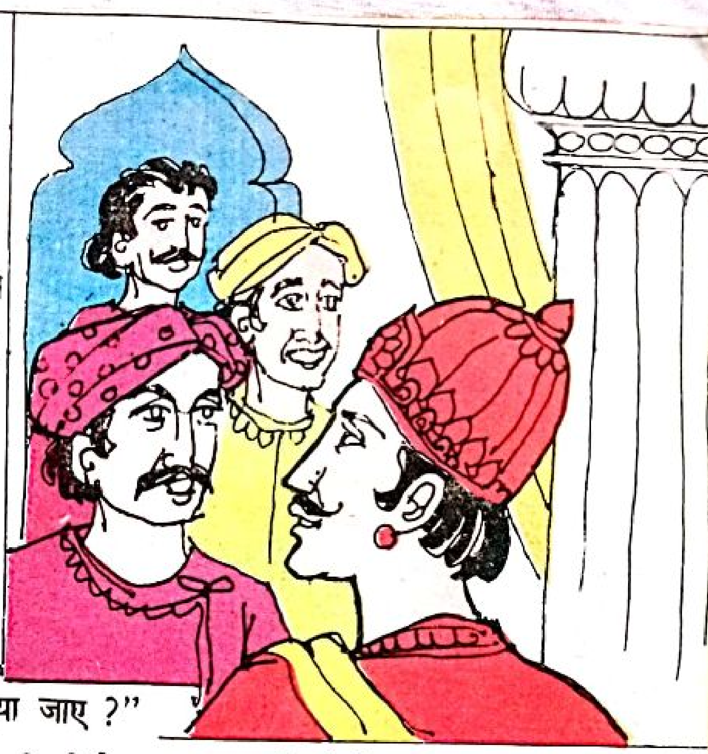
● बेटा— मां, यह पैन काम नहीं करता ।
मां— तुमने पैन ही उलटा पकड़ रखा है, चलेगा कैसे ?

● विकास— तुम्हारा दिमाग उलट गया है ?
डबलू— तुम्हें कैसे पता ?
विकास— दिमाग ठीक होता, तो अखबार उलटा न पकड़ते ।



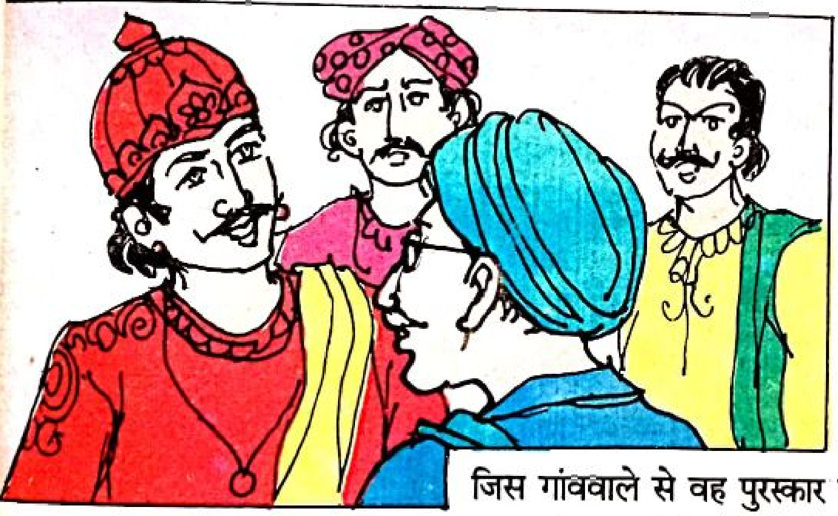
तेनालीराम २९३

अच्छा प्रबंध



राजा कृष्णदेव राय राज्य के दौरे पर थे। जहां जाते, प्रजा की शिकायतें सुनते। उचित शिकायतों को दूर करने के आदेश देते। रास्ते में पड़ा धूलगांव। राजा वहां भी ठहरे। जमींदार की हवेली में दरबार लगाया। कई बार कहा— "किसी को कोई शिकायत हो, तो निडर होकर कहे।" किंतु सारे गांववाले चुप खड़े रहे। आगे कोई नहीं आया।

रात को राजा ने वरिष्ठ दरबारियों से जमींदार की बड़ी प्रशंसा की— "जिस जमींदारी में ऐसा गांव हो, वहां का जमींदार पुरस्कृत किए जाने योग्य है। आप बताइए, जमींदार को क्या पुरस्कार दिया जाए?"



किसी ने कहा कुछ, किसी ने कहा कुछ, मगर तेनालीराम चुप बैठा रहा। राजा ने उससे पूछा— "तुम चुप क्यों हो?"

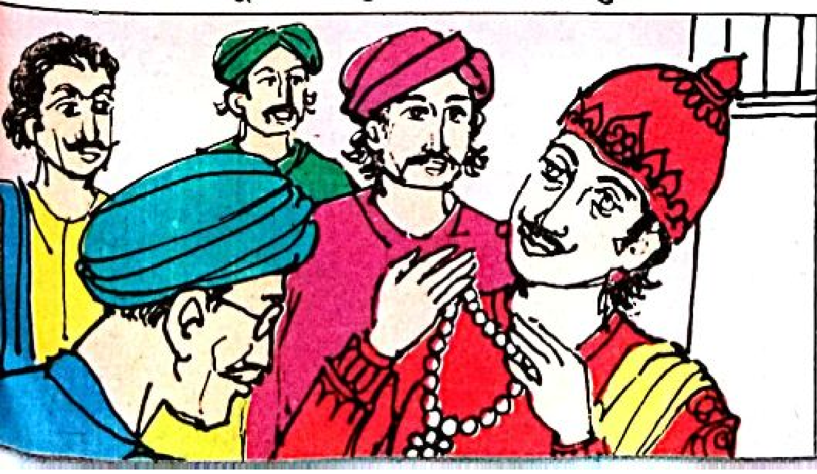
तेनालीराम हाथ जोड़कर बोला— "महाराज, जमींदार को क्या पुरस्कार दिया जाए, यह गांववालों ही से पूछना चाहिए।"

दरबारियों ने नाक-भौं सिकोड़ीं, किंतु राजा को तेनालीराम का सुझाव पसंद आ गया। तुरंत उसे ले, वेश बदलकर गांव में निकल गए। मगर आश्चर्य, जिस गांववाले से वह पुरस्कार के बारे में पूछते, वही मुंह बनाकर चुप हो जाता।



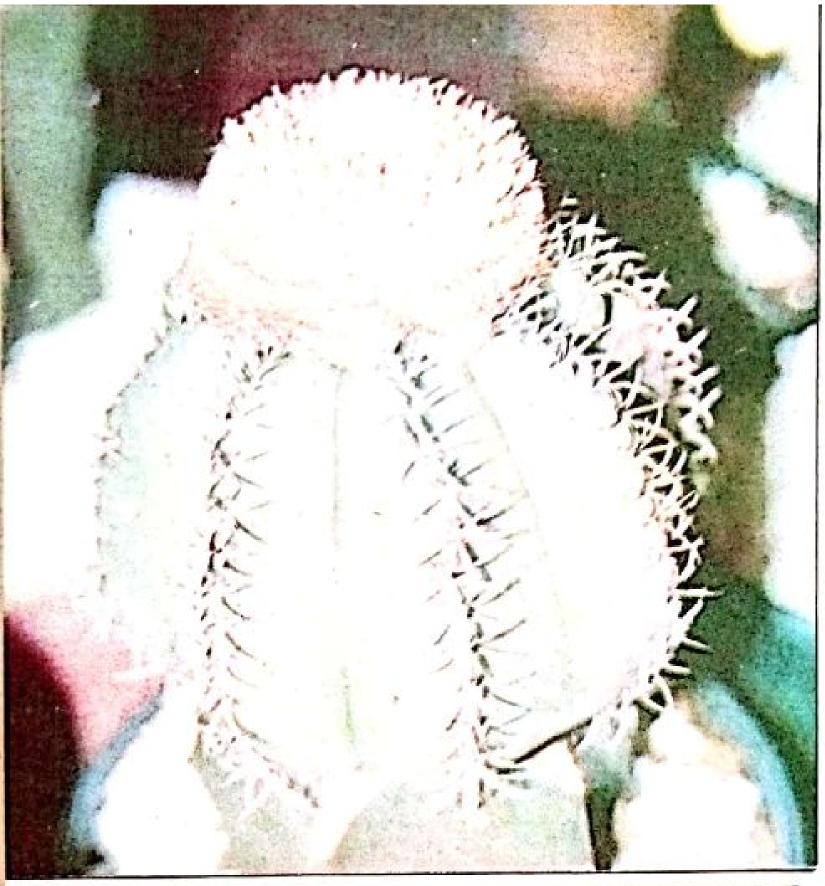
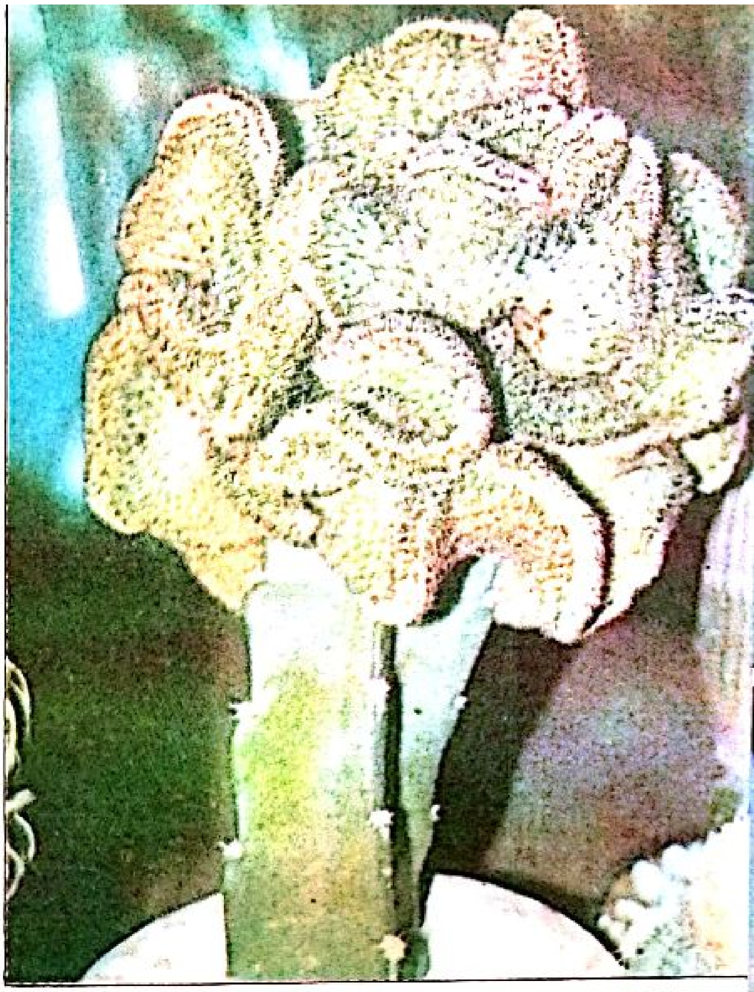
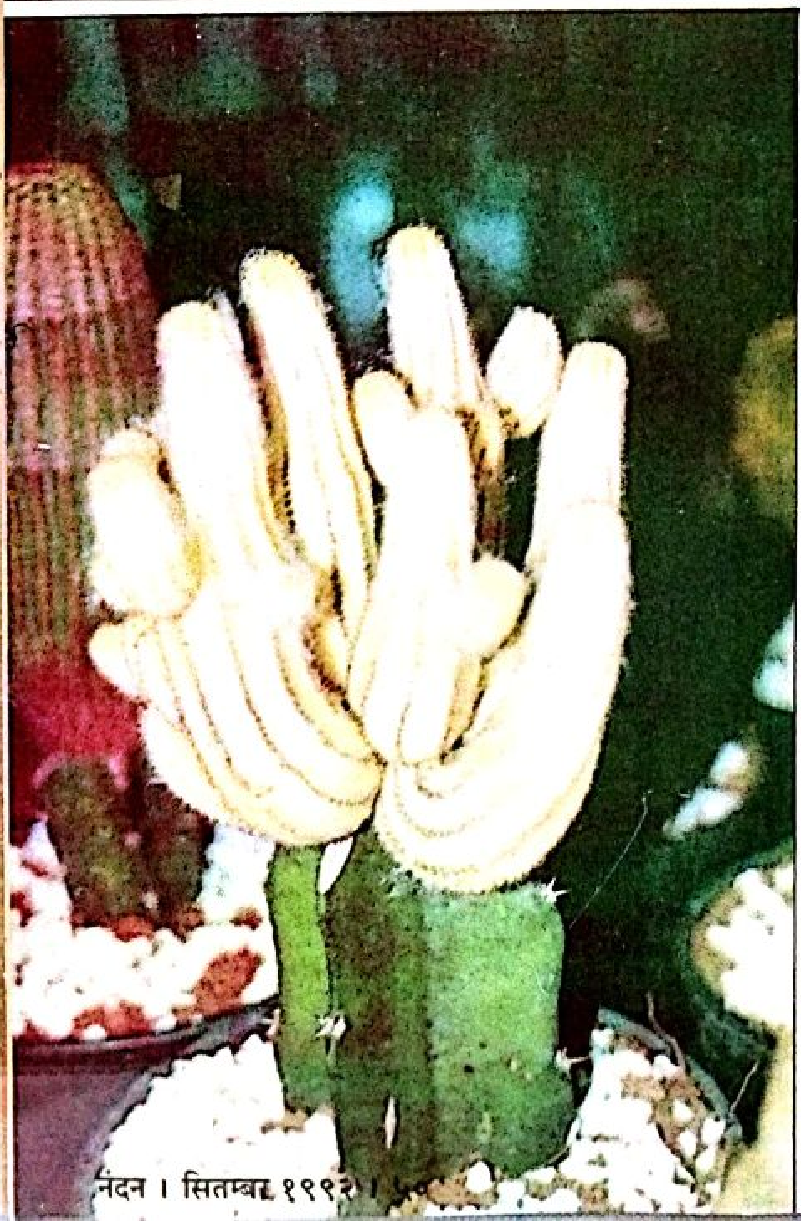
राजा को दाल में कुछ काला लगा। तुरंत कड़ाई से जांच-पड़ताल कराई। पता चला कि गांववाले जमींदार से बेहद दुखी थे, मगर मुंह बंद रखने पर विवश थे। राजा के आने की सूचना पाकर जमींदार ने हर गांववाले को चेतावनी दे दी थी कि यदि राजा से कोई शिकायत की, तो बुरा होगा।

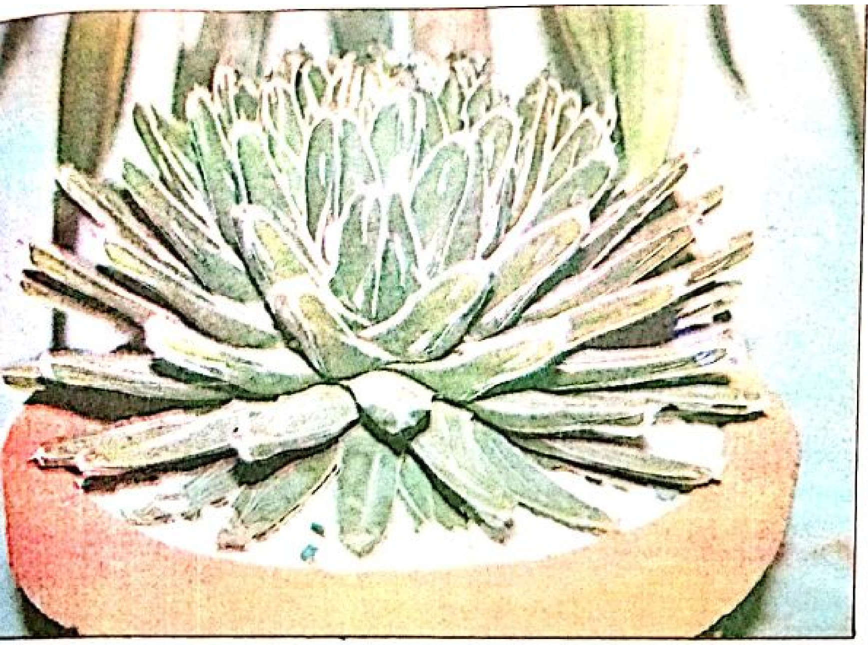
राजा ने जमींदार से जमींदारी छीन ली। फिर तेनालीराम से पूछा— "तुम्हें यह संदेह कैसे हुआ कि गांववाले जमींदार के दबाव में हैं?"



"महाराज"— तेनालीराम बोला— "जब भी आपने शिकायत बताने के लिए कहा, हर गांववाले की डरी-सहमी निगाहें जमींदार की ओर उठ जाती थीं। इसी से।"

"वाह!"— राजा कृष्णदेव राय ने कहा। फिर अपने गले से मोती-माला उतारकर तेनालीराम के गले में डाल दी।



कैक्टस

कांटों में खिलते हैं फूल

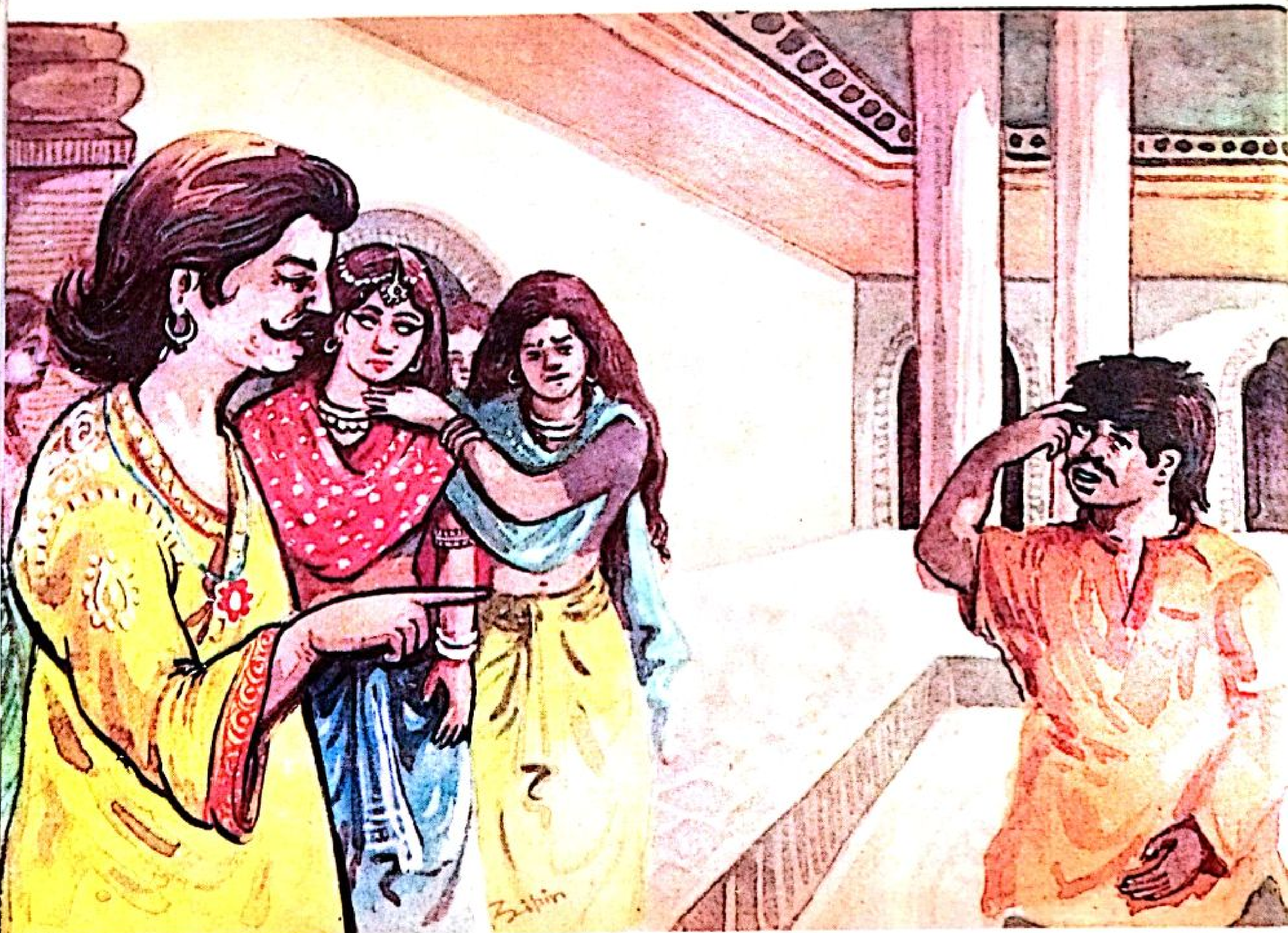
चित्र—इंद्रजीत जुनेजा











दूसरी मुनादी

—कर्मसिंह पठानिया

मोकांल देश की राजकुमारी बड़ी ही सुंदर थी। मां-बाप की इकलौती संतान होने के कारण बड़े लाड़-प्यार से पली थी, मगर अंधी थी।

मेरी नेत्रहीन बेटी से कौन ब्याह करेगा— राजा इसी चिंता में घुला जा रहा था। एक दिन रानी ने कहा— "आप योग्य वर की तलाश तो करके देखिए।"

राजा ने रानी की बात मानकर घोषणा कराई, तो चकित रह गया। राजकुमारी से विवाह करने के लिए अनेक युवक तैयार हो गए। उनमें राजकुमार भी थे।

अब उसकी चिंता का विषय था कि नेत्रहीन होने के बावजूद भी इतने योग्य युवक राजकुमारी से विवाह क्यों करना चाहते हैं?

उसे संदेह हुआ कि कहीं वे राज्य और धन के लालच में तो विवाह नहीं कर रहे हैं?

राजा ने बहुत सोच कर दूसरी मुनादी कराई — राजकुमारी की शादी उसी व्यक्ति से होगी, जो सच्चे मन से उसे चाहता होगा। इस बात को परखने के लिए राजा ने एक दिन नियत भी कर दिया।

निश्चित दिन दूर-दूर से राजकुमार मोंकाल की राजधानी में आने लगे। सभी सच्चे मन से राजकुमारी को चाहने की बात कर रहे थे। किंतु राजा संतुष्ट न था। तभी एक साधारण-सा युवक आया। बोला— "महाराज, मैं बहुत गरीब हूं। इसलिए आपकी बेटी को धन दौलत, सुख-आराम तो नहीं दे सकता। पर मेरे पास दो आंखें हैं। मैं अपनी एक आंख राजकुमारी को देना चाहता हूं। क्योंकि इसकी इन्हें बेहद जरूरत है। आप राज वैद्य को आदेश दें कि वह मेरी एक आंख निकालकर आपकी नेत्रहीन बेटी की आंख में लगा दें।" इतना सुनते ही राजकुमारी ने वरमाला उस युवक के गले में डाल दी। •

भागा ठग

—संदीप कपूर

किसी गांव में श्रीधर नाम का एक ठग रहता था। उसकी ठगी से सारे गांव वाले परेशान थे। एक बार श्रीधर ठगी करने की सोच, शहर में पहुंच गया। शहर में वह एक घर के पिछवाड़े से होकर निकल रहा था कि उसे घर के भीतर बातचीत सुनाई दी। श्रीधर दबे पांव दीवार के पास पहुंचा। उसमें बनी खिड़की की झिरी से आंख-कान लगा, बातें सुनने लगा। भीतर एक सेठ अपनी पत्नी से कह रहा था—"लक्ष्मी, मैं एक जरूरी काम से बाहर जा रहा हूं। कुछ देर बाद मेरा मित्र विमल कुछ रुपए देने यहां आएगा। तुम उससे वे रुपए लेकर रख लेना।"

यह कहकर सेठ चला गया। उधर जब श्रीधर ने सेठ की बात सुनी, तो वह खुशी से उछल पड़ा। मन ही मन योजना बनाकर वह सेठ के घर के मुख्य दरवाजे के पास जाकर खड़ा हो गया। थोड़ी देर के बाद वहां एक व्यक्ति पहुंचा। उसने श्रीधर से पूछा—"क्यों भाई, क्या सेठ रतनलाल का घर यही है ?"

—"जी, हां। पर सेठ जी तो सेठानी के साथ कहीं बाहर गए हुए हैं। शायद आप सेठ जी के मित्र विमल हैं ?"

"हां,, लेकिन तुम्हें कैसे पता ?"—विमल ने पूछा, तो श्रीधर ने कहा—"मैं सेठ जी का मुनीम हूं। वह जाते वक्त मुझसे कहकर गए हैं कि आप जब यहां आएं, मैं आपसे रुपए ले लूं।"

विमल ने श्रीधर को मुनीम समझकर रुपए दे दिए तथा वापस चला गया। रुपए अपनी जेब में रख, श्रीधर ने सेठ के घर का दरवाजा खटखटाया। सेठानी के दरवाजा खोलते ही वह बोला—"नमस्कार, लक्ष्मी भाभी। मैं विमल हूं, सेठ जी का दोस्त।"

श्रीधर के मुख से अपना नाम सुनकर सेठानी आश्वस्त हो गई। उसने श्रीधर को विमल समझकर घर के भीतर बुला लिया। कुछ देर इधर-उधर की बातचीत करने के बाद श्रीधर ने सेठानी से



कहा—"भाभी जी, मैं रतन को देने के लिए एक हजार रुपए ला रहा था कि रास्ते में कुछ लुटेरों ने वे रुपए छीन लिए। मैं बहुत शर्मिंदा हूं।" कहते-कहते श्रीधर नाटकीयतापूर्ण ढंग से रोने लगा। उसकी बुरी हालत जान, सेठानी ने पसीजते हुए कहा—"आप दुखी न हों भाई साहब। रुपए फिर कभी आ जाएंगे। आप अभी खाना खाकर कुछ देर विश्राम करें।"

"विश्राम कहां, भाभी जी ? मुझे तो अब यह चिंता है कि मैं अपने शहर कैसे जाऊंगा। क्या आप मुझे कुछ रुपए दे सकती हैं ? मैं वहां पहुंचकर रतन को सारे रुपए लौटा दूंगा।"—श्रीधर ने दयनीयता से कहा।

"क्यों नहीं ?"—सेठानी ने कहा और श्रीधर को चार सौ रुपए लाकर दे दिए। श्रीधर ने वे रुपए भी अपनी जेब में रखे और फिर चैन से सो गया। शाम को वह सेठानी से आज्ञा लेकर घर से निकल गया।

उधर सेठ रतनलाल का काम जल्दी पूरा हो गया और वह उसी दोपहर को वापस चल पड़ा। राह में उसे अपना मित्र विमल दिखाई दिया। उसने आवाज देकर उसे रोका। बातचीत के दौरान विमल के मुंह से मुनीम को रुपए देने की बात सुनकर सेठ चौंक उठा। वह बोला—"पर विमल, मेरा मुनीम तो छह दिन की छुट्टी पर है और उसे गए अभी दो दिन ही हुए हैं। तुम जरा उस नकली मुनीम का हुलिया तो बताओ।"

जब विमल ने उसका हुलिया बयान किया, तो सेठ ने अपना सिर पीट लिया। वह समझ गया कि वह कोई ठग है। विमल से विदा ले, सेठ रतनलाल वहीं के एक बाजार में गया। मुखौटे की दुकान से उसने नकली मूंछ-दाढ़ी खरीद ली। वेश बदलकर अपने घर की तरफ चल पड़ा।

वह अपने घर से कुछ दूर था कि उसे घर से एक आदमी निकलकर आता दिखाई दिया। उसके हुलिए से सेठ ने जान लिया कि यह वही ठग है। जैसे ही श्रीधर उसके पास से निकला, सेठ ने झपटकर उसे पकड़ लिया।

"कौन हो तुम ?"—श्रीधर अपने को एक अजनबी की पकड़ में देखकर चिल्लाया।

"मैं कोतवाल का गुप्तचर हूं। तुम्हारे बारे में अनेक शिकायतें सुनकर कोतवाल साहब ने मुझे तुम्हारे पीछे लगाया था। मैंने आज तुम्हें ठगी करते रंगे हाथों पकड़ लिया है।"—सेठ ने आवाज बदलकर कहा।

"मुझे छोड़ दीजिए साहब। आप मुझसे जो चाहें, ले लीजिए।"—श्रीधर ने गिड़गिड़ाकर कहा। सेठ ने उससे सारे रुपए ले लिए और भविष्य में फिर कभी ठगी न करने की चेतावनी देकर जाने के लिए कहा।

श्रीधर सिर पर पांव रख, वहां से भाग निकला। सेठ सारे रुपए अपनी जेब में रख, अपनी नकली मूंछों पर ताव देता, घर की तरफ चल पड़ा। ●



सेवक का भरोसा

— कनक

सिकन्दर अनोखा वीर था। जिस ओर भी सेना को लेकर बढ़ता, बढ़ता ही चला जाता। वह अपनी सेना के साथ फारस पर चढ़ाई करने जा रहा था। राह में बीमार पड़ गया। देखते ही देखते उसका हाल बेहाल हो गया। लगने लगा— अब मरा, तब मरा।

सिकन्दर का विश्वासपात्र सेवक फिलिप था। वह अपने मालिक की यह पीड़ा देख नहीं पा रहा था। उसने सिकन्दर से कहा— "मालिक, आप परेशान न हों। मैं अभी दवा तैयार करके लाता हूं। उससे आप ठीक हो जाएंगे।"

फिलिप जानता था कि अगर सिकन्दर ठीक न हुआ, तो उसे लोग हत्यारा कहेंगे। पर उसने सोचा कि इस घड़ी में, स्वामी का साथ न देना पाप होगा।

फिलिप चला गया। सिकन्दर एक-एक मिनट गिनकर दवा की प्रतीक्षा करने लगा। तभी सिकन्दर के पास एक सैनिक गुप्त पत्र लेकर आया। एक बड़े अधिकारी ने लिखा था— 'फारस का बादशाह दवा में विष देकर आपको मारना चाहता है। इसके लिए फिलिप को आधा राज्य और राजकुमारी की डोली का लालच दिया गया है।'

सिकन्दर ने पत्र पढ़ा। उसे चुपचाप तकिए के नीचे रख लिया। थोड़ी देर में फिलिप दवा का प्याला लेकर वहां आया। यूनानी सेना के बड़े-बड़े अधिकारी वहां मौजूद थे। सिकन्दर ने एक हाथ से पत्र निकाल कर फिलिप को दिया। दूसरे हाथ में प्याला लेकर दवा पीने लगा।

फिलिप ने पत्र पढ़ा, तो हैरान और परेशान हो उठा। उसकी आंखों में आंसू भर आए। बोला— "मालिक, यह सब झूठ है। मैंने तो आपको अच्छी से अच्छी दवा दी है। ईश्वर पर मुझे भरोसा है।"

दवा ने असर किया। सिकन्दर की हालत सुधर गई। कुछ देर बाद वह उठकर बैठ गया। फिलिप से बोला— "मेरे मित्र, मुझे तुम पर भरोसा था। मैंने विश्वास करके दवा ली और मेरा विश्वास खरा उतरा।" ●

नंदन ज्ञान पहेली

१०००रु. पुरस्कार
कोई शुल्क नहीं

नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक का होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—**सम्पादक, 'नंदन' (ज्ञान-पहेली), हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१**
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

बाएं से दाएं

१. सर्कस में— का कमाल देखा ? (तोते/तोप)

२. तुम किस— की बात कर रहे थे ? (टोपी/टोली)

४. अहा, कितनी सुंदर है यह— ! (शाम/शाख)

६. वत्स, मुझे— से यह ज्ञान प्राप्त हुआ है। (गुफा/गुरु)

७. — ने राजकुमार को घायल कर दिया। (शेर/तीर)

८. — के गर्जन से जंगल कांप उठा। (मेघ/बाघ)

९. — उदास क्यों है ? (मां/तू)

११. मुझे तो— ही प्रिय है बहू। (चांदी/खादी)

१२. कभी इस कपड़े की बड़ी शान थी !

ऊपर से नीचे

३. —, कोई आ रहा है। (भागो/जागो)

५. देखो, कबसे वह — रहा है। (घूर/घूम)

१०. भारत की प्राचीन सात पुरियों में से एक।

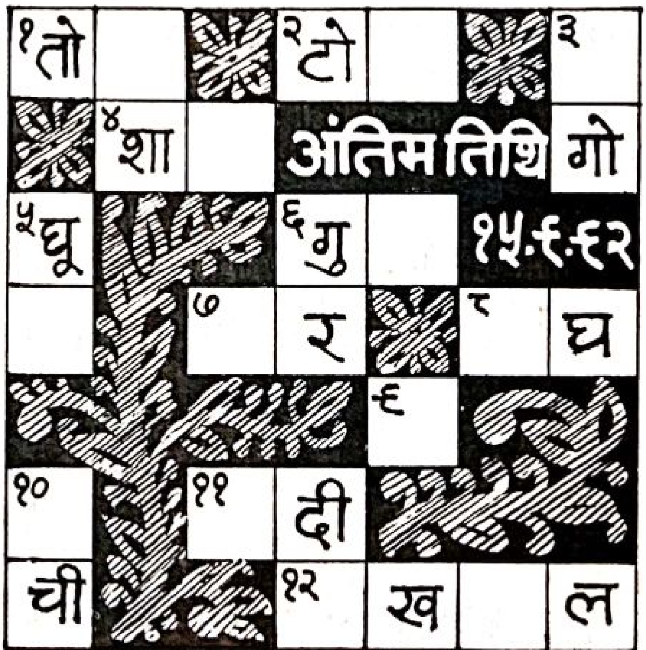
---------- काटिए ----------

नंदन ज्ञान-पहेली : २८५

नाम ____________________

उम्र ________ पता ____________________

____



नं. ज्ञा. प. २८५

झोंपड़ी में उजाला

—उमा शर्मा

नगवा छितारा में एक किसान रहता था। उसका नाम रामदास था। उसके पास घर के पिछवाड़े थोड़ी-सी जमीन थी। उस पर फल-फूल, सब्जी उगाकर बड़ी मुश्किल से वह अपनी जीविका चला पा रहा था।

रामदास शिव का अनन्य भक्त था। अपने घर के फूल टोकरी में लेकर नित्य शिव-मंदिर के बाहर बैठता था। उसकी पत्नी सब्जी का टोकरा लेकर जाती।

रामदास का नियम था कि वह एक फूल माला शिव की प्रतिमा पर चढ़ाने के लिए मुफ़्त देता था। यह बात उसकी पत्नी को पसंद नहीं थी। वह अक्सर कहती—"तुम रोज-रोज एक माला मुफ़्त में बांटते हो। इससे तुम्हें क्या मिला ?"

रामदास शांत स्वर में कहता—"जिस प्रकार ईश्वर की पूजा निरर्थक नहीं जाती, उसी प्रकार मेरी माला का पुण्य अवश्य मिलेगा। देखना, शिवजी हमारी एक दिन अवश्य सुनेंगे।"

"हूं।"—कहकर पत्नी उपेक्षा से रामदास को देखने लगती।

एक दिन रामदास बीमार पड़ गया। वह सुबह अपने खेत-क्यारी में नहीं जा सका। कोई उससे पहले ही सारे फूल तोड़कर ले गया। केवल थोड़ी-सी कलियां मिलीं। उन्हें गूंथकर उसने एक छोटी-सी माला तैयार की। धीरे-धीरे चलकर मंदिर की सीढ़ियों पर जाकर बैठ गया।

आज उसकी टोकरी खाली थी। ग्राहक आते और लौट जाते। तभी एक बालक दौड़ता हुआ आया। रामदास से बोला—"आज तुमने बहुत देर कर दी। यह माला मुझे दोगे ? मेरे पास पैसे नही हैं।"

बच्चा माला ले, मंदिर के अंदर चला गया। रामदास उसे देखता रहा। बच्चे ने माला अपने गले में डाल ली थी।

खाली टोकरी उठा, रामदास घर लौट आया। आज उसे एक पैसे की भी आमदनी नहीं हुई थी।

शाम को उसकी पत्नी सब्जी बेचकर लौटी तो दुखी थी, क्योंकि लौटते समय एक बच्चे ने उसकी पोटली के पैसे नदी में फेंक दिए। रामदास के घर चूल्हा नहीं जला।

बीमार रामदास कराह रहा था—"मेरी माला उस बच्चे ने पहन ली। मेरा नियम भंग हो गया।"

अचानक रामदास की पत्नी ने टोकरी से कपड़ा उठाकर देखा, तो दंग रह गई। सफेद मोतियों की माला दमक रही थी। तेज प्रकाश से कमरा नहा उठा। उसे याद आया, ठीक ऐसी ही माला उस बच्चे के गले में थी, जिसने उसके पैसे नदी में फेंके थे। बोला था—'हिसाब बराबर ?'

वह समझी नहीं, तो बच्चे ने ही बताया था—'बेईमान की सूझ छोटी होती है, ईमानदारी का हिसाब लम्बा।"

रामदास से छिपाकर उसने वह माला अपने बिस्तर के नीचे छिपा दी। लोभ के कारण वह रामदास को इस बारे में कुछ नहीं बताना चाहती थी। लेकिन माला की चमक फिर भी बाहर निकल रही थी। फिर उसने वह माला माटी की हांडी में रखी, तो हांडी जगमगाने लगी। जैसे-जैसे वह स्थान बदलकर माला छिपाने की कोशिश करती, उसका प्रकाश और तेज हो जाता।

रामदास की पत्नी थोड़ी देर में पागलों की तरह माला को छिपाने के लिए भागने-दौड़ने लगी।

रामदास की आंख खुली। उसने देखा, पूरी झोंपड़ी में तेज प्रकाश भर गया है और वही बालक फूल माला पहने, हाथ में त्रिशूल-डमरू लिए मुसकरा रहा है।

"यह लो रामदास अपनी माला। जितने दिन से तुमने माला देने का नियम बनाया था, उतने ही मोती इस माला में पिरोए हैं।"—बालक ने कहा। और माला खुद व खुद पत्नी के हाथ से रामदास के पास चली आई।

रामदास की पत्नी का सिर शर्म से झुक गया। उसने पति को सब-कुछ बताकर क्षमा मांग ली। ●

जादुई जंजीर

—नागेश पांडेय 'संजय'

जापान की नोरिकुडा पहाड़ियों की तलहटी में बसा था एक गांव । गांव के उत्तर में एक विशाल नदी थी । गांववालों को पीने के लिए इसी नदी से पानी लाना पड़ता था ।

इसी गांव में रहता था एक साहसी मछुआरा—चेनिकितो । वह बड़े सीधे, सरल स्वभाव का था । वह सुबह-सवेरे नदी से मछलियां पकड़ने के लिए जाल लेकर निकल पड़ता । सांझ ढलने तक अपने काम में जुटा रहता ।

नदी के दूसरे छोर की ओर एक बड़ा ही सुंदर सरोवर था । इस सरोवर में परियां नहाने आया करती थीं । इन परियों में एक परी थी—मिजो । वह बड़े ही दयालु स्वभाव की थी ।

मिजो ने जब चेनिकितो की लगन को देखा, तो बहुत प्रभावित हुई । सीधे-सादे इंसानों की मदद कर उसे बड़ा आनंद मिलता था । एक दिन मिजो ने बुढ़िया का वेश धरा और पहुंच गई चेनिकितो के पास ।

—"बेटा, मुझे जोरों की भूख लगी है । क्या तुम मुझे कुछ खाने को दोगे ?"—बुढ़िया के वेश में मिजो ने पूछा ।

—"हां, क्यों नहीं ! मेरे पास फली की सब्जी और कुछ रोटियां हैं । आप इन्हें खा लीजिए !"

"अच्छा ।"—कहकर मिजो ने रोटियां खाईं । फिर काफी देर तक चेनिकितो से बातें करते रहने के बाद उसे एक लोहे की छोटी-सी जंजीर देकर कहा—"यह मुसीबत के समय तुम्हारे काम आएगी । संभालकर रखो ।" इससे पहले कि चेनिकितो कुछ कह पाता, बुढ़िया गायब हो गई ।

दिन बीतते गए । मिजो परी धरती पर नहीं आई । परीलोक की रानी ने उस पर रोक लगा दी थी । मिजो चाहते हुए भी अब धरती पर नहीं आ सकती थी ।

एक बार न जाने कहां से एक विशालकाय मगरमच्छ नदी में आ गया । चेनिकितो के साथ-साथ गांव वालों के सामने भी समस्या खड़ी हो गई । पानी न मिलने के कारण सबका बुरा हाल था । मगर नदी तक जाने की किसी की भी हिम्मत नहीं हो पा रही थी ।

मिजो की दी हुई छोटी-सी जंजीर चेनिकितो के पास रखी हुई थी । परंतु वह तो उसके बारे में बिल्कुल ही भूल चुका था ।

परी लोक से मिजो ने जब चेनिकितो के गांव का यह हाल देखा, तो उसे बहुत दुःख हुआ । वह अपनी रानी से नजर बचाकर धरती पर आ गई । उसने चेनिकितो को उस जंजीर की याद दिलाकर मगरमच्छ का सामना करने को कहा ।

आधी रात का समय था, मगर चेनिकितो तुरंत नदी की ओर चल पड़ा । ज्यों-ज्यों नदी करीब आती जा रही थी, त्यों-त्यों जंजीर की लम्बाई और चमक बढ़ती जा रही थी ।

जंजीर लेकर चेनिकितो नाव में बैठ गया । मिजो उसे खेने लगी । जल में हलचल देख, मगरमच्छ आग बबूला हो उठा । उसकी आंखों से क्रोध भरी चिंगारियां फूट रही थीं । इससे पहले कि मगरमच्छ कुछ करने की सोच पाता, चेनिकितो ने जंजीर उसके सिर पर दे मारी ।

तीन वारों में मगरमच्छ का काम तमाम हो गया । उधर मिजो को परीलोक में न देख, परीलोक की रानी और अन्य परियां उसे धरती पर ढूंढ़ने निकल पड़ीं । उन्हें ज्यादा दूर नहीं जाना पड़ा । नदी के किनारे ही मिजो व चेनिकितो बैठे कुछ बातें कर रहे थे ।

यह देख, परी रानी का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुंच गया । पर जल्दी ही उसका गुस्सा काफूर हो गया । परी रानी ने दोनों को आशीर्वाद दिया और वापस परी लोक चली गई ।

गांव वाले मगरमच्छ से छुटकारा पाकर खुश थे । चेनिकितो भी अपनी नवेली पत्नी मिजो के साथ खुशी-खुशी रहने लगा । ●



चाल बेचाल

—उषा विभाकर

अनंतपुर में राजा विक्रम प्रताप राज्य करते थे। राजकाज चलाने में वह अपनी अनुभवी और कुशल मंत्रि-परिषद से भी सलाह मशविरा करते थे। प्रजा खुशहाल और सुखी थी। खजाना भरा था। ऐसे में एक दिन राज्य के खजाना मंत्री की मृत्यु हो गई। राजा परेशान रहने लगे, क्योंकि धन-सम्पत्ति के मामलों को निपटाना आसान काम नहीं था। उसके लिए विशेष प्रकार की सूझबूझ और दक्षता की जरूरत थी। राजा जल्दी से जल्दी नया खजाना मंत्री नियुक्त करने की योजना बनाने लगे। उनका विचार था कि यह भार राज्य ही के किसी व्यक्ति को सौंपा जाए जिसको राज्य और प्रजा की समस्याओं की पूरी जानकारी हो। इससे वह आसानी से सही फैसले करने में कामयाब हो सकेगा।

अतः राजा ने मुनादी करवा दी, राज्य का प्रत्येक नागरिक इस पद के लिए अपनी योग्यता सिद्ध करने के लिए अगली पूर्णमासी को शाम पांच बजे खुले दरबार में हाजिर हो सकता है। जो नागरिक सबसे अधिक योग्य सिद्ध होगा, उसे खजाना मंत्री बना दिया जाएगा।

मुनादी सुनते ही राज्य का प्रत्येक नागरिक खजाना मंत्री बनने के सपने देखने लगा। लेकिन योग्यता सिद्ध करने की बात ध्यान में आते ही सबके छक्के छूट जाते थे।

आखिरकार पूर्णमासी का दिन भी आ गया। सुबह से ही सारे राज्य में हलचल दिखाई देने लगी। खुले दरबार की सजावट देखने के लिए लोगों का तांता लगा हुआ था। चारों तरफ खुसर-फुसर हो रही थी। मंत्री कौन चुना जाएगा, इसका अंदाजा कोई नहीं लगा पा रहा था।

शाम होते-होते खुला दरबार लोगों से खचाखच भर गया। लेकिन यह क्या! जहां उम्मीदवारों को बैठना था, वहां कुछ ही व्यक्ति थे। न जाने क्यों अधिक उम्मीदवार नहीं आए थे। उन्हीं में किसी किसान का बेटा कृपाशंकर भी था। वहां मौजूद भीड़ यह नहीं समझ पा रही थी कि कृपाशंकर इतनी बड़ी

जिम्मेदारी किस प्रकार संभाल सकेगा।

कृपाशंकर से अनेक पेचीदा प्रश्न पूछे गए। उसने सभी प्रश्नों का सही और सटीक उत्तर देकर राजा और उपस्थित भीड़ को दांतों तले उंगली दबाने के लिए मजबूर कर दिया। सभी उसकी प्रशंसा करने लगे। राजा ने उसकी सूझ-बूझ से प्रभावित होकर उसे मंत्री बनाने का फैसला कर लिया।

लेकिन मंत्रिपरिषद के अन्य सदस्य राजा के इस फैसले से खुश नहीं हुए। उन्हें यकीन नहीं हो पा रहा था कि एक किसान का बेटा इतनी बड़ी जिम्मेदारी किस तरह संभाल पाएगा।

उनके सामने उलझन यह थी कि राजा को अपना फैसला बदलने के लिए किस तरह तैयार किया जाए? इसके लिए उन्हें राजपुरोहित से योग्य व्यक्ति नजर नहीं आया। उन्होंने उससे सांठ-गांठ कर, राजा को सलाह दी कि कृपाशंकर को तेरहवें दिन मंत्री बनाना शुभ होगा। राजा ने मुसकराकर यह प्रस्ताव मंजूर कर लिया।

दरअसल, राजा के अन्य मंत्री उन तेरह दिनों के दौरान एक ऐसा खजाना मंत्री चुनना चाहते थे, जो उनके इशारों पर चल सके। इसके लिए उन्होंने गुप्त रूप से एक सभा की। लम्बी बहस के बाद सर्वसम्मति से राजा के सामने राज्य के बड़े साहूकार जगमल के पुत्र चन्द्रकांत का नाम पेश करने का फैसला किया गया।

अगले दिन राजदरबार में सारे मंत्री राजा के सामने सिर झुकाकर खड़े हो गए। उनमें से एक ने हाथ जोड़कर राजा से निवेदन किया—"राजन्! राज्य की खुशहाली और प्रजा के हितों को ध्यान में रखते हुए, हमारी आपसे एक प्रार्थना है। राज्य के धन-सम्पत्ति के मामलों को सुलझाने के लिए विशेष प्रकार की सूझबूझ और दक्षता की बहुत जरूरत है। इसलिए बहुत सोच-विचार के बाद, हम सबकी यह राय है कि राज्य के बड़े साहूकार जगमल के पुत्र चंद्रकांत को खजाना मंत्री बनाना उचित होगा। वह इन मामलों में बहुत सुलझा हुआ और अनुभवी है।"

चतुर राजा मंत्रियों की बात भांप गए। लेकिन उन्होंने खामोश रहना ठीक समझा। राजा की चुप्पी से मंत्रियों ने यह अंदाजा लगाया कि उनका प्रस्ताव राजा को मंजूर नहीं है। लेकिन वे खामोश बैठने वाले कहां



थे ? उन्होंने राजा पर दबाव डालने की चाल चली ।

कुछ ही दिनों में कर की अदायगी पूरी न होने के कारण खजाना खाली होने लगा । राजा को मंत्रियों की चाल समझने में देर नहीं लगी । लेकिन उन्होंने किसी तरह अपनी चिंता जाहिर नहीं होने दी ।

इसी बीच एक त्योहार आया । राजा के सम्मान में मंत्रियों और साहूकारों ने मिलकर एक शानदार रात्रि-भोज दिया । वास्तव में खजाना मंत्री की नियुक्ति के संबंध में राजा पर दबाव डालने की यह आखिरी चाल थी ।

राजा का उस भोज में शामिल होना स्वाभाविक था । मेहमानों द्वारा अपना-अपना स्थान ग्रहण करने से पहले खाने की मेज पर अचानक एक बिल्ली आ चढ़ी । उसके सिर पर एक दीपक जल रहा था । उसने मेज पर अनेक तरह के करिश्मे दिखाए । मेहमान 'वाह ! वाह !' करने लगे,लेकिन राजा ने इस बार भी कुछ नहीं कहा । बिल्ली के करतब खत्म होने से जरा पहले उन्होंने इशारे से अपने एक सेवक को बुलाकर उसके कान में कुछ कहा ।

सेवक ने राजमहल से एक मोटा-ताजा कबूतर लाकर मेज पर छोड़ दिया । बिल्ली और चकाचौंध करने वालाी रोशनी की परवाह किए बिना कबूतर ने फुदक-फुदक कर बिल्ली के सिर पर से दीपक उतार कर राजा के सामने रख दिया । उसके पंजों का कमाल देखकर सब अचंभे में पड़ गए । बिल्ली सहमकर एक कोने में जा बैठी । तमाम उपस्थित मेहमान और मंत्री



एक-दूसरे का मुंह ताकने लगे । यह उनकी एक और हार थी ।

चतुर राजा उनके मन की बात भांप गए । वह अपने स्थान से उठे । शांत स्वर में बोले—"मुझे इस भोज और बिल्ली के करतबों की असलियत पूरी तरह मालूम है । इसीलिए मैंने राजमहल से यह कबूतर लाने का हुक्म दिया था । शायद अब आप सब-कुछ समझ गए होंगे ।"

राजा ने सेठ जगमल की सूझ-बूझ की भी बहुत प्रशंसा की । उन्होंने यह स्वीकार किया कि जब वह एक बिल्ली को इतना सधा सकते हैं, तो उनका पुत्र कितना होनहार होगा । लेकिन उन्होंने यह बात भी साफ की कि एक सधाया हुआ कबूतर बिल्ली को भी मात दे सकता है । यह तो केवल सधाने की कला का कमाल है ।

राजा का मत था कि यदि एक किसान का बेटा होने पर भी कृपाशंकर इतना समझदार है, तो सिर्फ अपनी लगन और मेहनत के कारण । इसके विपरीत, चंद्रकांत विरासत और माहौल के कारण इतना चतुर है ।

राज्य के मंत्रियों और साहूकारों की संतुष्टि के लिए राजा ने एक काम और किया । दोनों को बारी-बारी से छः-छः महीनों के लिए कामचलाऊ खजाना मंत्री बनाने की घोषणा कर दी । यह भी स्पष्ट कर दिया कि इस दौरान दोनों को अपनी-अपनी योग्यता साबित करने का पूरा मौका मिलेगा । एक वर्ष के बाद राज्य की जनता अपने खजाना मंत्री का खुद निर्णय करेगी ।

सभी ने राजा के फैसले का स्वागत किया । राजा के होठों पर अजीब-सी मुस्कान देखने लायक थी ।

एक वर्ष बाद जनता ने कृपाशंकर को स्पष्ट बहुमत से खजाना मंत्री चुना । चंद्रकांत के चेहरे पर परेशानी की झलक दिखाई देनी लाजमी थी । लेकिन राजा विक्रम प्रताप ने सूझ-बूझ और चतुराई से काम लेते हुए अपने चुनाव की लाज रखी । साथ ही सबके संदेहों का समाधान भी कर दिया । चंद्रकांत को न्याय विभाग सौंप दिया । ●

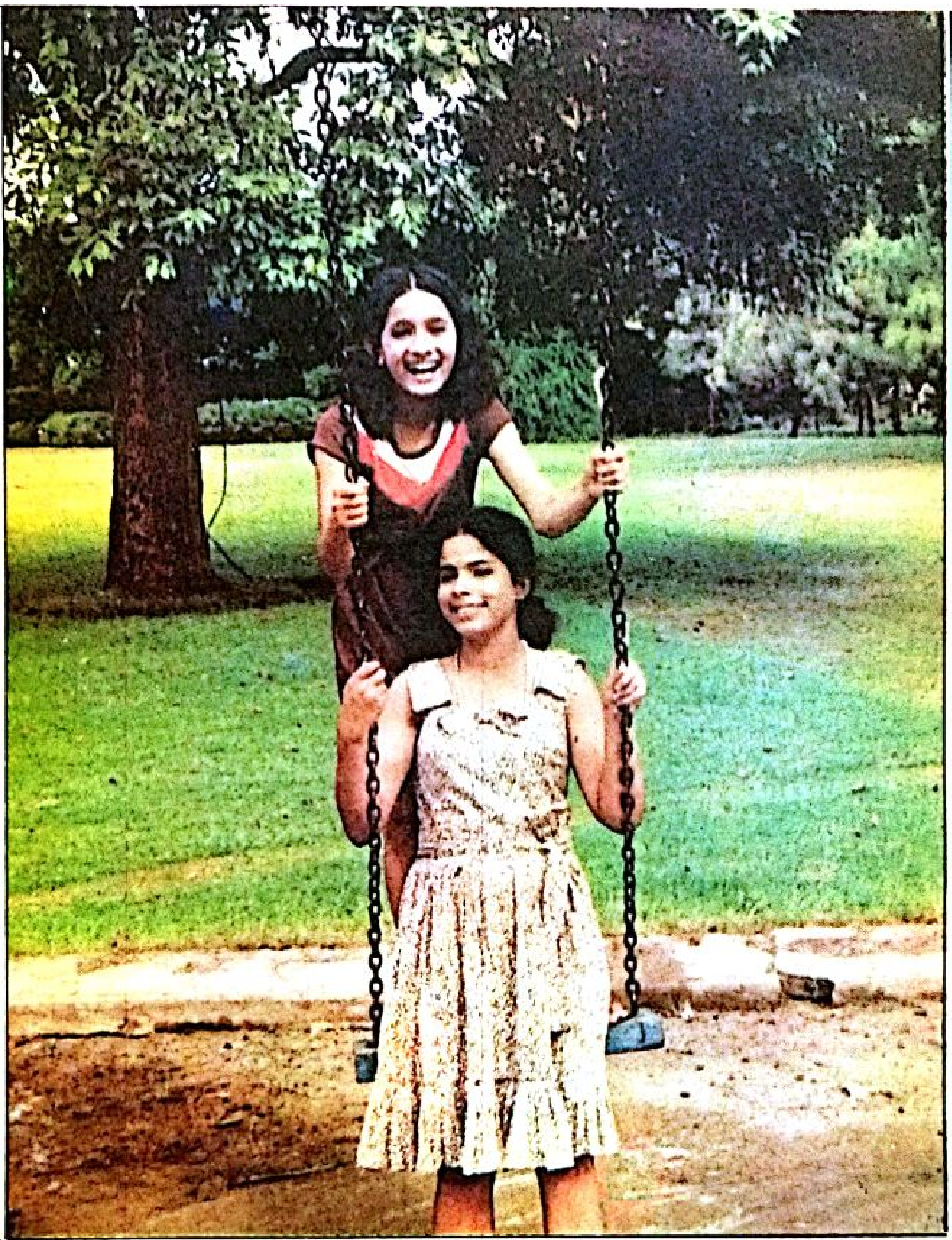

चीटू-नीटू
इतने बड़े हो गए हो, अब तो अपना काम खुद किया करो
मां ठीक कहती हैं। चलो, अपने कपड़े खुद धोते हैं
अरे, साबुन की टिकिया कहां गई ?
तेरे हाथ से ही तो फिसल कर गटर में चली गई है। मां को पता चला तो...
तू तो छत पर कपड़े सुखा रहा था, नीचे क्यों चला आया, अगर बंदर...
वह तेरी फ्रॉक ले गया, यही तो बताने आया हूं
जलने की बदबू कहां से आ रही है ?
कुछ नहीं मां, चीटू ने प्रेस से अपनी निकर जला ली है
पहले ही दिन तुमने फ्रॉक, निकर और साबुन की टिकिया का कबाड़ा कर दिया। अपने पापा को आने दो...
अब पापा से सजा दिलवाने की जरूरत नहीं, यह काम भी हम खुद कर लेंगे

शीर्षक बताइए

इस चित्र को ध्यान से देखिए। इस चित्र के अनेक शीर्षक हो सकते हैं। आप भी सोचिए कोई सुंदर-सा छोटा शीर्षक। उसे पोस्टकार्ड पर लिखकर १० सितम्बर'९२ तक **शीर्षक बताइए, नंदन मासिक, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१** के पते पर भेज दीजिए। चुने हुए शीर्षकों पर पुरस्कार दिए जाएंगे।

परिणाम : नवम्बर '९२

चित्र : सुरेश ऋतुपर्ण





पुरस्कृत चित्र

सिद्धार्थ, आयु ७ वर्ष, पी-५ प्रसाद नगर नई दिल्ली-११०००५

इनके चित्र भी पसंद आए—सुनील भाटिया, ग्वालियर; कु. सुरभि अग्रवाल, पंचकूला (हरि.); मनोज बोहरा, नई दिल्ली; कु. नीरज चावला, रोहतक; सुरभि सिंह, मुजफ्फरनगर

हंसा और रुला

बहुत समय पहले एक गांव में रुला और हंसा नाम के दो धनवान मित्र रहते थे। दोनों में बहुत पक्की दोस्ती थी। रुला और हंसा अपने नाम के अनुसार ही शरीर वाले थे। रुला देखने में इतना भयानक कि जो देखता, देखते ही रो देता। हंसा कद में इतना छोटा कि जो देखता, वह हंस देता। लेकिन उन्हें कोई अपना दोस्त बनाना नहीं चाहता था। इसीलिए उन दोनों ने अपना घर गांव से बहुत दूर जंगल में बना लिया था।

रुला, हंसा का मन होता कि वे अपनी सारी धन-दौलत और खुशियां बच्चों में बांटें। मगर धन लेना तो दूर, गांव के सभी लोग उन्हें देखते ही बच्चों को अपने-अपने घरों में छिपा लेते। यह बात हंसा, रुला के कानों में भी पड़ी। उन्हें बहुत दुःख हुआ। कुछ दिन बाद गांव में भयानक अकाल पड़ा। हंसा, रुला ने सोचा कि हमें अब अपने धन से गांव वालों की सहायता करनी चाहिए।

यही सोचकर एक दिन हंसा से रुला बोला—"देख हंसा भाई, मैं तुझसे शरीर व हिम्मत में ज्यादा हूं। तू मुझसे छोटा व कमजोर भी है। मैं नदी से गांव तक एक छोटी नहर बनाता हूं। तब तक तू शहर जाकर दाना और बैलों की कुछ जोड़ियां ले आ। फिर दोनों मेहनत से गांव को पहले जैसा बना देंगे।"

हंसा रुला की बात मानकर शहर से सारा सामान ले आया। दोनों ने मिलकर कई रात तक खेतों में काम किया। गांव वालों को इस बात का पता ही न लगा। वे तो निराश होकर अपने-अपने घरों में पड़े थे। लेकिन यह काम होते हुए गांव के मुखिया ने देख लिया। जाकर सारा हाल गांव वालों को बताया।

गांव वाले मुखिया की बात पर यकीन करके उन दोनों को देखने गए। अपने खेतों को पहले जैसा देखकर गांव वालों की आंखों में आंसू भर आए।

वे मुखिया से बोले—"हम तो कभी इन्हें गांव में घुसने भी नहीं देते थे और इन्होंने एक देवता की तरह भला किया। चलो, इन्हें हम गांव ले आते हैं।"

—सपना सिंघल, रुड़की

बदल गया राक्षस

एक गरीब लड़का था। उसके माता-पिता मर चुके थे। एक दिन वह भोजन की तलाश में जंगल की ओर जा रहा था। चलते-चलते एक घने जंगल में पहुंचा। वहां उसे एक महल दिखाई दिया। सभी वहां जाने से डरते थे। जो भी उस महल में जाता, वहां रहने वाला राक्षस उसे खा जाता।

उस लड़के ने सुंदर महल देखकर सोचा कि यहां मुझे भोजन अवश्य मिलेगा। यह सोचकर वह महल में चला गया। वहां एक विशाल बक्सा था। उसमें से राक्षस का चेहरा दिखाई दिया। राक्षस का डरावना चेहरा देखकर भी वह घबराया नहीं। उसने बुद्धि से काम लिया। और बोला—"मामा प्रणाम !" उसके मधुर शब्द सुनकर राक्षस बहुत प्रसन्न हुआ। राक्षस बूढ़ा हो गया था। वह बहुत दिनों से बीमार भी था। उसने राक्षस से पूछा—"मामा, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं ?"

राक्षस ने कहा—"मैं ठंडा जल पीना चाहता हूं।" लड़के ने बाल्टी और रस्सी ली और कुएं से ठंडा जल लाया। उसने राक्षस को ठंडा जल पिलाया। राक्षस उससे बहुत प्रसन्न हुआ। उसने लड़के से कहा—"मांगो, तुम क्या चाहते हो ?" लड़के ने कहा—" मामा, मुझे कुछ नहीं चाहिए। तुम्हारा प्यार मिल गया। यही क्या कम है।" लेकिन राक्षस फिर भी नहीं माना, तो लड़का बोला—"मामा, अगर देना ही है, तो ऐसा वरदान दीजिए कि मेरे गांव में सुख-शांति रहे। अब कभी कोई इस जंगल में उन्हें तंग न करे।"

लड़के की बात सुन, राक्षस बहुत प्रसन्न हुआ। उसने कहा—"ऐसा ही होगा।" फिर उसे बहुत-से हीरे-मोती देकर विदा किया। —शरद, चित्तौड़गढ़

इनकी कहानियां भी पसंद की गईं : राकेश श्रीवास्तव, इलाहाबाद; टी. मितिन बिसैन, हैदराबाद; मो. अजीजुल रहमान, कालाहांडी (उड़ीसा)।



जाओ भर लाओ

—अनिल गर्ग

सोनपुर के राजा थे रतनदेव । एक शाम वह अपने महल के सामने वाले बाग में घूम रहे थे । अचानक उनके दिमाग में न जाने क्या आया कि सेवकों को बुलाकर आदेश दिया—'जाओ भर लाओ ।'

सेवक आदेश सुन, चकराए । राजा का आदेश उनकी समझ में नहीं आया । लेकिन सेवकों की पूछने की हिम्मत नहीं हुई कि क्या भरकर लाना है । राजा को गुस्से में देख, सेवक सिर झुकाकर चले आए ।

सेवक बुरी तरह परेशान थे । उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या भर लाएं, जिससे राजा खुश हो जाए । काफी देर सोचने के बाद भी उन्हें इसका उत्तर नहीं सूझा । उन्होंने सोचा कि कुछ भी लेने नहीं जाते हैं, तो राजा बहुत नाराज होगा । सभी को जेल में डलवा देगा । अगर राजा के मन की चीज नहीं आई, तो भी वह सजा देगा । उनके लिए तो 'आगे कुआं पीछे खाई' वाली स्थिति बन गई है ।

अंत में काफी सोच-विचार के बाद सेवक गाड़ियां ले, महल से चल दिए । चलते-चलते उन्हें कई दिन बीत गए, मगर वे यह निर्णय न कर सके कि गाड़ियों में कौन-सी वस्तु भरकर ले जाएं । एक किसी वस्तु को ले चलने के लिए कहता, तो दूसरा तुरंत उसकी बात काट देता । आखिर एक सराय में उन्होंने पड़ाव डाल दिया ।

उसी सराय में एक लड़का रोजाना गोबर बीना करता था । वह रोज सेवकों को आपस में तर्क-वितर्क करते देखता और अपना काम करता रहता था । उसने सोचा—'अन्य मुसाफिर तो दो या तीन दिन से ज्यादा नहीं ठहरते । ये तो इस तरह यहां रह रहे हैं, जैसे यहीं बसने का इरादा हो ।' एक दिन उत्सुकता वश उसने सेवकों के सरदार से सराय में ठहरने का कारण पूछा । उसके बार-बार पूछने पर तंग आकर आखिर सरदार

आई चिड़िया

—रंजना शर्मा

एक गांव में जमुना अपने बच्चों के साथ रहती थी । उसने बगीचे में तरह-तरह के फलों के पेड़ लगा रखे थे । फलों को बेचकर अपना और अपने बच्चों का भरण-पोषण करती थी । उसका बड़ा बेटा स्कूल भी जाता था ।

एक दिन जमुना अपने काम में व्यस्त थी । उसकी बेटी घर के अंदर सोई हुई थी । इतने में ही एक व्यक्ति उधर से गुजरा । यह अच्छा आदमी नहीं था । एक-दो बार जेल भी जा चुका था । उसका नाम था गबरू । उसने खिड़की से झांक कर देखा कि बच्ची अकेली सोई हुई है । उसके मन में बुराई जाग उठी । उसने सोचा—'अगर मैं इस बच्ची को उठाकर भाग जाऊं, तो कुछ न कुछ लाभ होगा ही ।'

लेकिन गबरू ने कमरे के अंदर ही घोंसला बनाकर रहने वाली चिड़िया को नहीं देखा । वह पूरे घर की दोस्त थी । उसे घर की मालकिन से हर रोज दाना-पानी मिलता था । बच्चे उससे मीठी-मीठी बातें करते थे । वह निश्चिंत होकर वहां रह रही थी ।

यह आभास होते ही कि गबरू के मन में बुराई है

को बताना ही पड़ा—"हम राजा रतनदेव के सेवक हैं। राजा के एक आदेश के कारण मुसीबत में फंसे हुए हैं। राजा ने आदेश तो दे दिया कि जाओ भर लाओ, परंतु यह नहीं बताया कि क्या भर लाएं।"

लड़के ने कहा —"बस, इतनी-सी बात से परेशान हो रहे हो। अगर मैं तुम्हारी परेशानी दूर कर दूं, तो तुम मुझे क्या दोगे ?"

सरदार ने पांच मोहरें देने का वायदा किया। लड़के ने कहा —"ठीक है, पहले तुम मेरे कुछ सवालों के जवाब दो। जब राजा ने तुम्हें यह आदेश दिया, उस समय वह कहां थे ? क्या कर रहे थे ? समय क्या था ? अकेले थे या किसी के साथ थे ? उनका ध्यान किस तरफ था ?"

सरदार ने जवाब दिया— "उस समय शाम गहरा रही थी। बारिश हो चुकी थी। मौसम सुहावना था तथा राजा महल के सामने वाले बाग में घूम रहे थे। वह बार-बार महल की तरफ देख रहे थे।"

लड़के ने कहा—"बस, इतना ही काफी है। तुम ऐसा करो, सारी गाड़ियों में चूना भरकर ले जाओ।"

सरदार ने सोचा—'वापस तो जाना ही है। सराय में नहीं पड़े रह सकते। इसकी बात ही मान लेते हैं। जो होगा, देखा जाएगा।'

सरदार ने लड़के को पांच मोहरें दीं। सेवकों से सभी गाड़ियों में चूना भरकर ले चलने के लिए कहा।

राजधानी पहुंचने पर सरदार ने महल में जाकर राजा रतनदेव को सूचना दी। राजा ने जब गाड़ियों में चूना भरा देखा, तो उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उन्होंने सेवकों से पूछा— "सच-सच बताओ, चूना ले आने की सलाह तुम्हें किसने दी ?"

इस पर सरदार ने सब कुछ सच-सच बता दिया।

राजा ने तुरंत उस लड़के को बुला लाने का आदेश दिया। जब लड़का आ गया, तो राजा ने उससे पूछा— "तुमने कैसे अंदाजा लगाया कि हमने चूना मंगाया है ?"

लड़के ने जवाब दिया—"महाराज, बड़ी सीधी-सी बात है। मैंने सेवकों से पूछा कि जब तुम्हारे राजा ने यह हुक्म दिया था, तो वह क्या कर रहे थे ? सरदार ने बताया कि शाम का वक्त था। बारिश के बाद का सुहावना मौसम था। आप महल के सामने वाले बाग में घूम रहे थे तथा बार-बार महल की तरफ देख रहे थे। मैंने इसी से अंदाजा लगाया कि आप बारिश से खराब हुई महल की दीवारों पर सफेदी करवाना चाहते हैं।"

राजा रतनदेव उस लड़के की बुद्धिमत्ता से काफी प्रभावित हुए। उसे काफी हीरे-जवाहरात इनाम में दिए। ●

चिड़िया फुर्र से उड़कर बाहर निकली। जमुना के सिर पर चूं-चूं करती हुई मंडराने लगी। कभी कंधे पर बैठती, तो कभी सिर पर।

जमुना समझ नहीं पाई कि आखिर बात क्या है ? उसे लगा कि कहीं किसी ने चिड़िया का घोंसला तो नहीं तोड़ दिया। यह ख्याल आते ही वह उठ खड़ी हुई। तभी उसकी नजर खिड़की के बाहर खड़े गबरू पर पड़ी। वह चिल्लाई, तो गबरू एकदम वहां से भाग गया।

जमुना दौड़ती हुई घर के अंदर गई। बच्ची को सुरक्षित देखकर उसने चैन की सांस ली। मन में सोचा— 'अगर चिड़िया ने मुझे सावधान न किया होता, तो जाने क्या हो जाता!'

उसने गरदन उठाकर देखा चिड़िया आराम से घोंसले में बैठी थी।



नई पुस्तकें

(१) शरारत करने की छूट; (२) अमरफल की तलाश—लेखिका : स्नेह अग्रवाल; प्रकाशक : पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी, ८८८, ईस्ट पार्क रोड, करौलबाग, नई दिल्ली-५; मूल्य—दस रुपए प्रत्येक।

पुराने जमाने में नानी या दादी हर रोज कहानियां सुनाती थीं। मन बहलाव की उन कहानियों को बच्चे रुचि से सुनते थे। जाने-अनजाने कुछ सीखते भी थे। अब परिवार छोटे हैं। माता-पिता को फुर्सत नहीं होती। बच्चे कहानियां सुनें भी तो किससे और कहां! स्कूल में कहानियों का घंटा नहीं होता कि कोई कहानी बच्चे पढ़ें और उस पर चर्चा करें। फिर कहानी गढ़ें भी। इन दो पुस्तकों में ऐसी कहानियां हैं, जिन्हें बच्चे पसंद करेंगे। कथाओं में सुंदर चित्र भी दिए गए हैं।

"शरारत करने की छूट" पुस्तक में आठ कहानियां हैं। सभी रोचक हैं। खासकर 'भक्त के घर चोरी', 'फूल झरें मोती गिरें' और 'शरारत करने की छूट' कहानियां बहुत अच्छी हैं।

दूसरी पुस्तक में सात कहानियां हैं। 'सोने की डोरी', 'भांडा फूटने का डर' और 'कितने रुपए चाहिए' कहानियां ऐसी हैं जो दिलचस्प हैं। ये कान में कुछ कह भी देती हैं।

और पेड़ गूंगे हो गए—लेखक : डा. दिविक रमेश; प्रकाशक : प्रकाशन विभाग, पटियाला हाउस, नई दिल्ली; मूल्य : १५ रुपए।

अलग-अलग देशों की पंद्रह लोक-कथाएं पुस्तक में हैं। देश हैं—चेकोस्लोवाकिया, यूक्रेन, लिथुवानिया, ऐस्तोनिया, कांगो, इजराइल और लाटविया। लोक-कथाओं की अनेक पुस्तकें बाजार में हैं। किन्तु इन देशों की कथाएं शायद ही कहीं मिलें। दिविक जी ने ऐसी कथाएं छांटी हैं जो दिलचस्प हैं। सरल भाषा में उन्हें लिखा है। कथाएं पाठक को प्रकृति से जोड़ती हैं। पुस्तक की छपाई अच्छी है। बच्चों के लिए ही नहीं, बड़ों के लिए भी पठनीय हैं।

बिन पानी सब सून—लेखक : प्रेमानंद चंदोला; प्रकाशक : हिमाचल पुस्तक भंडार, दिल्ली; मूल्य : ४० रुपए।

प्रेमानंद चंदोला हिंदी के प्रसिद्ध विज्ञान-लेखक हैं। उन्होंने यह पुस्तक किशोरों के लिए लिखी है। इसमें हवा, पानी, प्रकाश, मिट्टी, नमक, रक्त, एंजाइम, पर्यावरण आदि विषयों पर आवश्यक, उपयोगी एवं सामाजिक जानकारी दी गई है। विषय को स्पष्ट करने के लिए चित्र भी दिए गए हैं। यह पुस्तक बच्चों को ढेर सारा नया ज्ञान देगी।

अमर बलिदान—लेखक : डा. रूपसिंह चंदेल; प्रकाशक : राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली; मूल्य : १५ रुपए।

यह एक दिलचस्प उपन्यास है। स्वतंत्रता सेनानी कर्तार सिंह सराबा का नाम इस पीढ़ी के बच्चे कम जानते हैं। आजादी के लिए लड़ने वाले इस बहादुर को अंग्रेज सरकार ने फांसी के फंदे पर लटका दिया था। जिस समय कर्तार सिंह पर लाहौर अदालत में मुकदमा चला था, तब उनकी उम्र सिर्फ साढ़े अठारह वर्ष थी। प्रूफ की गलतियां हैं। कागज भी अच्छा नहीं लगाया गया है।

राज-राजेश्वर—लेखक : राजेन्द्र मोहन भटनागर; प्रकाशक : राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली; मूल्य : २० रुपए।

मेवाड़ के महाराणा कुम्भा वेद-पुराणों के ज्ञाता थे। विभिन्न कलाओं में उनकी रुचि थी। वह शूरवीर और दयालु राजा थे। इस उपन्यास में महाराणा कुम्भा के जीवन के विविध पक्षों को अच्छी तरह से प्रस्तुत किया गया है। लेकिन पुस्तक की भाषा कठिन है। बच्चे तो क्या, बड़े भी न समझ पाएं। यहां तक कि भूमिका में भी लेखक ने भाषा को बहुत कठिन बना दिया है। पुस्तक का कथानक रोचक घटनाओं से भरपूर है।

मणि की परख—लेखिका : विमला रस्तोगी; प्रकाशक : किताबघर, २४/४८६६ अंसारी रोड, नई दिल्ली; मूल्य : ३५ रुपए।

पुस्तक में छोटी-छोटी चौदह कहानियां हैं। इनमें राजा-रानी की कहानियां तो हैं ही, आज के जीवन में होने वाली बातों को भी कहानी रूप में पिरोया गया है। भाषा सरल है। चित्र भी अच्छे हैं। पुस्तक का मुख पृष्ठ और आकार प्रचलित बाल पुस्तकों जैसा नहीं है।

—क्षमा शर्मा



शीर्षक बताइए
परिणाम



नंदन के जुलाई '९२ अंक में छपे रंगीन चित्र पर ये शीर्षक पुरस्कार के लिए चुने गए :

आओ मेरे भैया राजा, मेरे संग बजाओ बाजा।
—विकास गर्ग, सी-२२, श्रीरामनगर कालोनी, रेलवे स्टेशन के निकट, ज्वालापुर।

दीदी छेड़ो ऐसे तार, गूंज उठे सारा संसार।
—ओमजी वैभव, द्वारा गोपाजी वर्मा, शाखा प्रबंधक, भारतीय स्टेट बंक, पन्हास, बेगुसराय (बि.)।

भैया जी सज-धजकर आए, दीदी ने फिर गीत सुनाए।
—अनीता झा, गंगोत्री बिल्डिंग, वशिष्ठ रोड, बेलटोला, गुवाहाटी (अ.)।

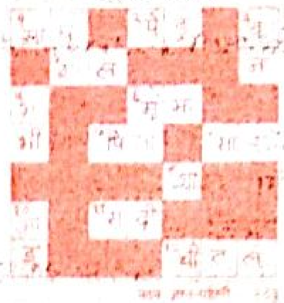
तुम बजाओ मैं गाऊं, सबको मीठा गीत सुनाऊं।
—शरदकुमार, शरद जनरल स्टोर्स, मेन रोड, लोरमी, बिलासपुर।

इनके शीर्षक भी पसंद आए : सीमा कुमारी, जमशेदपुर, विकास, दिल्ली; सत्यपाल शर्मा, रिवाडी; धनंजय, फरीदाबाद,

आप कितने बुद्धिमान हैं : उत्तर

१. बाईं ओर मशीन के पीछे खड़े व्यक्ति के सिर पर टोप नहीं है।
२. गोला लिए खिलाड़ी की कलाई पर काली पट्टी है।
३. उसके पास खड़े व्यक्ति के पेंट की सफेद धारी पतली है।
४. उसके हाथ में लगे पांचे की जाली लम्बी है।
५. जमीन पर रखे बैग से एक हैंडिल गायब है।
६. रिंग की बाउंड्री पर तीन झंडे ही लगे हैं।
७. रिकार्ड लिखने वाले व्यक्ति के टोप में धारीदार फीता लगा है।
८. उसके हाथ में लगी तख्ती बड़ी है।
९. उसके पास खड़े खिलाड़ी के एक पैर का मोजा पूरा खुला है।
१०. उसके पीछे खम्बे पर लगे लाउडस्पीकर का रंग सफेद है।

नंदन ज्ञान-पहेली : २८३
परिणाम



पाठकों ने पहेली हल करने में खूब दिमाग लगाया। दो सर्वशुद्ध हल आ गए। पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी जा रही है :

सर्वशुद्ध हल : दो : प्रत्येक को दो सौ रुपए
१ विनीत खरे, इंदौर; २. पीयूष मोघे, ग्वालियर।

एक गलती : पंद्रह : प्रत्येक को चालीस रुपए
१. अविनाश आंगिरस, दाड़लाघाट (सोलन); २. मो. आरिफ खां, छपरा; ३. पूरबी राय, निवार (जबलपुर); ४. राजेश सिन्हा, रांची; ५. शांतनु मेहरोत्रा, कानपुर; ६. विभूतिनारायण सिंह, समस्तीपुर; ७. रितेश कुमार गुप्ता, कलकत्ता; ८. देवेन्द्रकुमार, बोकारो; ९. रंजीतकुमार जैन, हुगली; १०. रत्ना केशरी, बोकारो; ११. रंजना, एटा; १२. निशाकुमारी, धनबाद; १३. शैलेन्द्रकुमार गुप्ता, कानपुर; १४. विकास आनंद, भागलपुर; १५. प्रशांत गुप्ता, शिवपुरी।

घर बैठे नंदन मंगाइए

देश में

वार्षिक—५० रुपए; दो वर्ष का—९५ रुपए

विदेश में

भूटान, नेपाल, पाकिस्तान : वार्षिक
वायु सेवा से—२४० रुपए / ५ पौंड या ९.५० डालर
समुद्री सेवा से—९० रुपए / २ पौंड या ३.५० डालर
अन्य सभी देशों के लिए : वार्षिक
वायु सेवा से—३७५ रुपए / ८ पौंड या १५ डालर
समुद्री सेवा से—१५० रुपए / ३ पौंड या ५.५० डालर

शुल्क भेजने का पता—
प्रसार व्यवस्थापक, 'नंदन',
हिन्दुस्तान टाइम्स लि., १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग,
नई दिल्ली-११०००१

सूख गया जल

— कमला चमोला

जालनगढ़ राज्य के राजा थे महाराज सिद्धेश्वर। जालनगढ़ राजस्थान की एक रियासत थी। महाराज सिद्धेश्वर बड़े ही कुशल प्रशासक थे। प्रजा का पूरा ध्यान रखते थे। उनके राज्य में प्रजा बड़ी सुखी थी। चारों ओर अमन-चैन था। लेकिन अचानक एक ऐसी घटना घटी, जिससे जालनगढ़ का अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया। प्रजा में त्राहि-त्राहि मच गई।

जालनगढ़ रेगिस्तानी इलाका था। दूर-दूर तक रेतीले टिब्बे और सूखे पत्थर की टेकरियां थीं। परंतु इस सूखे इलाके में भी प्रकृति ने जालन वासियों को एक वरदान-सा दिया हुआ था। वह वरदान था अमृतताल। यह एक बहुत बड़ा तालाब था। उसका पानी गंगाजल-सा स्वच्छ और अमृत-सा मीठा था। इसीलिए इस तालाब का नाम ही अमृत ताल पड़ गया था। पूरे जालनगढ़ की पानी की जरूरत इसी ताल से पूरी होती थी। राजमहल में भी इसी का पानी नहर के माध्यम से पहुंचाया जाता था।

एक दिन की बात है, अमृत ताल के घाट पर जालनगढ़ के कुछ सिपाही पानी भर रहे थे। जेठ की तपती दोपहरी थी। तभी वहां एक फटेहाल कोढ़ी आया और पानी पीने के लिए घाट की सीढ़ियां उतरने लगा। उसे देखकर दो-तीन व्यक्ति चिल्लाए— "अरे, कौन है यह कोढ़ी? सारे तालाब के पानी को गंदा कर देगा। भगाओ इसे यहां से...।"

कोढ़ी ने जलती हुई नजरों से उन लोगों की ओर देखा और बिना कुछ कहे वापस मुड़कर पहाड़ी की ओर चल दिया। उन व्यक्तियों में सुजान नाम का एक युवक भी था। उसे कोढ़ी का यूं प्यासा लौट जाना अच्छा नहीं लगा। वह अपने साथियों से बोला— "उस कोढ़ी को पानी पीने देना चाहिए था। इतने बड़े तालाब के होते हुए वह आज प्यासा लौटा है।"

— "तुझे बहुत दया आ रही है, तो किसी बर्तन में पानी ले जा, पिला आ उसे। तालाब के पानी को तो हम उसे छूने नहीं देंगे।"

"ठीक है, मैं वहीं ले जाता हूं।" — सुजान ने सुराही में पानी भरा और तेजी से उसी दिशा में चल पड़ा, जिस दिशा में वह कोढ़ी गया था। लगभग एक फर्लांग चलने के बाद अचानक उसकी नजर कीकर के पेड़ के नीचे लेटे कोढ़ी पर पड़ी। कोढ़ी की पलकें मुंदी हुई थीं। सांस तेज चल रही थी। सुजान ने सुराही वहां रखी और बोला— "भैया, आंखें खोलो। मैं तुम्हारे लिए पानी लाया हूं।"

कोढ़ी ने आंखें खोलीं। बोला— "तुम्हारे जालनगढ़ में मुझे एक घूंट पानी भी नहीं मिला। आज मैं प्यास से प्राण त्याग रहा हूं। मैंने शाप दे दिया है कि जिस अमृतताल के पानी को तुम लोगों ने मुझे छूने तक नहीं दिया, वह तालाब एक माह के अंदर सूख जाएगा।"

कोढ़ी की बात सुनकर सुजान कांप उठा। वह समझ गया कि यह कोढ़ी कोई साधारण आदमी नहीं है। जालनगढ़ वालों ने इन्हें प्यासा लौटाकर अच्छा नहीं किया। वह कोढ़ी के पांवों में गिर पड़ा। बोला— "ऐसा शाप न दीजिए महाराज। अनजाने में हमसे जो पाप हुआ है, उसके लिए क्षमा चाहते हैं। यह ठंडा पानी लाया हूं, इसे पी लीजिए।"

सुजान की बात सुनकर कोढ़ी के चेहरे पर हलकी-सी मुसकान आ गई। वह क्षीण स्वर में बोला— "तुम एक अच्छे युवक हो, पर अब मुझे इस पानी की जरूरत नहीं। दो-एक क्षण में मेरे प्राण निकलने वाले हैं। अब मैं शाप तो वापस ले नहीं सकता। पर जब जालनगढ़ का कोई व्यक्ति स्वेच्छा से सूखे हुए अमृत ताल पर अपने प्राणों की आहुति देगा, तभी तालाब दोबारा लबालब भर जाएगा।"

इतना कहते ही कोढ़ी के प्राण निकल गए। सुजान की आंखों में आंसू आ गए। आज जालनगढ़ में अमृत ताल के होते हुए एक व्यक्ति को प्यासा मरना पड़ा था। वह भागकर राजमहल गया और राजा से मिलने की इच्छा प्रकट की।

सुजान ने सारी घटना राजा को बता दी। सुजान की बात सुनकर राजा और सारे दरबारियों का कलेजा सन्न

रह गया। अमृत ताल यदि सूख गया, तो जालनगढ़ का क्या होगा ? यहां के लोग प्यासे ही मर जाएंगे। राजा सिद्धेश्वर तुरंत राजपुरोहित को लेकर उस स्थान पर गए, ज़हां कोढ़ी की मृत देह पड़ी थी। कोढ़ी के चेहरे पर नजर पड़ते ही राजपुरोहित के हाथ श्रद्धा से जुड़ गए। वह बोले— "यह साधारण व्यक्ति नहीं महाराज, कोई सिद्ध योगी थे। अपने तप की आग से अपना शरीर गला रहे थे। इन्हें जल न देकर जालनगढ़ से अपराध हुआ है।"

कोढ़ी का अंतिम संस्कार करके चिंताग्रस्त राजा महल लौट आए।

अगले दिन उठकर जब वह महल के झरोखे में बैठे, तो अचानक बुरी तरह चौंक पड़े। अमृत ताल में जल स्तर करीब एक हाथ नीचे था। सारे जालनगढ़ में यह खबर बिजली की तरह दौड़ गई। सिद्ध कोढ़ी मुनि के शाप की बात अब तक जंगल की आग की तरह फैल गई थी। अब तो यह रोज की बात हो गई। प्रतिदिन लोग जब सो कर उठते, तो अमृत ताल का पानी एक हाथ नीचे पाते। धीरे-धीरे जलस्तर तालाब के तल तक पहुंच गया। अब तालाब में कीचड़ मिला पानी ही रह गया था। ऐसा लग रहा था, जैसे जमीन के अंदर से कोई शक्ति, पानी नीचे खींच रही थी।

सबको यह बात पता थी कि जब तक एक आदमी इस तालाब पर स्वेच्छा से अपने प्राणों का बलिदान नहीं करेगा, तालाब सूखा ही रहेगा। पर अभी तक कोई व्यक्ति बढ़कर आगे नहीं आया था। राज घोषणा भी कर दी गई थी— जो व्यक्ति ऐसा बलिदान देगा, उसके परिवार का भरण-पोषण राजा का दायित्व होगा पर फिर भी कोई आगे नहीं आया था।

लोग अब तालाब का कीचड़ मिला पानी ही छान-छानकर एकत्र कर रहे थे। उन्हें पता था, एक-दो दिन में उन्हें यह भी नहीं मिलेगा।

जब रात तक कोई व्यक्ति स्वेच्छा से प्राण त्यागने नहीं आया, तो राजा सिद्धेश्वर बेहद चिंतित हो उठे। उन्हें चिंतित देख रानी बोलीं— "आप चिंतित न हों। जालनगढ़ के लिए मैं अपने प्राण त्यागने को तैयार हूं।"

—"नहीं...!" राजा बोले— "मेरे रहते तुम्हें प्राण त्यागने की आवश्यकता नहीं। वैसे भी सिद्ध योगी ने किसी पुरुष को ही प्राण उत्सर्ग करने को कहा था, स्त्री को नहीं। अपनी जन्मभूमि के लिए मैं अपने प्राणों का बलिदान देकर जालनगढ़ के लोगों की प्राण रक्षा करूंगा।"

—"आपका प्राणोत्सर्ग भी उचित नहीं महाराज।"

—"लेकिन इसके अलावा और चारा भी क्या है ?" राजा सिद्धेश्वर बेचैनी से हाथ मलते रहे।

एक स्वर गूंजा। राजा ने चौंककर देखा। उनका सबसे विश्वासपात्र सेवक चंद्र खड़ा था। बोला— "महाराज, मैंने आपका नमक खाया है। अब उम्र भी हो गई। मेरे प्राण राज्य के काम आ सकें, इससे बड़ी बात क्या होगी।"

चंद्र की बात सुनकर राजा सिद्धेश्वर गद्गद् हो उठे। बोले— "धन्य हो चंद्र। तुमने मुझे एक बड़े संकट से उबार लिया।"

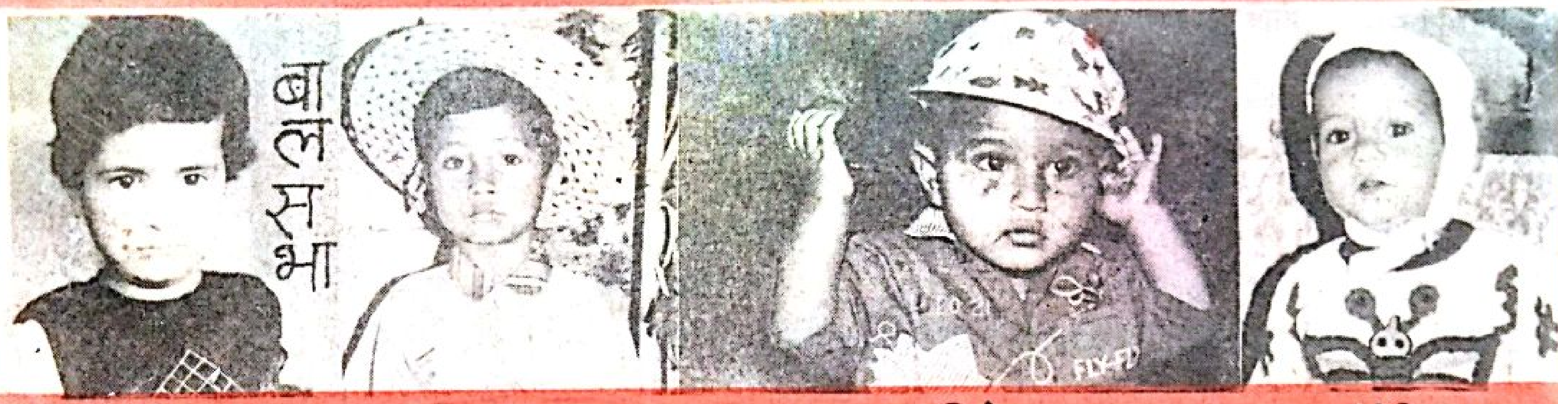
अगले दिन सारे जालनगढ़ में यह खबर बिजली की भांति फैल गई कि चंद्र अपने प्राणों का बलिदान सूखे अमृत ताल पर करेगा। लोगों की भीड़ उमड़ आई तालाब के किनारे। सबकी आंखें भरी हुई थीं। चंद्र नहा-धोकर वेदी पर बैठ गया। राजपुरोहित ने पूजा की। भीगी आंखों से चंद्र के सामने जहर भरा प्याला रख दिया। चंद्र ने जैसे ही प्याला उठाकर मुंह से लगाया, एक चमत्कार हुआ। तालाब के बीचों-बीच पानी का एक फव्वारा फूट पड़ा।

—"ठहरो।" राजपुरोहित ने चंद्र के हाथ से प्याला छीन लिया। अब तो तालाब की सारी सूखी भूमि से पानी के फव्वारे निकलने लगे। राजपुरोहित चंद्र को लेकर तालाब से बाहर निकले, जिसमें अब तेजी से पानी भरता जा रहा था। राजपुरोहित बोले— "सिद्ध योगी की आत्मा चंद्र के मन की निडरता और त्याग की भावना से पसीज उठी है।"

सबकी नजरें तालाब पर ही थीं, जिसका जल स्तर तेजी से बढ़ता जा रहा था।

कुछ ही घंटों में तालाब पानी से भर गया।

राजा ने चंद्र को गले से लगा लिया। ●



मीनाक्षी अतुल विवेक अंकित

पुस्तक पढ़ने एवं लिखने में रुचि :

१. अभिषेक अग्रवाल, १५ वर्ष, रंजना गुप्ता, डी-१-२/११, आदर्श कालोनी, रुद्रपुर, नैनीताल; २. पंकज चौहान, १२, ३२६७/II/I, बी.एच.ई.एल. हरिद्वार; ३. सुनीलकुमार, १३, चमन मिस्त्री, अरेराज चौक, पूर्वी चम्पारण; ४. सुखविंदर सिंह, १६, ६, सहदेव मार्केट, पी.एंड टी. कालोनी, जालंधर; ५. शिवकांत सिंह, १४, द्वारिका प्रसाद, न्यू बहादुर पुर, राजेंद्र नगर, पटना; ६. संदीप बंसल किशनचंद, विष्णुपुरी, न्यू माधो नगर, सहारनपुर; ७. जितेंद्र असारी, १२, एच.के. असारी, पी. डब्लूयू. डी. मुरैना; ८. अरविंद कुमार, १५, नगीना ठाकुर, १५, पो. नरकटियां गंज, प. चम्पारण; ९. रीतू मित्तल, १५, घनश्यामदास मित्तल, धीमान पुरा, शामली, मुजफ्फर नगर; १०. नितिनकुमार वार्ष्णेय, १६, श्रीराम पाकेट बुक्स, बड़ा बाजार, सहावर, एटा; ११. त्रिलोक दयाल, १२, आनंद मोहन दयाल, दरियापुर, फतुहा, पटना; १२. विवेककुमार त्यागी, १६, ग्रा. रोशनपुर प्रताप, पो. कोतवाली, बिजनौर; १३. अमितकुमार सिंह, १२, रामनरेश सिंह, सालिमपुर अटरा, हजाम टोली, पटना; १४. अनिलकुमार सिंह, १६, सी-५८, स्टाफ क्वार्टर्स, बिरलापुर; (प.बं.); १५. रूपेश कुमार, १४, ३०/१०, गर्दनी बाग, पटना; १६. सुभाषचंद्र भट्ट, १४, जोगी वाला जल निगम, देहरादून; १७. अंकुर मेहता, १६, १३८/९, मो. खरादियान, कैथल (हरि.)।

पत्र - मित्र

सम्पादक, 'नंदन', नई दिल्ली-१

नाम ———————————— आयु ———

पूरा पता ————————————————

————————————————

रुचि ————————————————

खेल, संगीत एवं चित्रकला में रुचि :

१. हेमेंद्र गर्ग, १३ वर्ष, ६० सूर्य नगर, आगरा; २. प्रदीपकुमार तिवारी, १३, ३६०४—अ, सैक्टर-३२, चंडीगढ़; ३. सन्नु, १६, पप्पू टेलर्स, रमना रोड, शेरघाटी, गया; ४. सुरेंद्रकुमार, १६, ग्रा. कुमार कोट, पो. मोल्टारी, पुरोला, उत्तरकाशी; ५. संजीतप्रसाद जायसवाल, १३, वासुदेव चौधरी, थाना रोड, सुपौल, सहरसा; ६. अखिलेशकुमार जैन, १३, कुमार इलैक्ट्रिकल्स, बेलई, सागर; ७. मोहनसिंह, १२, २८ ई, सैक्टर ४, पुष्प विहार, नई दिल्ली; ८. बृजेश सिसौदिया, १५, आर.एस. सिसौदिया, २०३/५ इंद्रा नगर ।, मेरठ; ९. रुचि शर्मा, १५, १०००/१७, फरीदाबाद (हरि.); १०. शैलेंद्र चंदवरिया, १४, ६४ रामलीला मढ़ी, पुलिया शर्की, एटा; ११. शहनवाज अनवर, १५, ओरियंट फार्मेसी, सब्जी मार्केट, सहरसा; १२. सुबोध कुमार, १५, १४४८, अरवन इस्टेट, जींद (हरि.); १३. अरविंद, १४, जानकी देवी, मेला रोड, सुपौल, सहरसा; १४. सचिन शर्मा, १५, I/२४, गली-१०, ब्रह्मपुरी, न्यू सीलमपुर, दिल्ली; १५. मुकेश गुप्ता, १५, लक्ष्मी मेडिकल स्टोर, टोडारायसिंह, टौंक (राज.); १६. प्रियरंजन, ८, राजनारायण सिंह, मत्स्य पदाधिकारी, खगड़िया (बि.); १७. डौबी अग्रवाल, १२, भारत आयरन ट्रेडिंग कंपनी, पठानकोट; १८. विकास रस्तोगी, १७, ३९ए पाकेट बी, हरी नगर, दिल्ली; १९. सारिका रानी, १५ पी.एन. ठाकुर, मंदिर रोड, धनबाद; २०. राशेदा परवीन, १३, डी/७९, सैक्टर २०, राउरकेला (उड़ीसा)।

डाक टिकट संग्रह, भ्रमण एवं पहेली में रुचि :

१. मनोज सिंघल, १६ वर्ष, ओम्प्रकाश सिंघल, १०२ कृष्णानगर, भरतपुर; २. नितिन अग्रवाल, १४, अम्बरीष कुमार अग्रवाल; १३५८ देहली दरवाजा, फैजाबाद; ३. प्रीतेश सौरभ, १३, एम.एल. सिंह, ब्रह्मा कालोनी, पटना; ४. आशीषकुमार दवे, १५, हरि निवास, वरथाली चौक, चाम्पा (म.प्र.); ५. उदयन शर्मा, १०, १४ ए बसंतर मार्ग, मथुरा कैंट उ.प्र.।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित।

कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन


रेलगाड़ी
छुक-छुक छुक-छुक
अमूल चॉकलेट खा ले
मत रुक मत रुक
TOOT
TOOT
Amul
MILK CHOCOLATE
Amul
CRISP
MILK CHOCOLATE
RADEUS/GCMMF/AMC/205/1-91-HIN
Amul
MILK CHOCOLATE
ORANGE
FLAVOURED
Amul
FRUIT & NUT
MILK CHOCOLATE
TOOT
TOOT
TOOT
TOOT
Amul
CRUNCH
Badam
CRISP
वितरक :
गुजरात को-ऑपरेटिव
मिल्क मार्केटिंग
फ़ेडरेशन लिमिटेड,
आणंद ३८८ ००१
अमूल चॉकलेट
प्यार की मीठी भेंट

रजि. न. डी एल-२७००५/९२ आर. एन. आई.नं. १०५२५/६४